नित्योपयोगी ग्रंथसंग्रह

कृष्णगोपाल ग्रन्थमालाका २४ वां रत्न—

नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह

प्रकाशकः—

कृष्ण-गोपाल आयुर्वेद भवन (धर्मार्थ ट्रस्ट)

पो० कालेड़ा-कृष्णगोपाल (अजमेर)

द्वितीय संस्करण
१००० } १६७६

— प्रथम संस्करण —
नवम्बर १९५८ ई०
॥ द्वितीय संस्करण ॥
अगस्त १९७९ ई०

न चैकान्तेन निर्दिष्टमेकान्तेन समाश्रयेत् ।
स्वयमप्यत्र वैद्येन तर्क्यं बुद्धिमता भवेत् ॥

उत्पद्यते हि सावस्था देशकालबलं प्रति ।
यस्यां कार्यमकार्यं स्यात् कर्म कार्यं च वर्जितम् ॥

तस्मात् सत्यपि निर्देशे कुर्यादूह्य स्वयं धिया ।
विना तर्केण या सिद्धिर्यदृच्छा सिद्धिरेव सा ॥

(च० सं० सि० अ० २)

मुद्रक-
कृष्ण-गोपाल मुद्रणालय,
कालेड़ा-कृष्णगोपाल (अजमेर) में मुद्रित

॥ श्रीमद्धन्वन्तरये नमः ॥

प्राक्कथन

आधिव्याधियुता लोकाः निष्कषायाश्च योगिनः ।
पीत्वा कषायसोमञ्च स्वस्थामुक्ता भवन्ति हि ॥

अयि मान्य विद्वद्वृंद ! कृष्ण गोपाल आयुर्वेद भवन कालेड़ा का यह २४वां पुष्प क्वाथ संग्रह आपके करकमलोंमें समर्पित है। चिकित्साके साधनोंमें कषायोंका विशेष महत्व है। आयुर्वेदीय महापुरुषोंने तो इनका खूब विशद वर्णन किया है और प्रायः सभी सुयोग्य चिकित्सक इनका उपयोग करके रुग्ण जनता को भयंकर व्याधियोंके पुञ्जोंसे छुड़ाते हैं।

आजकलके चटक-मटक वाले नाजुक बाबू लोग, काढ़ेको चाहे कसैला-कड़वा समझकर उपयोग न करें। किन्तु बड़े बूढ़े समझदार माता-पिता, दादा-दादी तो किसी भी भयंकर रोग से दीर्घकाल तक छुटकारा न मिलनेपर काढा पीनेकी ही सम्मति देते हैं, "कहते हैं कि:—बिना काढ़ा लिये यह दुष्टरोग जायेगा ही नहीं। काढ़ा ले लो, उकाली पी लो, घासा लो क्योंकि "बिनु कड़वीभेषज पिये मिटे न तनकी ताप"।

आजकलके सभ्य कहलाने वाले नवयुवक अपने बूढ़े माता-पिता-दादी-दादाका सम्मान करते हुये और उनकी आज्ञा पालन करते हुये जैसे कतराते हैं व उनके कटु, सत्य किन्तु हितकर फलदायी उपदेशोंका सेवन नहीं करना चाहते। वैसे ही कटु, कषाय किन्तु शीघ्र व स्थायी स्वास्थ्यप्रद इस काढ़ेसे भी घबराते हैं। क्यों नहीं? आजका समय ही ऐसा है। लोगोंमें यह प्रवृत्ति हो गई है कि क्यों काढ़ा पीकर मुंह खराब करे, पेटमें फालतू ही काढा भरें-इन्जेक्शन लगवा लो, टेबलेट खा लो, न मुंह बिगड़ेगा न जी मिचलायेगा और आराम भी जल्दी से

हो जायगा ।

उनको नहीं मालूम कि इन तीव्र मारक औषधियोंसे भविष्य में क्या क्या खराबियां व अन्य व्याधियाँ उत्पन्न हो जायेंगी ? ये खराबियां आयुर्वेदिक क्वाथसे कदापि नहीं हो सकती ।

आयुर्वेदिक कषाय तो 'प्रयोग: शमयेद् व्याधिं नान्यं रोग-मुदीरयेत्" के सिद्धान्तका पोषक है । यह रोगका मूलसे समाप्त कर देता है और उसके सम्बन्धी अन्य उपद्रवोंको भी मिटा देता है तथा अन्य व्याधि भी उत्पन्न नहीं करता । प्रस्तुत पुस्तक में उन्हीं कषायों, क्वाथों, उकालियों, घासों अथवा काढोंका विस्तृत वर्णन दिया गया है ।

अब सर्वप्रथम कषाय किसे कहते हैं ? यह बता देना चाहते हैं-वैसे तो "मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषाया:" इस वचनसे कसैले रससे कषायका बोध होता है । संभव है कि काढा-कषाय रस प्रधान होनेसे ही इसे आयुर्वेदज्ञोंने कषाय संज्ञासे विभूषित किया हो किन्तु यहाँ केवल कषाय रससे ही हमारा तात्पर्य नहीं है।

स्वरसश्च तथा कल्क: क्वाथश्च हिमफाण्टकौ ।
ज्ञेया: कषाया: पञ्चैते लघव: स्युर्यथोत्तरम् ।।

स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम व फाण्ट इस प्रकार कषाय ५ प्रकारके माने गये हैं । ये परस्पर उत्तरोत्तर लघु होते हैं अर्थात् स्वरसकी अपेक्षा कल्क लघु होता है और कल्ककी अपेक्षा क्वाथ तथा क्वाथकी अपेक्षा हिम व हिमकी अपेक्षा फाण्ट लघु अर्थात् पचनेमें हल्का होता है ।

ये सब स्वादमें प्राय: कषैले (कषाय) होते हैं, अत: इन सब को कषाय संज्ञा दी गई है ।

स्वरसकल्पना—अहतात्तत्क्षणाकृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्धरेत् ।
वस्त्रनिष्पीडितो यश्च स्वरसो रस उच्यते ।।

अर्थात् शीत-उष्ण (ग्रीष्म) तथा वनाग्निसे न जली हुई, कीटादिसे रहित तथा उसी समय ताजा तोड़कर लाई हुई आर्द्र वनस्पतिको कूट पीसकर कपड़ेसे छाने हुये उसके रसको रस या स्वरस कहते है।

तथाचः—कुडवे चूर्णितं द्रव्यं क्षिप्तं च द्विगुणे जले।
अहोरात्रं स्थितं तस्माद्भवेद् (वा) रस उत्तमः॥

अथवा—आदाय शुष्कं द्रव्यं वा स्वरसानामसंभवे।
जलेऽष्टगुणिते साध्यं पादशिष्टं च गृह्यते॥

अर्थात्—आधी सूखी आधी गीली १ कुडव औषधिको कूट कर दूने (२ कुडव) जलमें २४ घण्टे भिगो छानकर जल मिश्रित रस निकाल लेनेसे भी स्वरस प्राप्त हो जाता है।

सूखी औषधिको ८ गुने जलमें डाल, अग्निपर पका, चौथाई जल शेष रहनेपर रस छान लेनेपर भी स्वरसका काम निकलता है

स्वरसकी मात्रा–स्वरसस्य गुरुत्वाच्च पलमर्धं प्रयोजयेत्।
निशोषितं चाग्निसिद्धं पलमात्रं रसं पिवेत्॥

पांच प्रकारके कषायोंमें स्वरस सबसे अधिक भारी होता है अतः इसकी सेवन मात्रा आधापल (२ तोला) मानी गई है।

सितामधुगुडक्षाराञ्जीरकं लवणं तथा।
घृतं तैलं च चूर्णादीन् कोलमात्रान् रसे क्षिपेत्॥

यदि स्वरसमें मिश्री, शहद, गुड़, खार, जीरा नमक (नमक युक्त जीरा) तथा घी तैल और चूर्ण आदि डालने हों तो १ कोल (छः ग्राम) डालना चाहिये। मात्र लवण मिलाना हो तो २०० से ४०० मि.ग्राम तक।

कल्क कल्पना–द्रव्यमार्द्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा सजलं भवेत्।
तदेव कल्को विज्ञेयस्तन्मानं कर्षसम्मितम्॥
कल्के मधुघृतं तैलं देयं द्विगुणमात्रया।
सितां गुडं समं दद्यात् द्रवो देयश्चतुर्गुणः॥

कल्क (चटनी) बनानेके लिये, यदि औषध गीली हो तो बिना जल डाले और सूखी हो तो थोड़ा जल डालकर शिलापर पीसकर चटनी जैसा बनावें, इसे कल्क कहते हैं। कल्ककी सेवन मात्रा १ कर्ष (१० ग्राम) मानी है। कल्कमें शहद घी, तैल आदि द्रव्य डालना हो तो कल्कसे दूने डालना चाहिये। मिश्री व गुड बराबर भागमें डालें, जलादि ४ गुने डालें।

क्वाथ कल्पना—पानीयं षोडशगुणं क्षुण्णे द्रव्यपले क्षिपेत्।
मृत्पात्रे क्वाथयेद् ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम्॥
कर्षादौ तु पलं यावद् दद्यात् षोडशिकं जलम्।
ततस्तु कुडवं यावत्तोयमष्टगुणं भवेत्॥
चतुर्गुणमतश्चोर्ध्वं यावत्प्रस्थादिकं जलम्।
तज्जलं पाययेद् धीमान्कोष्णं मृद्वग्निसाधितम्॥
शृतः क्वाथः कषायश्च निर्यूहः स निगद्यते।

जौकूट किये हुये ४० ग्राम चूर्णमें, सोलह गुना (६४० ग्राम) पानी डालकर मिट्टीके पात्रमें भर आगपर, पात्रका मुँह विना ढ़के पकावें, पकते-पकते जब ८ वां भाग (८० ग्राम) जल शेष रह जाये, तब उतार लें। यदि द्रव्यकी मात्रा १ कर्षसे १ पल तककी हो तो जल १६ गुना डालें और इससे भी अधिक अर्थात् १ कुड़व (४ पल) तकका परिमाण हो तो पानी ८ गुना लें। इससे ऊपर प्रस्थ तक औषधि लेनेके लिये कहा गया हो तो चौगुना जल डालें।

बुद्धिमान् वैद्य कुछ कुछ गर्म इस क्वाथ जलको मात्राके अनुसार पिलावें। इस क्वाथको मन्दाग्निपर ही पकावें। इसे शृत, क्वाथ, कषाय तथा निर्यूह तथा भाषामें काढा या उकाली भी कहते हैं। इसे रोगीको दोष-प्रकृति-रोगका व रोगीका बलाबल, देश-काल, तथा निदान ज्ञान करके ही प्रयोग करना चाहिये।

मात्रा—मात्रोत्तमा पलेन स्यात् त्रिभिरक्षैस्तु मध्यमा ।।
जघन्या च पलार्धेन स्नेहक्वाथौषधेषु च ।।

इसकी अधिकसे अधिक मात्रा १ पल (४० ग्राम) की, मध्यम मात्रा ३० ग्राम और लघु मात्रा २० ग्रामकी मानी गई है। अन्य ग्रन्थोंमें इस प्रकार लिखा है कि:—

क्वाथ्यद्रव्यपले वारि द्विरष्टगुणमिष्यते ।
चतुर्भागावशिष्टं तु पेयं पलचतुष्टयम् ।।
दीप्तानलं महाकायं पाययेदञ्जलिं जलम् ।
अन्ये त्वर्द्धं परित्यज्य प्रसृतिं तु चिकित्सका: ।।
क्वाथत्यागमनिच्छन्तस्त्वष्ट भागावशेषितम् ।
पारम्पर्य्योपदेशेन वृद्धवैद्याः पलद्वयम् ।।

क्वाथ बनानेकी क्रिया एवं मात्राके प्रयोगके बारेमें किसी किसी ग्रन्थमें यह भी लिखा है कि जिस द्रव्यका क्वाथ बनाना हो तो उसको १ पल (४० ग्राम) लेकर १६ पल (६४० ग्राम जलमें डालकर ओटावें। जब जल पकते-पकते चौथाई भाग रह जाये. तब काममें लें। किन्तु जिसके शरीरका आकार बड़ा हो और उदराग्नि तीक्ष्ण हो उसे १ अंजली (१६० ग्राम पिलावें। बहुतसे वैद्य-अंजलिमेंसे आधा भाग छोड़कर केवल १ प्रसृति (८० ग्राम) क्वाथ पिलाते हैं। किन्तु कुछ वृद्ध वैद्य क्वाथ बनाकर उसमेंसे आधा भाग पिलाकर आधा भाग छोड़ना नहीं चाहते, वे लोग गुरु परम्परासे प्राप्त उपदेशके अनुसार कठोर द्रव्योंका पूर्वोक्त विधिसे क्वाथ बनाते समय चौथाई भाग शेष न रखकर अष्टमांश जल शेष रहनेपर क्वाथ उतार लेते हैं, ऐसी स्थितिमें २ पल (८० ग्राम) शेष रहता है, उसे ही पिलाते हैं।

तात्पर्य यह है कि जब अष्टमांश जल शेष रह जानेपर क्वाथ उतारा जायगा तो वह चतुर्थ भाग शेष क्वाथकी अपेक्षा

(सत्वका आकर्षण अधिक हो जानेसे) भारी होगा । अतः जिनकी जठराग्नि अत्यन्त प्रदीप्त है और देह भी लंबी चौड़ी है उनको आठवां भाग शेष रहा क्वाथ (८० ग्राम) दो पल पिलावें। किन्तु जिनको मध्यमाग्नि है तथा देह भी मध्य स्थितिकी है उनको ४० ग्रामकी मात्रामें पिलावें । क्योंकि ऊपरके श्लोकमें "मात्रोत्तमा पलेन" इस कथनसे १ पलकी मात्राको उत्तम माना है।

क्वाथमें यदि मिश्री, शहद आदि मिलाना हो तो इस क्रमसे मिलावें:—मिश्रीको ४० ग्राम काढेमें वात रोगीके लिये १० ग्राम, पित्त रोगीके लिए ५ ग्राम और कफ रोगीके लिये ३ ग्राम डालें । किन्तु यदि शहद डालना हो वो इस उक्त मानसे विपरीत अर्थात् वात रोगीके ४० ग्राम क्वाथमें २।। ग्राम, पित्त रोगीके लिये ५ ग्राम और कफ रोगीके लिये १० ग्राम डालें ।

जीरा ३ ग्राम तक तथा गुगल, क्षार, लवण, शिलाजीत, हींग, सोंठ, मिर्च, पीपल ये सभी रोगियोंके लिये प्रत्येक ½ ग्राम तक ही डालें । वैसे ही दूध, घी, गुड़, तैल, गोमूत्र तथा अन्य कोई द्रव पदार्थ या कल्क चूर्ण आदि यदि क्वाथमें डालना आवश्यक है तो १० ग्राम तक मात्रामें डाल सकते हैं । यथार्थमें रोगीकी शक्ति, देश, काल, रोग आदिका विचार करके मात्रा निर्णय करनी चाहिए ।

निर्दोष क्वाथ बनानेके लिए आवश्यक सूचनायें:—

१. काढा उकालनेका पात्र मिट्टीका कोरा होना चाहिये । अर्थात् पहले घी-तेल आदि भरा हुआ उपयोगमें लिया हुआ न हो, ऐसा बर्त्तन प्रायः सभी जगह उपलब्ध हो सकता है । यदि आवश्यक कारण वश मिट्टीका पात्र मिलनेमें विवशता हो तो कलई किया हुआ पीतलका बर्त्तन भी लिया जा सकता है ।

२. क्वाथ बनाते समय बर्त्तनका मुंह खुला रखना या नहीं ? इस विषयमें विद्वानोंमें मत भेद है—श्री शार्ङ्गधरका

कहना है कि बर्त्तनका मुंह खुला रखना चाहिये। किन्तु अन्य विद्वानोंके मतानुसार बर्त्तनका मुंह खुला रखनेसे उसमें डाली हुई औषधियोंके सत्वांश, बहुतसे लाभकारी सूक्ष्म परमाणु उड़ जाते हैं जिससे क्वाथ अधिक गुणकारी नहीं बनता।

हमारी समझसे उक्त दोनों मत ग्राह्य है। कषाय दृष्टिसे कठोर औषधिके कम उपयोगी अंशको पृथक् कर (उड़ा कर), विशेष लाभ रूप सूक्ष्म परमाणुओंको शेष रखना हो, तब बर्त्तनको नहीं ढकना चाहिये तथा मृदु एवं उड़नशील तैल प्रधान (सोंफ-सोया, जीरा, लौंग, इलायची, दालचीनी आदिका क्वाथ बनाना हो तो सत्वके संरक्षणार्थ बर्त्तनको ढकना हितावह माना है।

३. प्रतिदिन नया ताजा क्वाथ बना करके ही उपयोग करना चाहिये। इकट्ठा २-४ दिनके लिये उबालकर बासी नहीं पीना चाहिये। ऐसा करनेसे लाभ न होकर हानि ही होगी।

४. क्वाथ बनानेके लिये जौकूट की हुई औषधिको रातमें मिट्टी के पात्रमें या चीनी मिट्टी अथवा काचके शुद्ध स्वच्छ पात्रमें भिगो कर सुबह मिट्टीके बर्त्तनमें डालें, फिर चूल्हेपर चढाकर मंद आंचसे ही पकावें। बारीक चूर्ण या तैलयुक्त मृदु औषधियोंका क्वाथ बनाना हो तो जल ४ या ८ गुना लें और $\frac{3}{4}$ हिस्सा अथवा $\frac{1}{2}$ हिस्सा शेष रहने पर छानकर सेवन करें।

५. क्वाथ बनाते समय यदि हिलानेकी या जल आदि जांच करनेकी आवश्यकता हो तो लकड़ीके बने हुये (चाटू) कलछी से अथवा कलई किये हुये चम्मचसे ही हिलावें। अन्यसे नहीं।

६. पत्थरके कोयलों या अधिक धूंयें वाले गीले ईंधनकी आगपर क्वाथ न बनावें और अधिक तीक्ष्ण आंचपर भी न बनावें। धूंये रहित मंद आंचपर बनावें।

७. पुरानी सड़ी, गली, कीटभक्षित, सुखी, दुर्गन्ध वाली, हीन वीर्य औषधियोंको क्वाथके लिये उपयोगमें न लें।

८, पहलेसे औषधियोंको कूटकर इकट्ठी रखनेसे ४ महिनेके बाद और वर्षा ऋतुके पश्चात् औषधियां गुणहीन हो जाती हैं। अतः इकट्ठी कूटकर न रखें। उनको थोड़े-थोड़े परिमाणमें तैयार कर कांचकी शीशियों व बर्नियों अथवा चीनी मिट्टीकी ढक्कन दार बर्नियोंमें संभालपूर्वक बंद करके रखें जिससे औषधि अधिक समय तक सुरक्षित रहकर गुणहीन न हों।

९. क्वाथको उबालकर ठडा होने दें। फिर स्वच्छ कपड़ेसे छान लें और किञ्चित् उष्ण अर्थात् हाथकी अंगुलियोंको कुछ गर्म मालूम हो तब पिलावें · अत्यधिक गर्म गर्म जिससे मुंह या जीभ जल जावे, छाले हो जावें ऐसा क्वाथ और बिल्कुल ठण्डा (बर्फ) के समान बन जानेपर भी न पिलावें। अधिक ठण्डा होनेपर दुर्जर दुष्पाच्य हो जाता है। और अत्यधिक गर्म क्वाथ आमाशय व आंतोंको निर्बल बना देता है।

१०. एक बार उबालकर छान लेनेपर १२ घंटे बाद फिर उसी क्वाथको गर्म करके उपयोग न करें।

११. पहली बार क्वाथ बनाकर अलग छानी हुई उन्हीं औषधियोंको दुबारा दूसरे समय उपयोग न करें।

१२. जहाँ बहुतसी मक्खियाँ, मच्छर भिनभिनाते हों, जो जानवरोंके बांधनेके गंदे स्थान हों या मलमूत्रादिसे दूषित स्थान हों, मधुमक्खियोंके छत्ते वाली जगह हों, सर्प आदिके बिल पास हों वहां क्वाथ न बनावें।

विशेष सूचना—बहुतसे औषधालयों और फार्मेसियों वाले काढोंको बना, छानकर शीशियों व बर्नियोंमें भर देते हैं, इनको अधिक समय तक टिकाऊ रखनेके लिये उनमेंसे ३/४ जलीय अंशको बाष्पपर उड़ाकर फिर उनमें रेक्टीफाइड स्प्रिट, मृत-

संजीवनीसुरा, शहद अथवा अन्य मद्य और एसिड सेलि-सेलि कादि मिला देते हैं। किन्तु ऐसा करनेसे औषधियों के गुणोंमें रूपान्तर हो जाता है और मिश्रित द्रव्योंके गुण-प्रभाव उनमें आ जाते हैं। चाहे सामान्य व्यक्ति जान सके या न जान सके। एसिड सेलिसेलिकसे तो क्वाथ अधिक दूषित, विषाक्त व गुणहीन हो जाते हैं। अतः नहीं डालना चाहिये। यदि कारणवश क्वाथको कुछ अधिक समय तक टिकाऊ रखना जरूरी ही है तो जलीय अंशको न उड़ाकर मूल क्वाथमें ही मृतसंजीवनीसुरा, रेक्टीफाइड स्प्रिट अथवा शहद निम्न मात्रा परिमाणमें मिलाना चाहिये।

यदि क्वाथ १२०० ग्राम है तो रेक्टी० स्प्रिट या मृतसंजी-वनी सुरा ६०% वाली ८५ ग्राम अथवा शहद १५० ग्राम मिलावें एवं शीशियों आदिमें भरकर मजबूत निर्वात ढक्कन लगादें। मिलाते वक्त शहदका खयाल रखें, शहद नकली या खराब होगा तो क्वाथ खराब हो जायगा।

जिन बर्तनों व शीशियोंमें क्वाथ भरे जावें, वे स्वच्छ व सूखे हों, उनमेंके जलको अच्छी तरह सुखा दें। कच्चा जल शेष रहा होगा तो क्वाथ बिगड़ जायगा।

क्वाथ तैयार हो जानेपर उसमें कच्चा जल ऊपरसे न मिलावें एवं क्वाथ छान लेनेपर भी न मिलावें।

यदि असावधानीसे क्वाथ जल गया हो और उसमें जल बिल्कुल शेष न रह गया हो तो भी उसमें पुनः कच्चा पानी डालकर नहीं उबालना चाहिये। उसको फेंककर नई औषधियों का नया क्वाथ दुबारा बनालें।

क्वाथ बनाते समय यह सावधानी रखें कि जल अधिक परिमाणमें न रह जाये और बिल्कुल जलकर शुष्क भी न हो जाये।

घाव वगैरह धोनेके लिये १ बार बनाये हुए क्वाथ और

फाण्टका २४ घण्टे तक २-४ बार भी उपयोग कर सकते हैं। किन्तु पीनेके लिये तो ताजा उपयोग करना ही लाभप्रद व गुणकारी होगा।

हिम—बारीक चूर्ण किये हुये ४० ग्राम औषधि द्रव्यको चारगुने (१६० ग्राम) जलमें शामके समय भिगोकर रातभर रखा रहने देकर प्रातःकाल उस जलको छानकर पिलादें।

हिमकी मात्रा—८० ग्रामकी बताई गई है। हिमको शीत-कषाय भी कहते हैं।

मंथ विधान—चूर्ण की हुई ४० ग्राम औषधिको १६ तोले पानीमें डालकर मिट्टीके बर्तनमें खूब अच्छी तरह मथलें। इसे मंथ कहते हैं। इसकी भी मात्रा ८० ग्रामकी है।

उपर्युक्त क्वाथ आदिकी मात्रा बच्चों-निर्बलों व गर्भिणियोंको कम परिमाणमें देना।

उपयोगिता—उक्त कषाय प्रवाही होनेसे सरलता एवं शीघ्रतासे रस आदि धातुओंमें क्रमशः मिलकर अपना गुण सत्वर प्रकट करते हैं जिससे अधिक बढे हुये रोग जल्दी वशमें हो जाते हैं। ये वात व्याधियों एवं सन्निपातादिमें तो शीघ्र लाभान्वित होते हैं। कषायोंसे अन्यरोग व उपद्रव उत्पन्न होने की संभावना नहीं है। एवं अल्प व्ययसे ही रोगी व्याधिसे छुटकारा पा जाता है।

प्रस्तुत पुस्तकमें प्रायः सभी रोगोंपर सब क्वाथोंका विशद वर्णन किया गया है। साथ ही उनकी मात्रा गुण-उपयोग विधि भी साथ साथ बता दिये गये हैं। पुस्तक बहुत सरल बनानेका प्रयत्न किया गया है। पाठक व रोगी इससे अधिकाधिक लाभ उठायेंगे तो हम अपने परिश्रमको सफल समझेंगे।

आषाढी पूर्णिमा २०३६

वैद्य बद्रीनारायण शर्मा
आयुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ

विषय-सूची

संकेत सूची

इस पुस्तकमें निम्न ग्रन्थोंसे प्रयोग लिये हैं, और प्रयोगोंके अन्तमें उनका संकेत भी किया गया है।

ग्रन्थ नाम		ग्रन्थ नाम	
अष्टांग हृदय	(अ० हृ०)	रसतन्त्रसार	(र०तं०सा०)
आयुर्वेदनिबन्धमाला	(आ.नि.मा.)	रसयोगसागर	(र०यो०सा०)
आयुर्वेद संहिता	(आ०सं०)	रस रत्नाकर	(र० र०)
गद निग्रह	(ग० नि०)	रसायन सार	(र०पा०)
चक्रदत्त	(च० द०)	वैद्यक चिकित्सा	(वै० चि०)
चरक संहिता	(च० सं०)	वैद्य जीवन	(वै० जी०)
चिकित्सा चन्द्रोदय	(चि०चं०)	वृन्द माधव	(वृ० मा०)
बृहत् निघण्टु रत्नाकर	(बृ.नि.र.)	वंग सेन	(वं० से०)
बृहद् योग तरंगिणी	(बृ.यो.त.)	शार्ङ्गधर संहिता	(शा० सं०.)
भारतभैषज्यरत्नाकरभा.	(भै.र.)	सिद्ध योग सार	(सि० सं०)
भावप्रकाश	(भा० प्र०)	सिद्ध योग सागर	(सि० यो०)
भैषज्य रत्नावली	(भै० र०)	सुश्रुत संहिता	(सु० सं०)
योग चिन्तामणि	(यो० चि०)	हारीत संहिता	(हा० सं०)
योग रत्नाकर	(यो० र०)		

॥ ॐ ॥

❀ नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह ❀
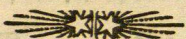
१. अभयादि क्वाथ (त्रिदोष)।

अभया-मुस्त-धान्याक-रक्तचन्दन-पद्मकैः ।
वासकेन्द्रयवोशीर-गुडूची-कृतमालकैः ।।
पाठा-नागर-तिक्ताभिः पिप्पलीचूर्णयुक्शृतम् ।
पिवेत्त्रिदोषज्वरजित् पिपासाकासदाहनुत् ।।
प्रलापश्वासतन्द्राघ्नं दीपनं पाचनं परम् ।
विण्मूत्रानिल-विष्टम्भ-वमिशोषारुचि जयेत् ।।(शा०सं०)

हरड़ छोटी, पद्माक, गिलोय कुटकी,
नागर मोथा, अडूसा, अमलतास, पिप्पली चूर्ण।
धनिया, इन्द्रयव कड़वा, पाठा,
रक्तचन्दन, खस, सोंठ,

विधि—हरड़से कुटकी तक की १३ औषधियोंको सम भाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें। पिप्पली चूर्ण क्वाथमें प्रक्षेप रूपसे डालनेके लिए है। उसका कपड़छान चूर्ण करें।

मात्रा-१०-१० ग्रामका क्वाथ बनाकर ½-½ ग्राम पिप्पली चूर्ण डालकर दिनमें १ या २ बार पीवें।

उपयोग—यह अभयादि क्वाथ त्रिदोषज ज्वरको दूर करता है। साथमें मलावरोध, आमविष-संग्रह, प्यास, कास, दाह,

प्रलाप, श्वास, तन्द्रा आदि लक्षणोंको दूर करता है। दीपन, पाचन होनेसे अग्निको प्रदीप्त करता है और आमको पचाता है उदरमें वायु, मलमूत्र आदि जो संगृहीत हों, उन्हें फेंक देता है एवं वमन, शोष और अरुचिको भी दूर करता है।

२. अभयादि कषाय (प्रमेह)।

हरड़, देवदारू, सोंठ, सारिवा, कड़वी नाई, आंवला, धनियां, काली मुनक्का, बेलपत्र, पोदीनेके पान।

विधि—उक्त १० ओषधियोंको मिलाकर जोकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ दिनमें २ या तीन बार लेवें।

उपयोग—यह अभयादि कषाय मधुमेह और इक्षुमेहमें मूत्र के साथ जाने वाली शक्करकी उत्पत्ति कम कराता है। यह कषाय अग्न्याशय (Pancreas) को बल देता है। रक्तमें शक्कर बढ़ने और मूत्रमें अधिक शक्कर जानेपर इस कषायका सेवन हितावह माना गया है।

३. अमृताष्टक क्वाथ।

अमृतारिष्ट-कटुका-मुस्तेन्द्रयव-नागरैः।
पटोल-चन्दनाभ्यां च पिप्पलीचूर्णयुक्शृतम्॥
अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहम्।
छर्द्यरोचक-हृल्लास-दाह-तृष्णा-विनाशनम्॥ (शा. सं.)

इन्द्रजो कड़वा, पटोल पत्र, कुटकी, गिलोय, कड़वे निम्बकी अंतरछाल, नागरमोथा, सोंठ, रक्तचन्दन।

विधि—उक्त आठ ओषधियोंको मिलाकर जोकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर ½-½ ग्राम पिप्पली चूर्ण मिलाकर सुबह पिलावें। आवश्यकतापर रात्रिको भी दें।

उपयोग—यह अमृताष्टक क्वाथ पित्तश्लेष्मज ज्वरको दूर

करता है एवं उसके लक्षणरूप वमन, अरुचि, उबाक आना, दाह और तृषा आदिको भी दूर करता है। आमका पचन करा ज्वरका नाश करता है।

४. अर्कादि क्वाथ।

अर्कानंता-किरातामरतरु रसना--सिंदुवाराग्र-गन्धा-
तर्कारी-शिग्रु-पञ्चोषण-घुणदयिता भार्कवाणां कषायः।
सद्यस्तीव्रास्त्रिदोषानपहरति धनुर्मारुतं दन्तबन्धम्
शैत्यं गात्रेषु गाढं श्वसन-कसनकं सूतिकावातरोगान्॥

(वै० जी०)

आकका मूल,	रास्ना,	सुहिजनेकी छाल,	चित्रक मूल,
अनन्त मूल,	निर्गुण्डी,	पीपल,	सोंठ,
चिरायता,	बच	पीपलामूल,	अतीस कडुवा,
देवदारु	चव्य,	अरनीकी छाल,	भांगरा।

विधि—इन १६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—४० ग्राम का क्वाथकर ३ हिस्सेकर २-२ घण्टेपर पिलावें। आवश्यकतापर एकाध बार अधिक भी पिला सकते हैं।

उपयोग—यह अर्कादि क्वाथ, प्रबल बढे हुए वात-प्रधान त्रिदोषज ज्वरको दूर करता है। एवं उसके लक्षणरूप धनुर्वात, दांत भिचजाना, शीत, प्रबल वेगपूर्वक श्वास, कास, सूतिका रोग और अन्य सब वातप्रधान लक्षणोंका भी नाश करता है। छातीमें कफ संगृहीत हुआ हो, उसे भी सरलता से बाहर निकालता है।

५. अर्शोघ्न महाकषाय।

कुटज-बिल्व-चित्रक-नागरातिविषाभया-धन्वयासक-
दारुहरिद्रा-वचा-चव्यानीति दशेमान्यर्शोघ्नानि भवन्ति॥

(च० सं०)

कुडाछाल, चित्रकमूल, अतीस कडुवा, धमासा, बच, बेलगिरी, सोंठ, हरड़, दारुहल्दी, चव्य।

विधि—इन १० द्रव्योंको या जितनी मिले उतनीको मिला कर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्राम का क्वाथ करके दिनमें २ बार प्रातः रात्रिको पिलावें।

उपयोग—यह अर्शोघ्न महाकषाय अर्शोहर है। बवासीर एवं उससे उत्पन्न विकारोंको दूर करता है तथा पचन-क्रिया बढ़ाता है।

६. अशोकादि कषाय।

अशोक छाल	१०० ग्राम,	शतावर	१०० ग्राम,
दर्भ मूल	१०० ग्राम,	काली अनंतमूल	५० ग्राम,
भूमि आंवले	१०० ग्राम,	छोटी हरड़	५० ग्राम,
गोखरू छोटे	१०० ग्राम,	जीरा	५० ग्राम,
दारु हलदी	१०० ग्राम,	श्वेत चन्दन	५० ग्राम,
लोध	१०० ग्राम,	गुडहलके फूल	५० ग्राम,
आँवले	१०० ग्राम,	रसौंत	१०० ग्राम,

(वै. चि.)

विधि—उक्त १४ औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामको १० गुने जलमें मिलाकर क्वाथ करें। आधा जल शेष रहने पर उतार कर छान लेवें। प्रातः सायं दो बार।

उपयोग—यह अशोकादि कषाय स्त्रियोंके गर्भाशयके विकार, श्वेत प्रदर, रक्तप्रदर, मासिक धर्मकी विकृति, गर्भाशयशूल आदि को दूर करके शरीरको स्वस्थ और सबल बनाता है।

७. अश्मरीहर कषाय ।

पाषाण भेद	१० ग्राम	धानके मूल	१० ग्राम
सागौन बीज	१० ,,	लाल पुनर्नवा मूल	१० ग्राम
पपीतेकी जड़	१० ,,	गिलोय	१० ,,
शतावरी	१० ,,	चिचड़ाके मूल	१० ,,
गोखरू	१० ,,	ककड़ी बीजकी गिरी	१० ,,
वरणाकी छाल	१० ,,	जटामांसी	२० ,,
कुश मूल	१० ,,	खुरासानी अजवायन	२० ,,
कास मूल	१० ,,		

(सि० यो०)

विधि—उक्त १५ द्रव्योंको मिलाकर जौकुट चूर्ण करें ।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथकर पिलावें । दिनमें ३-४ बार २-२ घण्टेपर ।

अनुपान—श्वेत पर्पटी १-१ ग्राम ।

उपयोग—यह अश्मरीहर कषाय वृक्क स्थान और मूलाशयकी अश्मरीको तोड़ तोड़कर बाहर निकाल देता है । एवं वृक्कशूलको दूर करता है ।

वक्तव्य—रोगीको भोजनमें दूध, दूध+जलकी लस्सी, चाय, कुलथीका यूष, नारियलका जल, ईखका तुरन्त निकाला हुआ रस तथा लौकी, पेठा, ककड़ी, मकोयके पान, पुनर्नवाके पान, मूलीके पान, कासनीके पान आदि मूत्रल द्रव्योंका शाक आदि देवें । टबमें कमर तक रहे उतना निवाया जल भरकर बैठावें । द्विदल धान्य, घृत, तैल तले हुए पदार्थ, मांस, मछली, कन्द शाक, मिठाई आदि अपथ्य हैं ।

८. अश्वगन्धादि क्वाथ ।

अश्वगन्धामृता-भीरुदशमूल-बला-वृषाः ।
पुष्करातिविषा घ्नन्ति क्षयं क्षीररसाशिनः ।। (च० द०)

असगन्ध,	गोखरू,	अरलूकी छाल,	पुष्कर मूल,
गिलोय,	छोटी कटेली,	पाढ़लकी छाल,	अतीस कड़वा,
शतावरी,	बड़ी कटेली,	अरनीकी छाल,	
शालपर्णी,	बेलछाल,	खरैंटीकी जड़,	
पृष्ठपर्णी,	गम्भारी छाल,	अडूसाके पान ।	

विधि—उक्त १७ औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ बनाकर प्रात: साय पीवें।

उपयोग—यह अश्वगन्धादि क्वाथ राजयक्ष्माकी प्रारम्भिक अवस्थामें, वातप्रकोप शुष्क कास, मंद-मंद ज्वर, अग्निमांद्य, कृशता, आदि लक्षण प्रतीत होते हों, उसमें लाभ पहुँचाता है।

सूचना—भोजनमें दूध या मांस रसकी प्रधानता होनी चाहिए एवं ब्रह्मचर्यका आग्रह पूर्वक पालन करना चाहिए।

९. अष्टादशांग क्वाथ

दशमूली-शठीशृङ्गी-पौष्कर सदुरालभम्।
भार्ङ्गी कुटजबीज च पटोलं कटुरोहिणी॥
अष्टादशाङ्ग इत्येष सन्निपात ज्वरापहः
कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वासहिक्कावमीहरः॥(च०द०)

शालपर्णी,	बेलछाल,	कचूर,	इन्द्रजो कड़वा,
पृष्ठपर्णी,	गंभारी छाल,	काकड़ासिंगी,	पटोलपत्र,
छोटी कटेली,	अरलू छाल,	पुष्करमूल,	कुटकी।
बड़ी कटेली,	पाढल छाल,	धमासा,	
गोखरू छोटे,	अरनीछाल,	भारङ्गी,	

विधि—उक्त १८ औषधियोंको मिला, जोकूट चूर्ण करें।

मात्रा—४० ग्राम क्वाथकर २-२ घण्टेपर ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह अष्टादशाङ्ग क्वाथ सन्निपात ज्वरका नाश करता है। जिसमें ज्वर मर्यादामें हो, कास, हृदयकी जकड़ाहट,

पार्श्वपीड़ा, श्वास, हिक्का और वमन आदि लक्षण प्रतीत होते हों, उसपर यह विशेष उपकार दर्शाता है।

सूचना—मलावरोध हो, तो प्रारम्भमें ही एरण्ड तैल या अन्य औषधिकी पिचकारी लगाकर उदरको शुद्ध कर लेना चाहिए।

१०. आमलकी आलबाल

कृत्वाऽऽलवालं सुदृढं पिष्टैरामलकैर्भिषक्।
आर्द्रकस्य रसेनाशु पूरयेन्नाभिमण्डलम्॥
नदीवेगोपमं घोरं प्रवृद्धं दुर्धरं नृणाम्।
सद्योऽतिसारमजयं नाशयत्येष योगराट्॥ (भा० प्र०)

विधि—आंवलेको मट्ठेके साथ चटनीकी तरह पीसें। फिर रोगीको चित लेटाकर नाभिके चारों ओर आलबाल (थाला) बनावें। पश्चात् बीचमें अदरखका रस भर देवें। रोगीसे सहन हो सके उतने समय तक चित लेटे रहने देवें।

उपयोग—इस आलबालके बनानेसे नदीके वेगके समान (दिनमें ५०-१०० बार दस्त हो जाते हों) प्रबल अतिसारका भी तत्काल दमन हो जाता है।

११. आरग्वधादि कषाय (विष्टम्भ)।

विष्टम्भनिःशेषविधौ तु रोगी सेवेत योगं शतशोऽनुभूतम्।
आरग्वधो-रोहिणिकाऽर्धचन्द्रा-द्राक्षा-तथा-हेमदला-वयःस्था॥
पुष्पश्च शुष्कं शतपत्रिकायाः समानि सर्वाणि तदर्धभूता।
सम्मूर्च्छिता-शर्करयासुवृत्ता पलार्द्ध कल्पाः क्वथिताःप्रपेयाः॥
(च० सा०)

अमलतासका गूदा	२० ग्राम,	सनाय	२० ग्राम,
कुटकी	२० ,,	बड़ी हरड़	२० ,,
निसोत	२० ,,	गुलाबके सूखे फूल	२० ,,
बीज निकाली हुई मुनक्का	२० ,,	गुलकन्द	७० ,,।

विधि—कुटकी, निसोत, सनाय, हरड़ और गुलाबके फूल को कूटकर चूर्ण करें। फिर उसके साथ गुलकन्द मिलाकर एक जीव कर लेवें।

मात्रा—२०-२० ग्रामको २०० ग्राम जलमें मिला चूल्हेपर चढ़ा, अर्धावशेष क्वाथ करें। छानकर सुबह पी लेवें।

उपयोग—ज्वर आदि रोग चले जानेपर कईयोंको मलावरोध रह जाता है। उनको यह कषाय पिलानेसे १-२ दस्त खुलकर साफ आ जाता है और उदर शुद्ध हो जाता है। यह योग शतशोऽनुभूत है।

१२. आरग्वधादि कषाय (कफ वातज्वर)।

आरग्वध-ग्रन्थिक-मुस्त-तिक्ता-हरीतकीभिः क्वथितकषायः।
सामे सशूले कफवातयुक्ते ज्वरे हितो दीपनपाचनश्च ॥ (च.द.)

आमलतास का गूदा, नागरमोथा, छोटी हरड़,
पीपलामूल, कुटकी।

वक्तव्य—इस क्वाथको अन्य आचार्योंने आरोग्य पञ्चक और गिरिमाला पञ्चक भी संज्ञा दी है।

विधि—उक्त ५ द्रव्योंको समभाग मिला जोकुट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथकर दिनमें २ बार प्रातः सायंकालको देवें।

उपयोग—यह आरग्वधादि कषाय दीपन, पाचन, सारक है। यह कफवात ज्वरको प्रारम्भिक सामावस्थामें सफल कार्य करता है। आमको पाचन कराता है. मलको बाहर फेंककर उदरको शुद्ध बनाता है जिससे उदरशूल शान्त हो जाता है।

१३ उपदंशहर कषाय।

नीमकी अन्तरछाल १०० ग्राम, बकायनकी छाल ५० ग्राम,

इन्द्रायण मूल	१०० ग्राम,	झड़बेरीकी जड़की छाल	५० ग्राम,
कचनार छाल	१०० ग्राम,	दंतीमूल	५० ग्राम,
बबूलकी कच्ची फली	१०० ग्राम,	गुड़ पुराना	४०० ग्राम,
छोटी कटेली मूल	१०० ग्राम,		

विधि—गुड़के अतिरिक्त ८ द्रव्योंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें। फिर सबको मिला ४ किलो जलमें २४ घण्टे तक भिगो दें। फिर गुड़ मिलाकर उबालें। ५०० ग्राम जल शेष रहनेपर उतारकर छान लेवें।

मात्रा—५०-५० ग्राम उपदंश रोगीको प्रातः काल पिलावें। सुजाकके रोगीको २५-२५ ग्राम कषाय समान जल मिलाकर पिलावें।

उपयोग—यह उपदंशहर कषाय विषघ्न और विरेचक है। नूतन उपदंश, जीर्ण उपदंश रोग और जीर्ण सुजाक रोग जो रक्तादि धातुओंमें लीन हो गया हो, उसे निकालनेके लिए उपयोगी है। इसके सेवनसे उपदंश और सुजाक जनित संधिवात, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रनलिका प्रदाह, कुष्ठ, दुष्टव्रण, गुदशूक तथा विभिन्न चर्मरोग आदि रोग १ सप्ताहमें नष्ट हो जाते हैं।

पथ्य—विरेचन लग जानेपर भोजनमें खिचड़ी और घी लेवें। लौकी, पालक, चौलाई, परवल, टिण्डे आदिका शाक ले सकते हैं।

वक्तव्य—विरेचन अधिक हो तो मात्रा थोड़ी कम करें। रोग जीर्ण होनेपर पूरा शान्त न हो, तो एक सप्ताह औषधि सेवन करनेके पश्चात् १ सप्ताह बन्द करें। फिर १ सप्ताह सेवन करें। इस तरह ३-४ सप्ताहमें रोग जड़ मूलसे दूर हो जाता है।

१४ उशीरादि कषाय (ज्वरातिसार)

उशीरं बालकं मुस्तं धन्याकं विश्वभेषजम्।

समङ्गा धातकी लोध्रं बिल्वं दीपनपाचनम् ।।
हन्त्यरोचकपिच्छामविबन्धं सातिवेदनम् ।
सशोणितमतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम् ।। (भै०र०)

खस,	धनिया,	धायके फूल,
नेत्रवाला,	सोंठ,	लोध,
नागरमोथा,	मजीठ,	बेलगिरी।

विधि—उक्त ९ द्रव्योंको २०-२० ग्राम मिलाकर जोकूट चूर्ण करें।

मात्रा—४० ग्रामका क्वाथ कर ३-४ विभागकर दिनमें ३-४ बार पिलावें। दस्त अधिक हों तो अधिक बार और कम हों तो कम समय पिलावें।

अथवा सब चूर्णको १६ गुने जलमें मिलाकर क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहनेपर उतारकर छान लेवें। शीतल होनेपर १८० ग्राम शहद मिलाकर बोतलमें भर लेवें। उसमेंसे २५-२५ ग्राम पिलाते रहें।

उपयोग—यह उशीरादि कषाय दीपन, पाचन, ग्राही, रक्त संग्राहक और ज्वरातिसारनाशक है। यह अरुचि, आम संग्रह, मलावरोध, उदरमें वेदना, रक्तातिसार और ज्वर आदिको दूर करता है।

१५. उशीरादि कषाय (वातज्वर)।

उशीर-कलशी-महौषध-किरातकांभोधर-
स्थिरा-बृहतिकाद्वयामृतलता-त्रिकंटै: कृतम् ।
कषायकममुं पिबेत्पवनजज्वर-व्याकुल:
पुमान् दशशतच्छदच्छदमदप्रसक्लोचने ।। (वै० जी०)

खस,	नागरमोथा,	गिलोय,
पृष्ठपर्णी,	शालपर्णी,	गोखरू छोटा,
सोंठ,	छोटी कटेली,	कुटकी,
चिरायता,	बड़ी कटेली,	मुनक्का ।

वक्तव्य—इस कषायको भैषज्य रत्नावलीकारने किरातादि क्वाथ संज्ञा दी है । दोनों ग्रन्थोंमें कुटकी और मुनक्का नहीं है मलावरोध दूर करनेके उद्देश्यसे हमने बढ़ाये हैं ।

विधि—उक्त १२ औषधियोंको १०·१० ग्राम मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—४० ग्रामका क्वाथ कर ३ विभाग करें । दिनमें ३ बार प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल पिलावें ।

अथवा सब चूर्णको १६ गुने जलमें मिलाकर उबालें । जल चतुर्थांश शेष रहनेपर उतार कर छान लेवें । शीतल होनेपर १२० ग्राम शहद मिलाकर बोतलमें भर लेवें । इसमेंसे २५·२५ ग्राम दिनमें ३ बार पिलावें ।

उपयोग—इस उशीरादि कषायके सेवनसे नूतन वातज्वर कण्ठशोष, रोमहर्ष, अंगोंका जकड़ना, बार-बार उबासी आना मलावरोध, उदरशूल सह दूर होता है

१६. उष्णवातघ्न क्वाथ ।

रेवतचीनी ६ ग्राम, मकोय १० ग्राम,
काँटेवाली चौलाई की सूखी जड़ २० ग्राम, पुराना गुड़ ६ ग्राम,
भृङ्गराज पंचांग सूखा १० ग्राम ।

विधि—गुड़को छोड़ शेष सबको मिला जौ कूट कर मिट्टी के बरतनमें सुबहको ७०० ग्राम जलमें उबालें । चौथा हिस्सा जल शेष रहने पर उतारकर छान लें, गुड़ मिलाकर पी लेवें । शामको पुनः उसी औषधिके कचरेमें आध किलो जल मिला,

उबालकर चतुर्थांश जल शेष रहनेपर छान ६ ग्राम गुड़ मिला कर पी लेवें। (स्वामी जगदानन्द गिरीजी)

उपयोग—यह उष्णावातघ्न क्वाथ रक्त शोधक, कीटाणु-नाशक और सारक है। ७ से १५ दिन तक इसके सेवनसे पुराना सुजाक, पेशाबमें जलन, पीप आना, संधिवात आदि लक्षणों सह दूर हो जाता है और विपरीत औषधियोंसे उत्पन्न विकार भी दूर हो जाता है।

वक्तव्य—इस क्वाथके सेवन करनेके पहले मुंजिस या अन्य औषधि लेकर उदरको शुद्ध कर लेना चाहिये।

मुञ्जिस—मूल योगदाताके मत अनुसार गावजवां, गुलबन-फशा, जौ कूट सौंफ, सनाय, गुलाबके फूल और हंसराज ६-६ ग्राम, उन्नाब ६ नगको ५०० ग्राम जलमें मिला, मिट्टीके बरतनमें उबालें। तीसरा हिस्सा जल रहनेपर उतारकर छान लेवें। एवं अमलतासका गुदा २० ग्राम, तथा तुरञ्ज बीन ६ ग्रामको २०० ग्राम गरम दूधमें मसल, ऊपर-ऊपरसे अमलतासके कचरे को निकाल देवें। पश्चात् क्वाथमें ४० ग्राम शक्कर और दूध मिलाकर पी लें। पुन: शामको उक्त फोकको आध किलो जल में क्वाथ करें। तीसरा हिस्सा जल शेष रहनेपर ३० ग्राम शक्कर और १०० ग्राम गरम दूध मिलाकर पी लेवें। ३-४ या ५ दिन तक मुञ्जिस सेवन करनेपर उदर नरम हो जायगा। फिर उपर्युक्त क्वाथका सेवन करें।

१७. एरण्डादि कषाय।

गन्धर्वहस्त-वृष-गोक्षुरकामृतानां
मूलं बलेक्षुरकयोश्च पचेत्तु धीमान्।
वातासृगाशु विनिहन्ति चिरप्ररूढ-
माजानुगं स्फुटितमूर्द्धगतन्तु धीमान् (भ० प्र०)

एरण्डमूल, गोखरू, खरेंटीमूल,
वासामूल. गिलोय. ईखकी जड़ ।

विधि—उक्त ६ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जो कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ दिनमें २ बार प्रातःकाल और रात्रिको सेवन करें ।

सूचना—मलावरोध हो तो हरड़, गुड़के साथ सेवन करते रहें ।

उपयोग—यह एरण्डादि कषाय जीर्ण वातरक्त रोग, जो जानु तक फैला हुआ, फटा हुआ और ऊपरकी ओर बढ़ रहा हो उसे शीघ्र दूर करता है ।

१८. एलादि क्वाथ

एलोपकुल्या-मधुकाश्मभेद-कौन्ती-श्वदंष्ट्र-वृषकोरुबूकैः ।
क्वाथं पिबेदश्मजतु-प्रगाढं सशर्करं साश्मरि-मूत्रकृच्छ्री ।।(च०द०)

छोटी इलायची, मुलहठी, निर्गुण्डीकेबीज, अडूसा,
पीपल, पाषाणभेद. गोखरू, एरण्डमूल।

विधि—उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथकर दिनमें २-३ बार पिलावें ।

अनुपान—शिलाजतु ¼ से ⅓ ग्राम मिलाते रहें ।

उपयोग—यह एलादि क्वाथ वृक्क स्थान और मूत्राशयमें उत्पन्न अश्मरी, शर्करा, सिकता और मूत्रकृच्छ्रको दूर करता है।

१९. कट्फलादि कषाय (कास) ।

कट्फलं कत्तृणं भार्ङ्गी मुस्तं धान्यं वचाभया ।
शृङ्गी पर्पटकं शुण्ठी सुराह्वञ्च जले शृतम् ।
मधुहिंगुयुतं पेयं कासे वातकफात्मके ।
कण्ठरोगे क्षये शूले श्वासहिक्काज्वरेषु च ।। (च० द०)

कायफल, भारंगी, धनियां, काकड़ासिंगी, सोंठ, रोहिषघास, नागरमोथा, बड़ी हरड़, पित्तपापड़ा, देवदारु।

वक्तव्य—रसरत्नाकरमें रोहिषघास नहीं लिखा है।

विधि—उक्त १० औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्राम का क्वाथ दिनमें ३ बार पीवें।

अनुपान—६ ग्राम शहद और भूनी हींग ५० मि० ग्राम।

उपयोग—यह कट्फलादि कषाय वातकफात्मक कास, कण्ठरोग, क्षय, शूल (पार्श्वशूल), श्वास, हिक्का और ज्वर आदिको दूर करता है।

वक्तव्य—कण्ठमें विशेष कष्ट होता हो तो क्वाथ पीनेके पहले ४-६ ग्राम मक्खन या घी खा लेवें एवं क्वाथ पीनेपर मुलहठीके सत्वका टुकडा मुँहमें रखें।

२०. कट्फलादि कषाय (सन्निपात)।

कट्फलाब्द-वचा-पाठा-पुष्कराजाजि-पर्पटैः।
देवदार्वभया-शृंगी-कणा-भूनिम्ब-नागरैः॥
भार्ङ्गी कलिङ्ग-कटुका-शठी-कत्तृण-धान्यकैः।
समांशैः साधितः क्वाथो हिंग्वार्द्रकरसैर्युतः॥
कर्णमूलोद्भवं शोथं हन्ति मन्यागलाश्रयम्।
कफवातज्वरं श्वास कासं हिक्कां हनुग्रहम्॥
गलगण्डं गण्डमालां स्वरभेदं-कफात्मकम्।
शिरोगुरुत्वं बाधिर्यं वृद्धिश्च कफमेदसोः॥ (वृन्द)

कायफल,	जीरा,	पीपल,	कुटकी,
नागरमोथा,	पित्तपापड़ा,	चिरायता,	कचूर,
बच,	देवदारु,	सोंठ,	रोहिषघास,
पाठा,	हरड़,	भारगी,	धनिया,
पुष्करमूल,	काकड़ासिंगी,	इन्द्र जौ कड़ुवा,	

विधि—सबको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—४० ग्रामका क्वाथ करके ३ विभाग करें। २-२ घण्टेपर १०० मि.ग्रा. भुनी हींग, २ ग्राम अदरखका रस और ६ ग्राम शहद मिलाकर पिलावें।

उपयोग—यह कट्फलादि कषाय दीपन, पाचन, सारक, कफघ्न और त्रिदोष हर है। अति बढी हुई स्थितिवाला सन्निपात, जिसमें कर्णशोथ, श्वास, कास, स्वरभेद, गलगण्ड, बधिरता, मस्तिष्कमें भारीपन आदि हो गये हों, उसे दूर करता है एवं कफ वात ज्वर, कण्ठविकार, गण्डमाला आदिको भी शमन करता है तथा कफ, मेदकी वृद्धिका नाश करता है।

२१. कण्टकार्यादि पाचन (साम ज्वर)

कण्टकारिद्वयं शुण्ठी धान्यकं सुरदारु च
एभिः शृतं पाचनं स्यात् सर्वज्वरनिवारणम् ॥ (वृ.नि.र.)

छोटी कटेली, बड़ी कटेली, सोंठ, धनिया, देवदारु।

विधि—उक्त ५ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ कर प्रातः सायं पिलावें।

उपयोग—यह कण्टकार्यादि पाचन सब प्रकारके ज्वरोंकी आमावस्थामें आमका पचन करानेके लिये सफलतापूर्वक सेवन कराया जाता हैं। बालक, वृद्ध, युवा, सगर्भा, प्रसूता सबको निर्भय रूपसे दिया जाता है।

२२. कण्टकार्यादि क्वाथ (पित्तकफ ज्वर)।

कण्टकार्यमृता भार्ङ्गी विश्वेन्द्रयववासकम्।
भूनिम्बचन्दनं मुस्तं पटोलं कटुरोहिणी॥
विपाच्य पाययेत्क्वाथं पित्तश्लेष्मज्वरापहम्।
दाह-तृष्णारुचि-च्छर्दि-कास-शूल निवारणम्॥भा.प्र.॥

छोटी कटेली, सोंठ, चिरायता, पटोल पत्र,
गिलोय, इन्द्र जौ कडुवा, रक्तचंदन, कुटकी।
भारंगी, अडूसा, नागरमोथा,

विधि—उक्त ११ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ प्रातः सायं पिलावें।

उपयोग—यह कण्टकार्यादि क्वाथ पित्तश्लेष्म ज्वरको दूर करता है। साथमें दाह, तृषा, अरुचि, वमन, कास, उदरशूल आदि लक्षण उपस्थित हुए हों, वे सब दूर हो जाते हैं।

२३. कफनाशक कषाय।

कायफलकी छाल, काकड़ासिंगी, अडूसाके पान, पुष्कर मूल।
भारङ्गमूल, मुलहठी, गिलोय,
छोटीकटेली मूल, हरड़, नागरमोथा,
अर्कमूलकी छाल, बहेड़ा, सोंठ,

विधि—उक्त १३ औषधियोंको २०-२० ग्राम लेकर जौकूट चूर्ण करें। फिर ३ किलो जलमें रात्रिको भिगो देवें। सुबह मन्दाग्नि देकर चतुर्थांश क्वाथ करें। शीतल होनेपर छानकर २०० ग्राम शहद मिला लेवें। (श्रीगोपालजी कुँवरजी ठक्कुर)

मात्रा—२५-२५ ग्राम दिनमें ३-४ बार ३-४ घण्टे बाद पिलावें।

उपयोग—इस कफनाशक क्वाथके सेवनसे कफ जल्दी पक कर बाहर निकल जाता हैं। कण्ठमेंसे आवाज साफ निकलने लगती है। कफ कास, तमक श्वास, पार्श्वशूल, कफज्वर, निमोनिया, इन्फ्लूएञ्जा, जुकाम और फुफ्फुसशोथ आदि रोगोंमें जब कफका संचय अधिक हो गया हो, छाती जकड़ गई हो तब इस क्वाथका सेवन अति हितावह होता है।

२४. किरातादि क्वाथ (कण्ठकुब्ज त्रिदोष)।

किरात-कटुका कणा-कुटज-कण्टकारी शठी-
कलिद्रु किलिमाभया-कटुक-कट्फलाम्भोधरैः।
विषामलक-पुष्करानलकुलीरश्रृंगी वृषै
र्महौषधः सखेरय जयति कण्ठकुब्जं गणः ॥(भा०प्र०)

चिरायता,	बहेड़ा,	अतीस कड़वा,	सोंठ।
कुटकी,	देवदारु,	आंवला,	
पीपल,	हरड़ छोटी,	पुष्करमूल,	
इन्द्रजौ कडुवे,	कालीमिर्च,	चित्रकमूल,	
छोटी कटेली,	कायफल,	काकड़ासिंगी,	
कपूर कचरी,	नागरमोथा,	वासा,	

विधि—उक्त १९ औषधियोंको १०-१० ग्राम मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—४० ग्रामका क्वाथ कर ३ विभाग कर ३-३ घण्टे पर पिलावें।

उपयोग—यह किरातादि क्वाथ कण्ठकुब्ज सन्निपात, जिसमें कण्ठके भीतर सैकड़ों कांटे जैसे कण हो जायें, श्वास प्रबल वेगसे चले, प्रलाप, अरुचि, दाह, सारे शरीरमें पीड़ा, तृषा, ठोडी जकड़ जाय, शिरदर्द, मोह, कम्प होता रहना आदि लक्षण उपस्थित हों, उसे दूर करता है।

२५. कुटजदाडिम क्वाथ।

वत्सत्वग् दाडिमतरुशलाटुफल सम्भवा त्वक् च।
त्वग्युगलं पलमानं विपचेदष्टांश सम्मिते तोये।
अष्टमभागशेषं क्वाथं मधुना पिबेत् पुरुषः।
रक्तातिसारमुल्वणमतिशयितं नाशयेन्नियतम् ॥(भा०प्र०)

कूड़ेकी छाल २० ग्राम, अनारके कच्चे फलके छिलके २० ग्राम

विधि—उक्त दोनों द्रव्योंको ३०० ग्राम जलमें उबालें। ४० ग्राम जल शेष रहनेपर ६ ग्राम शहद मिला कर देवें।

उपयोग—यह कुटजदाडिम क्वाथ श्रेष्ठ ग्राही और दीपन, पाचन औषधि है। अति वेगवाले रक्तातिसारको भी शीघ्र नष्ठ करता हैं।

२६. कुटजाष्टक क्वाथ।

कुटजातिविषा-पाठा-धातकी-लोध्र-मुस्तकैः।
ह्रीबेर-दाडिम युतैः कृतः क्वाथः समाक्षिकः॥
पेयो मोचरसेनैव कुटजाष्टकसंज्ञकः।
अतीसाराञ्जयेद्घातरक्तशूलामदुस्तरान्॥ (शा० मं०)

कूड़ेकी छाल, पाठा, लोध, खस, अतीस कड़वा, धायके फूल, नागरमोथा, अनारके छिलके।

विधि—उक्त आठ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जोकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ दिनमें ३-४ बार पिलावें।

प्रक्षेप—शहद ६ ग्राम और मोचरसका चूर्ण १॥ ग्राम।

उपयोग—यह कुटजाष्टक क्वाथ शीतवीर्य, ग्राही, दीपन, पाचन और वेदनाशामक है। सब प्रकारके अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, प्रवाहिका, उदरशूल और अरुचि आदिको दूर करता है।

२७. कुलत्थ यूष।

पलद्वयमिते कोष्णे कुलत्थस्य शृते रसः।
लवणं शरपुंखेन सार्धं माषद्वयोन्मितम्॥
क्षिप्त्वा पिबेत्पतेत्तस्य मूत्रेण सममश्मरी।
शर्करा सिकता चापि दृष्टमेतदनेकधा॥ (बृ. नि. र.)

विधि—कुलथी १०० ग्रामको ४ गुने जलमें मिलाकर यूष

बनावें। कुलथी बिलकुल गल जानेपर सरफोंका और सेंधा-नमक २-२ ग्राम (आवश्यकतानुसार हल्दी धनियां, जीरा भी) मिला कर रोगीको पिलावें।

उपयोग—यह कौलत्थ यूष उष्ण, लघु, अम्ल विपाकी, अनुलोमन और अश्मरी भेदक है। अश्मरी, शर्करा, सिकता (रेती) सबको तोड़ तोड़कर मूत्रके साथ बाहर निकाल देता है।

२८. कृमिघ्न क्वाथ।

अनारकी जड़की ताजीछाल- सोंठ का चूर्ण ६ ग्राम,
के कुचले हुए टुकड़े ५० ग्राम, वायविडङ्ग चूर्ण १० ग्राम,
पलास बीज चूर्ण ६ ग्राम, किरमाणी अजवायन १० ग्राम।

विधि—उक्त ५ औषधियोंको मिला कलईदार बरतनमें १ किलो जल मिला ढक्कन ढककर मंदाग्निपर क्वाथ करें। १ किलो जल शेष रहनेपर उतारकर छान लेवें। शीतल होने पर १०० ग्राम शहद मिलाकर बोतलमें भर लेवें।

मात्रा—२५-२५ ग्राम सुबहसे आध-आध घण्टेपर ४ बार पिलावें। इस तरह ३ दिन तक देवें। चौथे दिन सुबह एरण्ड तैल या दूसरा जुलाब देवें।

उपयोग—इस कृमिघ्न क्वाथसे कद्दूदाना कृमि, गोल कृमि, सूक्ष्म कृमि सब गिर जाते हैं। फिर उदर कृमिके हेतुसे उत्पन्न पाण्डुता, अरुचि, अग्निमांद्य, रक्तविकार, मलावरोध, शारीरिक निर्बलता आदि भी शनैः शनैः दूर हो जाते हैं।

वक्तव्य—कद्दूदाना कृमि हो तो जब तक शिर न निकल जाय, तब तक औषध प्रयोग करते रहना चाहिए, फिर ताल प्रधान औषध या भिलावा या अन्य रक्तशोधक औषधिका सेवन करके लीन विषको भी जला देना चाहिए।

इस क्वाथके पिलानेसे बेचैनी होती है। उसे सहन कर लेना चाहिये। चाहिए तो अजवायन और सौंफ थोड़ा २ चबा लेवें।

२९. खदिराष्टक क्वाथ (मसूरिका)।

खदिरत्रिफलारिष्टपटोलामृतवासकैः।
क्वाथोऽष्टकाङ्गो जयति रोमान्तिकामसूरिकाः॥
कुष्ठविस्फोटवीसर्प कण्डवादीनपि पानतः।

खेरकी छाल, बहेड़ा, नीमकी अन्तर छाल, गिलोय, हरड़, आंवला, पटोल पत्र, वासापत्र,

विधि—उक्त ८ औषधियोंको मिला जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ दिनमें २ या ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह खदिराष्टक क्वाथ उत्तम विषघ्न और रक्त-शोधक है। शीतला रोमान्तिका (खसरा), कुष्ठ, विस्फोट, विसर्प, खुजली आदि चर्म रोगको यह दूर करता है। शीतला की बढ़ी हुई अवस्थामें भी यह सफलतापूर्वक कार्य करता है।

३०. खर्जूरादि मन्थ।

खर्जूरदाडिमीद्राक्षातिन्तिडीकाम्लिकामलैः।
सपरूपैः कृतो मन्थः सर्वमद्य-विकारनुत्॥

पिण्ड खजूर, द्राक्षा, इमली पक्की, फालसे पक्के, अनारदाने, कोकम, आंवला,

विधि—उक्त ७ द्रव्योंको करीब १०-१० ग्राम शीतल जलमें मिला मंथन कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिला देवें।

उपयोग—यह खर्जूरादि मन्थ शामक पेय है। यह शराब आदिके नशेको शान्त करनेके लिये विशेष उपयोगी है। लू लगने पर भी इससे लाभ पहुँचता है।

३१. गुडूच्यादि क्वाथ (ज्वर)।

गुडूची धान्यकारिष्टं पद्मकं रक्तचन्दनम्।
एष सर्वान् ज्वरान् हन्ति गुडूच्यादिस्तु दीपनः।
हृल्लासा-रोचकच्छर्दि-पिपासा-दाह—नाशनः॥(शा.सं.)

गिलोय, धनिया, नीमकी अन्तर छाल, पद्माख, रक्तचंदन।

वक्तव्य—वैद्य जीवनमें इसको लोहित चन्दनादि क्वाथ नाम दिया है। एवं पित्त कफ ज्वरशामक दर्शाया है।

विधि—उक्त ५ द्रव्योंको २०-२० ग्राम लेकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके सुबह पिलावें। इसी तरह शामको पिलावें।

उपयोग—यह गुडुच्यादि क्वाथ पित्त-कफ-ज्वर और अन्य सब नूतन ज्वरोंका नाश करता है और अग्नि प्रदीप्त करता है। इसके सेवनसे पित्त कफ ज्वरके लक्षण—उबाक आना, वमन, अरुचि, प्यास लगना और दाह आदि भी निवृत्त हो जाते हैं।

३२. गुडूच्यादि फाण्ट (पित्तप्रकोप)।

गिलोय, नागरमोथा, हरड़,
आंवला, श्वेत चन्दन, सोंठ।

विधि—उक्त ६ द्रव्योंको जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्राम चूर्णको उबलते हुए जलमें डाल कर २-३ मिनट उबालें। फिर उतारकर ढक देवें। आध घण्टे बाद छान लें। फिर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिला देवें।

उपयोग—यह गुडूच्यादि फाण्ट ज्वर, उग्र औषधि शराब अथवा अन्य कारणसे उत्पन्न दाह (नेत्रदाह, मस्तिष्कदाह, छाती में दाह, बधिरता, चक्कर आना आदि) को दूर करता है।

३३. गुडूच्यादि क्वाथ (वातरक्त)

गुडूची-बाकुची-चक्रमर्दश्च पिचुमन्दकः।
हरीतकी हरिद्रा च धात्री वासा शतावरी॥
बला नागबला यष्टिः मधूक क्षुरकोऽपि च।
पटोलस्य लतोशीरं मञ्जिष्ठा रक्तचन्दनम्॥

गुडूच्यादिरयं क्वाथो वातरक्तान्तकारकः ।
कुष्ठानामपि संहर्ता कण्डूमण्डल-खण्डनः ॥
वातिकानौपधिक्रान् सर्वान् विकारानाशु नाशयेत् ।
मुनिभिःकरुणाकीर्णैः कषायोऽयं प्रकाशितः ॥ (बृ.नि.र.)

गिलोय,	आंवला,	महुआके फूल,
बावची,	अडूसाके पान,	तालमखाना,
पंवाड बीज,	शतावरी,	पटोल पंचांग,
नीमकी अंतरछाल,	नेत्रबाला,	खस,
हरड,	नागबला (कंघी),	मजीठ,
हल्दी,	मुलैठी,	रक्त चन्दन,

विधि—उक्त १८ औषधियोंको समभाग मिला जौ कूट करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ दिनमें ३ बार पिलाते रहें।

उपयोग—यह गुडूच्यादि क्वाथ वातरक्तका नाशक है। एवं कुष्ठ, कण्डू, रक्तविकारके ददोरे होना, वात विकार और रक्तविकार आदिको शीघ्र नष्ट करता है।

३४. गोजिह्वादि क्वाथ।

गोजिह्वामूलमेकं द्विगुणबर्हिशिखामूलं कुस्तुम्बरुणा-
मष्टांशे क्वाथतोये मधुसितारजो मिश्रमन्ते पिबेत्तत् ।
तस्यार्शः षड्विधोऽपि हरति गुदरुजस्राव मामानुबन्धम्
कीलं कण्डूं ग्रहण्यां शूलभृतिभिषजा मण्डलात् पथ्यसेवी ॥
(बृ० नि० र०)

गोभीकी जड़ १ भाग, मयूरशिखाका मूल २ भाग, धनिया २ भाग,

विधि—तीनोंको मिला २०-२० ग्राम लें। उसे २५० ग्राम जलमें उबालकर अष्टमांश क्वाथ करें। छानकर पिला देवें। दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह गोजिह्वादि क्वाथ सब प्रकारके अर्श रोगको ४८ दिन तक सेवन करनेपर नष्ट कर देता है। एवं आमके हेतुसे गुदा स्थानकी पीड़ा, अर्शके अंकुर, खुजली, संग्रहणी और शूल आदिको भी दूर करता है।

३५. ग्रन्थ्यादि क्वाथ (कफप्रधान सन्निपात)।

ग्रन्थीन्द्रजामरतरुकृमिशत्रुभार्ङ्गी,
भृङ्ग त्रिकट्वनलकट्फलपौष्कराणाम्।
रास्नाभया-वृहतिकाद्वय-दीप्य-भूत-
केशी-किरातक-वचाञ्चविका-वृकीणाम्॥
क्वाथो हन्यात् सन्निपातान् समग्रान्।
बुद्धिभ्रंशं स्वेदशैत्यप्रलापान्॥
शूलाध्मानं विद्रधिश्लेष्मवातान्।
वातव्याधीन् सूतिकानाञ्च तद्वत्॥

पीपलामूल,	सोंठ,	रास्ना,	चिरायता,
इन्द्र जौ कडुवा,	कालीमिर्च,	हरड़,	बच,
देवदारु,	पीपल,	बड़ी कटेली,	चव्य,
बायविडङ्ग,	चित्रकमूल,	छोटी कटेली,	पाठा
भारंगी,	कायफल,	अजवायन,	जटांमांसी,
भांगरा,	पुष्करमूल,		

विधि—उक्त २२ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जो कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ ३-३ घण्टेपर ३ बार देवें।

उपयोग—यह ग्रन्थ्यादि क्वाथ कफ प्रधान सन्निपातको नाश करनेमें श्रेष्ठ है। एवं त्रिदोषके हेतुसे उत्पन्न लक्षण-बुद्धि-भ्रंश, स्वेद, शीतल देह हो जाना, मन्द-मन्द प्रलाप, उदरशूल, अफारा, विद्रधि, कफप्रधान और वातप्रधान रोग तथा सूतिका

रोगको भी दूर करता है।

३६. चन्दनादि कषाय (शिरदर्द)।

सफेद चन्दन,	दारुहल्दी,	असगंध,
रक्तचन्दन,	लाख,	बच,
मूर्वा,	वंशलोचन,	पीपल,
काली निसोत,	सोनागेरु,	काकोली,
सफेद निसोत,	जीवन्ती,	जीवक,
हल्दी,	शतावरी,	ऋषभक।

विधि—उक्त १८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० ग्राम कषायको रात्रिको ३२५ ग्राम जलमें भिगो देवें। सुबह चतुर्थांश क्वाथ करके पिला देवें।

उपयोग—यह चन्दनादि कषाय उदर शोधन, अनुलोमन, वेदनाहर है। इसके सेवनसे मलावरोध दूर होता है और शिर-दर्द शमन हो जाता है। कफ, आम, विष, पूय-प्रवेश जब मस्तिष्कमें होता है जब भयंकर शिरदर्द होता हो, उसपर यह कषाय हितावह है।

३७. चन्दनादि क्वाथ (दाह)।

पटीर-पर्पटोशीर-नीर-नीरद-नीरजे।
मृणाल-मिसि-धान्याक-पद्मकामलकैः कृतः॥
अर्द्धशिष्टः सिताशीतः पीतः क्षौद्रसमन्वितः।
क्वाथो व्यपोहयेद दाहं नृणाञ्च परमोल्वणम्॥ (भा. प्र.)

श्वेत चन्दन,	नेत्रवाला,	कमलनाल,	पद्माख,
पित्त पापड़ा,	नागरमोथा,	सौंफ,	आंवला,
कमलगट्टे की गिरी,	धनिया,	खस।	

विधि—उक्त ११ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ दिनमें ३ बार पिलावें।

अनुपान—३ ग्राम मिश्री और शीतल होनेपर ३ ग्राम शहद मिलावें।

उपयोग—यह चन्दनादि क्वाथ दाह शामक है। मदात्यय, विष सेवन या अन्य कारणोंसे उत्पन्न दाहको तुरन्त दूर करता है।

३८. छिन्नादि क्वाथ (विस्फोटक)।

छिन्ना-पटोल-भूनिम्ब वासकारिष्टपर्पटैः।
खदिराब्दयुतैः क्वाथो हन्ति विस्फोटकज्वरम् ॥ (भा.प्र.)

गिलोय, चिरायता, नीमकी अतर छाल, नागरमोथा, पटोलपत्र, अडूसाके पान, पित्त पापड़ा,

विधि—उक्त ७ औषधियों को समभाग मिला कर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ प्रति समय बनाकर दिन में ३ बार देवें।

उपयोग—यह छिन्नादि क्वाथ ज्वरहर, विषघ्न और कीटाणु नाशक है, इसे विस्फोटक ज्वरको दूर करनेके लिए भाव प्रकाश कारने कहा है। विस्फोटकके अतिरिक्त शीतलाके ज्वरमें भी उपयोगी होता है।

३९. छिन्नादि क्वाथ (जीर्ण ज्वर)।

गिलोय २० ग्राम, नागरमोथा २० ग्राम, छोटी कटेलीमूल १० ग्राम
चिरायता २० ग्राम, सोंठ ६ ग्राम,

विधि—उक्त औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ १ समयमें देवें। दिनमें २ बार प्रातः और रात्रिको ३-४ दिन तक।

वक्तव्य—मलावरोध रहता हो तो प्रातःकालको कुटकीको तवेपर सेक चूर्ण करें। २ ग्राम गुड़के साथ ले लेवें। फिर ऊपर लिखा हुआ क्वाथ पीवें। उदर शोधनकी विशेष आवश्यकता हो तो दोपहर और रात्रिको भी कुटकी देवें।

उपयोग—यह छिन्नादि क्वाथ जीर्ण ज्वर तथा उसके लक्षणरूप नेत्रदाह, शारीरिक निर्बलता, पाण्डु, अग्निमांद्य, अरुचि, व्याकुलता आदि सबको दूर करता है।

४०. छिन्नोद्भवादि क्वाथ (अम्लपित्त)

छिन्नोद्भवा निम्बपटोलपत्रं
फलत्रिकं सुक्वथितं सुशीतम्।
क्षौद्रान्वितं पित्तमनेकरूपम्
सुदारुणं हन्ति तदम्लपित्तम्॥ (व० से०)

गिलोय,	परवलके पान,	बहेड़ा,
हरड़,	नीमकी अन्तर छाल,	आंवला।

विधि—उक्त ६ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट कर लेवें।

मात्रा—१० से २० ग्रामको छानकर शीतल किया हुआ क्वाथ ६ ग्राम शहद मिलाकर पिलावें।

उपयोग—यह छिन्नोद्भवादि क्वाथ पित्तशामक और आमाशय शोधक है। इसके सेवनसे बढ़ा हुआ अम्लपित्त और विविध प्रकारके पित्त रोग दूर हो जाते हैं।

४१. जम्ब्वादि शीत कषाय

जम्ब्वाम्रपल्लव गवेधुक धान्यसेव्य-
ह्रीबेरवारि मधुना पिबतोऽल्पमल्पम्।
छर्दिः प्रयाति शमनं त्रिसुगन्धियुक्ता
लीढा निहन्ति मधुना च दुरालभा वा॥ (वृ.मा.)

जामुनके कोमल पान, ❀गवेधुक(गर्गरी)के बीज, खस,
आमके कोमल पान, धनिया, नेत्रवाला।

विधि—इन सबको मिला उबलते हुए १६ गुने जलमें डाल कर रात्रिको भिगो दें। सुबह थोड़ा थोड़ा जल शहद मिलाकर पिलावें। दिनमें ही तैयार करना हो, तो पानोंको कुचल ठण्डा जल मिला, एक घण्टे बाद प्रयोगमें ले सकते हैं।

दूसरा उपचार—दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची ६ ग्रामका कपड़ छान चूर्ण कर शहदके साथ देवें।

उपयोग—यह जम्ब्वादि शीत कषाय वमन और उबाकको तुरन्त दूर कर देता है।

४२. जातीपत्रादि कषाय।

जातीपत्रामृता द्राक्षा-यास-दार्वी-फलत्रिकैः।
क्वाथः क्षौद्रयुतः शीतो गण्डूषो मुखपाकनुत्॥(वं० से०)

चमेलीके पान, द्राक्षा, दारुहल्दी, बहेड़ा,
गिलोय, धमासा, हरड़, आँवला।

विधि—इनको समभाग मिला ४ गुने जलमें उबाल कर छान लेवें।

उपयोग—इस जातीपत्रादि कषायका उपयोग कुल्ले कराने के लिए होता है। यह मुख पाकको शुद्ध करता है और मिटा देता है।

४३. तगरादि कषाय

तग-तुरगगन्धा-पर्पटी-शङ्खपुष्वो
त्रिदशविटपितिक्ता भारती भूतकेशी।

❀ नोट—गवेधुक जँगली धान्य है। हि० गर्गरी, गरहेडुवा बं० गुर्गुर, म० कसई, संताल, जर्गदि, लेटिन Coix BARBATA संज्ञा है। यह शीतल, मूत्रल और शामक है। इसके अभावमें चांवलके खील लेवें।

जलधर-कृतमालश्चेतकी-गोस्तनीभ्यां
सह हरति कषायो भुङ्क्ष्व पानात् प्रलापम् (यो० चि०)

तगर,	देवदारु,	नागरमोथा,
असगन्ध,	कुटकी	अमलतासका गूदा,
पित्त पापड़ा,	ब्राह्मी,	छोटी हरड़,
शंखपुष्पी,	जटामांसी,	मुनक्का,

विधि—उक्त १२ द्रव्योंको समभाग मिला जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ २-२ घण्टेपर ३-४ बार पिलावें।

उपयोग—यह तगरादि कषाय सन्निपातमें वात प्रधान और पित्त प्रकोपज प्रलापको दूर करनेमें अति हितावह है। यह कषाय मस्तिष्कपर शामक असर पहुँचाता है।

४४. त्रायन्त्यादि क्वाथ (विद्रधि)

त्रायन्ती त्रिफला निम्बकटुका मधुकं समम्।
त्रिवृत् पटोलमूलाभ्यां चत्वारोंशाः पृथक् पृथक्॥
मसूरान्निस्तुषादष्टौ तत्क्वाथः सघृतो जयेत्।
विद्रधीगुल्म वीसर्प दाह–मोह–मद–ज्वरान्।
तृण्मूर्च्छाच्छर्दिहृद्रोग पित्तासृक्कुष्ठकामलाः॥ (अ०हृ०)

त्रायमाण १० ग्राम,	नीमकी अन्तर-	निसोत ४० ग्राम,
हरड़ १० ग्राम,	छाल १० ग्राम,	परवलमूल ४० ग्राम,
बहेड़ा १० ग्राम,	कुटकी१०ग्राम,	मसूरकीदाल ८०ग्राम
आंवला १० ग्राम,	मुलहठी१०ग्राम,	(छिल्टे रहित)

विधि—उक्त द्रव्योंको मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर थोड़ा घी मिलाकर प्रातःकाल पिलावें।

उपयोग—यह त्रायन्त्यादि क्वाथ उत्तम शोधक क्वाथ हैं। यह विद्रधि, गुल्म, विसर्प दाह, मोह, मद, ज्वर, तृषा, मूर्च्छा,

वमन, हृद्रोग, रक्तपित्त, कुष्ठ (त्वचाका रोग) और कामलाको दूर करता है।

४५. त्रायमाणादि क्वाथ (विसर्प)

त्रायमाण-पटोल-पर्पटकच्छुरा-कटुरोहिणी ।
पावकेन लघीयसी परिपाच्य साधुशतं हितम् ॥
हन्ति सर्वविसर्पजालमुपद्रवौघसमायुतम् ।
द्वन्द्वजं विषजं च तं पुरसंयुतं गुणवत्तरम् ॥ (बृ.यो.त.)

त्रायमाण, पटोलमूल, पित्तपापड़ा, धमासा, कुटकी।

विधि—उक्त ५ द्रव्योंको समभाग मिला जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—बालकके लिये २ से ३ ग्राम और बड़ोंके लिये १० ग्राम से २० ग्रामको रात्रिको ४ गुने जलमें भिगो, सुबह उबाल, छान शुद्ध गूगल मिला पिला देवें। आवश्यकतापर रात्रिको भी दूसरी बार देवें।

उपयोग—यह त्रायमाणादि क्वाथ सब प्रकारके एक दोषज, द्वन्द्वज, त्रिदोषज और आग्नेय आदि विषज विसर्प तथा इसके लक्षण रूप ज्वर तथा विभिन्न उपद्रव आदिको दूर करता है।

४६. त्रायमाणादि कषाय (स्तन्य शोधक)

त्रायमाणामृता-निम्ब-पटोल त्रिफला-शतम् ।
गुरुक्षीरा पिवेदेतत् स्तन्यदोषविशुद्धये ॥ (भा.भै.र.)

त्रायमाण, निम्बकी अन्तर छाल, हरड़, आँवला, गिलोय, परवलके पान, बहेड़ा।

विधि—उक्त ७ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० ग्राम चूर्णको रात्रिको जलमें भिगो देवें। सुबह उबाल छानकर पिला देवें। इस तरह सुबह भिगोवें उसे रात्रिको पिलावें।

उपयोग—यह त्रायमाणादि कषाय शीतल, दुग्ध-शोधक

और विषघ्न है। जिसे माता या धायका दूध भारी होनेसे शिशु को पचन न होता हो, उसे यह कषाय पिलाते रहनेसे स्तन्य सरलतासे पचने योग्य हो जाता है।

४७. त्रिकण्टकादि क्वाथ।

त्रिकण्टकारग्वध-दर्भ-काश दुरालभा-पर्वतभेद-पथ्याः।
निघ्नन्ति पीता मधुनाऽश्मरीं च संप्राप्त मृत्योरपि मूत्रकृच्छ्रम्॥
(व० भा०)

गोखरू, दर्भ, धमासा, हरड़,
अमलतासकागूदा, कास, पाषाणभेद।

विधि—उक्त ७ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० से ४० ग्रामका क्वाथ कर, शीतल होनेपर शहद मिलाकर पिलावें। आवश्यकता अनुसार २-२ घण्टेपर पिलावें। या दिनमें ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह त्रिकण्टकादि क्वाथ वृक्काश्मरी, मूत्राशयाश्मरी, शर्करा, सिकता और मृत्युसम कष्टप्रद, भयंकर मूत्रकृच्छ्र आदिको दूर करता है।

४८. त्रिफलादि क्वाथ।

त्रिफला-वेणु पत्राब्द-पाठा-मधुयुतैः कृतः।
कुम्भयोनिरिवाम्भोधि बहुमूत्रन्तु शोषयेत्॥ (यो. र.)

हरड़, आंवला, नागरमोथा,
बहेड़ा, बांसके पान, पाठा।

विधि—उक्त ६ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्राम क्वाथको रात्रिके समय जलमें भिगो देवें। सुबह उबाल, छान, शीतलकर, ६ ग्राम शहद मिला कर पिला देवें। इसी तरह सुबह भिगोकर रात्रिको पिलावें।

उपयोग—यह त्रिफलादि क्वाथ बहुमूत्रको शीघ्र दूर करता है, जैसे अगस्त्य ऋषिने क्षण भरमें समुद्रको सुखा दिया था।

४९. त्रिवृत्तादि कषाय।

त्रिवृद्विशाला-त्रिफला-कटुकारग्वधैः कृतः।
सक्षारो भेदनः क्वाथः पेयः सर्वज्वरापहः ।। (च० द०)

निसोत सफेद, हरड़, आंवला, अमलतास गूदा, इन्द्रायणकी जड़, बहेड़ा, कुटकी।

विधि—अमलतासको छोड़ शेष द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें। फिर अमलतास मिला लेवें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथकर जवाखार ५०० मि० ग्राम मिलाकर प्रातःकाल पिलावें।

उपयोग—यह त्रिवृतादि कषाय मलावरोध, आमविष, कफ आदि विकारोंके हेतुसे बने रहनेवाले जीर्ण ज्वरको दूर करता है। जीर्णज्वर और त्रिदोषज ज्वर विषम ज्वर आदिमें यह उपयोगी है।

५०. त्र्यूषणादि क्वाथ।

त्र्यूषणं पिप्पलीमूलं देवदारु-फलत्रिकम्।
कषायं पाययेद् ह्येष सक्षारलवणत्रिकम् ।। (वृ० मा०)

सोंठ, पीपल, देवदारु, बहेड़ा, कालीमिर्च, पीपलामूल, हरड़, आंवला।

विधि—उक्त ८ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर उसमें प्रक्षेप रूपसे यवक्षार, सैंधानमक, समुद्रनमक और काला नमक २००-२०० मि. ग्रा. मिलाकर पिलानेसे थोड़े दिनोंमें वातकफज वृषणवृद्धि दूर हो जाती है।

५१. दशमूल क्वाथ ।

बिल्व-श्योनाक-खम्भारी-पाटला-गणिकारिका: ।
दीपनं कफवातघ्नं पञ्चमूलमिदं महत् ।।
शालिपर्णी-पृश्निपर्णी बृहतीद्वय गोक्षुरम् ।
वातपित्तहरं वृष्यं कनीयं पञ्चमूलकम् ।।
उभयं दशमूलन्तु सन्निपातज्वरापहम् ।
कासे श्वासे च तन्द्रायां पार्श्वशूले च शस्यते ।।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तं कण्ठहृद्ग्रहनाशनम् ।
महान्ति यानि मूलानि काष्ठगर्भाणि यानि च ।।
तेषान्तु वल्कलं ग्राह्यं ह्रस्व मूलानि कृत्स्नश: ।।
(अत्र बिल्वादिनां, पञ्चानां मूलस्य वल्कलं ग्राह्यम्)
(भा० भ० र०)

बृहत् पञ्चमूल, लघु पञ्चमूल, खम्भारी छाल, छोटी कटेली, बेलकी छाल, शालपर्णी, पाढल छाल, बड़ी कटेली, अरलू छाल, पृष्ठपर्णी, अरणी छाल, गोखरू ।

विधि—उक्त १० द्रव्योंको समभाग मिलाकर जो कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें । प्रात: और रात्रिको ।

गुण-धर्म—बृहत् पञ्चमूल, दीपन, कफवातहर है । लघु पञ्चमूल वात पित्तशामक और वृष्य है ।

उपयोग—दशमूल क्वाथ सन्निपात ज्वरका नाशक है । एवं लक्षण रूप कास, श्वास, तन्द्रा और पार्श्वशूल, शिरदर्द, आनाह, अरुचि, सूतिका रोग आदिको भी दूर करता है । प्रक्षेप रूपसे पिप्पली चूर्ण मिलाया जाय, तो कण्ठग्रह, हृदयकी जकड़न इन दोनोंको भी नष्ट करता हैं ।

बृहद पञ्चमूलके लिये ग्रन्थकारने मूलकी छाल लेनेका विधान

विधान किया है। वर्तमानमें सामान्यतः वृक्षकी शाखाकी छाल ली जाती है। लघु पञ्चमूलके पञ्चाङ्ग लेनेका दर्शाया है।

५२. दशमूलादि क्वाथ

दशमूलानि च नलिनं कुष्ठमुशीरं नातस्पृक्के।
एरण्डशिफां च पिबेद् गर्भाशयशोधनाय गोपयसा ॥ (भा.भै.र.)

दशमूल १० ग्राम, कूठ १० ग्राम, तगर १० ग्राम,
एरण्डमूल १०ग्राम, कमल १० ग्राम, खस १० ग्राम,
स्पृक्का (अभावमें खस) १० ग्राम,

विधि—उक्त १६ द्रव्योंको मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामके साथ १०० ग्राम जल और २०० ग्राम दूध मिलाकर दुग्धावशेष क्वाथ करें। फिर छानकर पिला देवें। सुबह और रात्रिको।

उपयोग—यह दशमूलादि क्वाथ वातहर, शूलनाशक और गर्भाशय-शोधक है। गर्भस्राव या गर्भपात होनेपर या प्रसवावस्थामें गर्भाशयके भीतर दोष रह जानेपर इस क्वाथका सेवन अति हितावह है। सूतिकाको यह क्वाथ पिलानेपर गर्भाशय शोधनके अतिरिक्त ज्वर, कास, श्वास, अरुचि, अग्निमांद्य, मलावरोध, आध्मान, उदरशूल आदि विकार हों, तो वह भी दूर हो जाते हैं। एवं शारीरिक बल भी बढ जाता है।

५३. दार्व्यादि क्वाथ

दार्वीरसाञ्जनं मुस्तं भल्लातं श्रीःफलं वृषा।
किरातश्च पिवेदेषां क्वाथं शीतं समाक्षिकम् ॥
जयेत्सशूलं प्रदरं पीतश्वेतासितारुणम् ॥ (शा० सं०)

दारुहल्दी, नागरमोथा, बेलगिरी, चिरायता,
रसोंत, भिलावा शुद्ध, वासापान,

वक्तव्य—कई चिकित्सक भल्लातकके स्थानपर रक्त चन्दन लेते हैं। भल्लातक अनुकूल हो तो भिलावा लेना अधिक हितकर है।

विधि—उक्त ७ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर, ठण्डाकर ६ ग्राम शहद मिलाकर प्रात: सायंकाल पिलावें।

उपयोग—यह दार्व्यादि क्वाथ गर्भाशय शूल, श्वेत प्रदर, पीत प्रदर, मैले रंगका प्रदर और रक्त प्रदर सबको दूर करता है।

सूचना—क्वाथ पीकर तुरन्त गरम गरम चाय-दूध न पीवें। एवं भोजन भी हाथ लगानेपर ठण्डा प्रतीत हो, वैसा करें।

५४. दुरालभादि कषाय।

दुरालभाश्मभित्पथ्या-व्याघ्री-मधुकधान्यकैः।
कृतः क्वाथः सितापीतो मूत्रकृच्छ्रविबन्धनुत्॥
दाहं शूलं निहंत्याशु तमः सूर्योदये यथा॥ (ग० नि०)

धमासा, हरड़, मुलहठी,
पाषाणभेद मूल छोटी कटेली मूल, धनिया।

विधि—उक्त ६ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० से ४० ग्रामका क्वाथ करें। आधा, सुबह ६ ग्राम मिश्री मिलाकर पिलावें। २ घण्टे बाद पुनः आधा, मिश्री मिलाकर पिला देवें।

उपयोग—यह दुरालभादि कषाय मूत्रकृच्छ्र, मूत्रावरोध, मूत्रदाह और मूत्रमार्गमें होने वाले शूलको शीघ्र नष्टकर देता है।

५५. दुर्जलजेता कषाय।

पटोलपत्र १० ग्राम, वासापत्र १० ग्राम, चिरायता १० ग्राम,
नागरमोथा १० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, कुटकी १० ग्राम,
गिलोय १० ग्राम, धनिया १० ग्राम, कालीमुनक्का २० ,,

विधि—मुनक्काके अतिरिक्त ८ औषधियों को समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें। फिर बीज रहित मुनक्का को मिला लेवें।

मात्रा—२५ ग्राम क्वाथकर प्रात:काल पिलावें। रात्रिको उक्त द्रव्यको उबाल फिर छान कर पिलावें। इस तरह ४ दिन कषाय लेवें। अधिक समय लेना हो तो फिर बना लेवें।

उपयोग—यह दुर्जलजेता कषाय विदेश के दूषित जल से उत्पन्न ज्वर, प्लीहावृद्धि. अग्निमांद्य, अरुचि, मलावरोध, पांडुता आदिको दूर करके पचन-क्रिया को बढ़ा देता है।

५६. देवदार्वादि क्वाथ।

देवदारु वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम्।
कट्फल-मुस्त-भूनिम्ब-तिक्ता-धान्य-हरीतकी॥
गजकृष्णा च दुःस्पर्शा गोक्षुरं धन्वयासकम्।
बृहत्यतिविषा छिन्ना कर्कट कृष्णजीरकम्॥
समभागान्वितैरेतैः सिन्धुरामठसंयुतम्।
क्वाथमष्टावशेषन्तु प्रसूतां पाययेत् स्त्रियम्॥
शूल-कास-ज्वर-श्वास-मूर्च्छा-कम्प-शिरोऽर्त्तिनुत्।
युक्तं प्रलापतृड्-दाह-तन्द्रातीसार-वान्तिभिः॥
निहन्ति सूतिकारोगं वातपित्तकफोत्थितम्॥(बृ.नि.र.)

देवदारु, सोंठ. कुटकी, छोटी कटेली, अतीस कड़वा, बच, कायफल, धनियां, गोखरू, गिलोय, कूठ, नागरमोथा, हरड़छोटी, जवासा, काकड़ासिंगी, पिप्पली, चिरायता, गजपीपल बड़ी कटेली, कालाजीरा।

वक्तव्य—मूल ग्रन्थकारने दुःस्पर्शाका अर्थ छोटी कटेली दर्शाया है।

विधि–उक्त २० द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्णकरें

मात्रा—२०-२० ग्रा. अष्टावशेष क्वाथकर प्रातः रात्रि को देते रहें।

अनुपान—१० मि. ग्रा. भुनी हींग और १ ग्राम सैंधानमक।

उपयोग—यह देवदार्वादि क्वाथ वात, पित्त, कफ, इनमेंसे किसी भी दोष प्रधान सूतिका रोग, हो उसे दूर करता है। सूतिका रोगमें उत्पन्न गर्भाशयशूल, कास, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, कम्प, शिरदर्द, प्रलाप, तृषा, दाह. तन्द्रा, अतिसार, वमन आदि लक्षणों को भी यह शान्त करता है।

५७. द्राक्षादि कषाय।

द्राक्षा-काश्मर्य खर्जूर-पटोलारिष्ट-वासकैः।
लाजाऽऽमलक-दुस्पर्शाक्वथितं शर्करान्वितम्॥
मसूरिकां पित्तकृतां रक्तजां च विनाशयेत्॥ (वृ० नि० र०)

मुनक्का, खजूर, नीमकी अन्तरछाल, धानका लावा, धमासा, गंभारीफल, पटोलपत्र, वासा पत्र, आंवले,

विधि—मुनक्का, खजूरको छोड़ शेष औषधियोंको जौकूट करके फिर मुनक्का, खजूर मिला लेवें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ कर ६-६ ग्राम मिश्री मिला कर दिनमें २ या ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह द्राक्षादि कषाय पैत्तिक और रक्तज मसूरिका को दूर करता है। मस्तिष्कको शान्त बनाता है। तथा आम-विष, दाह, तृषा और व्याकुलताका भी निवारण करता है।

५८. द्वात्रिंशदाख्य क्वाथ

भार्ङ्गी भूनिम्ब-निम्बैं-र्घन कटुक-वचा-व्योष-वासा-विशाला,
रास्नाऽनन्ता-पटोली-सुरतरु-रजनी-पाटला-टुण्टुकैश्च।
ब्राह्मी-दार्वी-गुडूची-त्रिवृदतिविषिका-पुष्कर-त्रायमाणैः।
व्याघ्री-सिंही-कलिङ्ग-त्रिफल-शठियुतैः कल्पितस्तुल्य भागैः॥

क्वाथो द्वात्रिंशदाख्यस्त्र्यधिकदश महासन्निपातान्निहन्या-
च्छूलं कासादि हिक्का-कसन-गुदरुजाध्मान विध्वंसकारी।
उरुस्तम्भान्त्रवृद्धि गलगदमरुचिं सर्वसन्धिं ग्रहार्त्तिम्,
मातङ्गौघान्निहन्यान्मृगरिपुरिवचेद्रोगजालं तथैव ।।

भारंगी, पीपल, पाढलकी छाल, त्रायमाणा,
चिरायता, वासापत्र, श्योनाक छाल, छोटीकटेली,
नीमकीअंतरछाल, इन्द्रायणजड़, ब्राह्मी, बड़ीकटेली,
नागरमोथा, रास्ना, दारु हल्दी, इन्द्र जौ,
कुटकी, अनन्तमूलकाली, गिलोय, हरड़,
बच, पटोल पत्र, निसोत, बहेड़ा,
सोंठ, देवदारु, अतिविषा कड़वा, आंवला,
कालीमिर्च, हल्दी, पुष्करमूल, कचूर ।

विधि—उक्त ३२ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ ताजा करके दिनमें ३ बार पिलावें । आवश्यकतापर २-२ घण्टेपर दें ।

उपयोग—यह द्वात्रिंशदाख्य क्वाथ १३ प्रकारके सन्निपातों का नाश करता है तथा उसके लक्षण और उपद्रवरूपसे उत्पन्न शूल, उदरशूल, मांसपेशीमें शूल, कास, हिक्का, श्वास, कफ-प्रकोप, अर्श, आध्मान आदिको दूर करता है । एवं ऊरुस्तम्भ, अन्त्रवृद्धि, गलरोग, अरुचि, सांधों-सांधोंका जकड़ जाना आदि वात प्रधान सब रोगोंका नाश करता है। जिस तरह सिंह मृगोंका नाश करता है, उस तरह यह क्वाथ सर्व रोग जालका नाश करता है ।

५९. द्विनिशादि हिम ।

द्विनिशा त्रिफलायुक्तं रात्रौ पर्युषितं जलम् ।
प्रभाते मधुना पीतं मेहशूलं निकृन्तति ।। (वृ० नि० र०)

हल्दी, दारु हल्दी, हरड़, बहेड़ा, आंवला।

विधि—उक्त ५ द्रव्योंको समभाग मिलाकर चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामको रात्रिको गरम जलमें भिगो देवें। प्रात:काल मसल, छानकर ६ ग्राम शहद मिलाकर पिलावें।

उपयोग—यह द्विनिशादि हिम सब प्रकारके प्रमेह और मूत्रदाह, मूत्रावरोध आदिको नष्ट करता है।

६०. धातक्यादि क्वाथ (बालातिसार)।

धातकीबिल्व-लोध्राणि बालकं गजपिप्पली।
एभि: कृतं शृतं शीतं शिशुभ्य: क्षौद्रसंयुतम्॥
प्रदद्यादवलेहं वा सर्वातीसारशान्तये॥ (शा०सं०)

धायके फूल, बेलगिरी, लोध, नेत्रवाला, गजपीपल।

विधि—उक्त ५ द्रव्योंको समभाग मिला कूटकर चूर्ण करें।

मात्रा—२ से ४ ग्रामका क्वाथ कर, शीतलकर १-२ ग्राम शहद मिलाकर बच्चों को पिलावें। दिनमें ३ बार देवें।

उपयोग—यह धातक्यादि क्वाथ बालकोंके अतिसार और प्रवाहिकाको दूर करता है।

६१. धात्री रसक्रिया (नेत्ररोग)

धात्री-सैन्धव कृष्णाभिस्तुल्याभिर्मरिचं समम्।
क्षौद्रयुक्तं निहन्त्याशु पटलञ्च रसक्रिया॥ (वं० से०)

आंवला ५० ग्राम, पीपल ५० ग्राम,
सैन्धानमक ५० ग्राम, कालीमिर्च १५० ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें। फिर रात्रि को ८ गुने जलमें भिगो देवें। सुबह ताम्बेके बरतनमें डाल ढक्कन देकर क्वाथ करें। चतुर्थांश जल शेष रहनेपर उतारकर छान लेवें।

फिर छाने हुए जलको चूल्हेपर चढावें। (उसमें ३ माशे पापड़-खार डालें, मूलमें नहीं है) मंदाग्निपर पाक करें। पतले चाटण जैसा शेष रहने पर उतार लेवें। शीतल होनेपर चौथाई या अधिक शहद मिला लेवें।

उपयोग—यह धात्री रसक्रिया आंखोंमें डालनेके लिये निर्भय और उत्तम उपचार है। पटल विकार. दृष्टिमांद्य, जल-स्राव, कफस्राव, मांसकोथ, मांसवृद्धि, तिमिर (प्रथम पटलमें विकार होनेपर) आदिका नाश करता हैं।

सूचना—इस रसक्रियाके उपचार कालमें त्रिफलाके हिमका पान नियमित होता रहे, त्रिफला हिमसे आंखें धोते रहें एवं त्रिफला घृतका सेवन किया जाय तो शीघ्र और स्थायी लाभ पहुँचाता है।

६२. धात्र्यादि क्वाथ (मूत्रकृच्छ्र)

धात्री द्राक्षा च यष्ट्याह्वं विदारी सत्रिकण्टका।
दर्भेक्षुमूलमभया क्वाथयित्वा जलं पिबेत्॥
ससितं मूत्रकृच्छ्रघ्नं रुजादाहहरं परम् (भै० र०)

आंवले,	मुलहठी,	गोखरू,	ईखजड़,
द्राक्षा,	विदारीकन्द,	दर्भमूल,	हरड़।

विधि—उक्त ८ औषधियोंको मिला जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर ३-४ ग्राम शक्कर मिलाकर सुबह पिलावें। तीव्र वेदनामें आवश्यकता अनुसार २-२ घण्टेपर ३ बार अन्यथा दिनमें ३ बार प्रातः दोपहर रात्रिको।

उपयोग—यह धात्र्यादि क्वाथ शीतल, मूत्रल और प्रदाह-शामक है। इसके सेवनसे कष्टप्रद मूत्रकृच्छ्र, मूत्रमार्गमें वेदना और दाह आदि निवृत्त होते हैं।

६३. धात्र्यादि क्वाथ (श्वित्र)

धात्री-खदिरयोः क्वाथं पीत्वाऽवल्गुजसंयुतम् ।
शङ्खेन्दुधवलं श्वित्रं तूर्णं हन्ति न संशयः ।।

(वृ० मा०)

आँवला, बावची,

वक्तव्य—खदिरसार शार्ङ्गधराचार्यने नाम बाकुची क्वाथ दिया है । एवं खदिरसार (खैरसार) लेनेका विधान किया है ।

विधि—१०-१० ग्राम आँवला और खैरकी छाल मिलाकर क्वाथ करें, फिर छानलें । ३ माशे बावचीका चूर्ण मुंहमें डालकर ऊपर क्वाथ पिलावें । प्रातः सायं दिनमें २ बार ।

उपयोग—यह धात्र्यादि क्वाथ रक्तशोधक और त्वचाके लिए पोषक है । इसके सेवनसे १ मासमें श्वित्र, सफेद कुष्ठका निःसन्देह नाश हो जाता है ।

६४. धान्यकादि क्वाथ

धान्यकातिविषा-मुस्ता-गुडूची-बिल्व-नागरैः ।
दत्तः कषायः शमयेदतिसारं चिरोत्थितम् ।।
अरोचकामशूलास्र ज्वरघ्नः पाचनः स्मृतः ।।

(यो० र०)

धनिया, नागरमोथा, बेलगिरी,
अतीस कड़वा, गिलोय, सोंठ ।

विधि—उक्त ६ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ करके दिनमें ३ बार प्रातः मध्याह्न और सायंकाल पिलावें ।

उपयोग—यह धान्यकादि कषाय पक्व अतिसार, जीर्ण-अतिसार, रक्तातिसार, ज्वरातिसार, अरुचि, आम बनना, उदरशूल आदिका नाश करता है । एवं पचन क्रिया बढ़ाता है ।

६५. धान्यपञ्चक क्वाथ (आमातिसार)

धान्यकं नागरं मुस्तं वालकं बिल्वमेव च ।
आमशूलातिसारघ्नं पाचनं वह्निदीपनम् ।
इदं धान्यचतुष्कं स्यात् पैत्ते शुण्ठीं विना पुनः ।।(भै.र.)

धनियां, सोंठ, नागरमोथा. नेत्रवाला, बेलगिरी ।

वक्तव्य—उक्त ५ द्रव्योंमेंसे पित्तातिसार वालोंके लिए सोंठ कम करें । उसे धान्यचतुष्क संज्ञा दी है ।

विधि—उक्त द्रव्योंको समभाग मिलाकर जोकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर दिनमें ३ बार पिलावें ।

उपयोग—यह धान्यपञ्चक और धान्यचतुष्क क्वाथ दीपन, पाचन और ग्राही है। इसके सेवनसे आमातिसार, दुर्गन्धयुक्त बार बार दस्त होना, उदरशूल और मलावरोध नाश होता है ।

६६ नवकार्षिक क्वाथ ।

त्रिफला निम्ब-मञ्जिष्ठा वचा-कटुकरोहिणी ।
वत्सादनी-दारुनिशा कषायो नवकार्षिकः ।।
वातरक्तं तथा कुष्ठं पामानं रक्तमण्डलम् ।
कुष्ठं कपालिकाकुष्ठं पानादेवापकर्षति ।। (र० र०)

हरड़, आंवला, मजीठ, कुटकी, दारुहल्दी, बहेड़ा, नीमकी अन्तरछाल, बच, गिलोय ।

वक्तव्य—शार्ङ्गधर आदि आचार्योंने इसे लघुमञ्जिष्ठादि क्वाथ संज्ञा दी है । कई आचार्योंने गिलोयके स्थानपर पटोल लिया हैं ।

विधि—सब औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१० से २० ग्राम चूर्णको रात्रिको १६ गुने जलमें भिगो देवें। सुबह क्वाथ कर छानकर पिला दें ।

उपयोग—यह नवकार्षिक क्वाथ रक्तशोधक, कीटाणुनाशक विषघ्न और उदरशोधक हैं। इसके सेवनसे वातरक्त, कुष्ठ, पामा, कण्डू, रक्तमण्डल. कपालकुष्ठ आदिका नाश होता है। एवं सुबह को १-२ दस्त साफ आ जाता है।

वक्तव्य—भोजनमें नमक, मिर्च, तले हुए पदार्थ और कब्ज करने वाला भोजन कमसे कम कर देना चाहिए।

६७. नागरादि क्वाथ (ज्वर)।

नागरं पौष्करं मूलं गुडूची कण्टकारिका।
सकास-श्वास-पार्श्वार्त्तौ वातश्लेष्मोत्तरे ज्वरे ॥ (अ०हृ०)

सोंठ, पुष्करमूल, गिलोय, छोटी कटेली।

विधि—इन ४ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ करके सुबह शाम पिलावें।

अनुपान—६-६ ग्राम शहद और २०० मि. ग्राम पीपलका चूर्ण मिला लेवें।

उपयोग—यह नागरादि क्वाथ आमपाचन, कफघ्न और वातहर है। इसके सेवनसे नया वातश्लेष्म प्रधान ज्वर, जीर्ण ज्वर, कास, श्वास, पार्श्वपीड़ा (उरस्तोय), अग्निमांद्य आदि दूर होते हैं।

६८. नागरादि क्वाथ (ज्वरातिसार)।

नागरातिविषा-मुस्ता-भूनिम्बामृतवत्सकैः।
सर्वज्वरहरः क्वाथः सर्वातीसारनाशनः ॥ (बृ. नि, र.)

सोंठ, नागरमोथा, गिलोय,
अतीस कड़वा, चिरायता, इन्द्रजौ कडुवा।

विधि—सबको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर दिनमें ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह नागरादि क्वाथ दीपन, पाचन, ग्राही और ज्वरघ्न है। इसके सेवनसे ज्वरातिसार, सब प्रकारके नये ज्वर और सब प्रकारके अतिसार निवृत्त होते हैं।

६९. निदिग्धिकादि क्वाथ

निदिग्धिका नागरकामृतानां क्वाथं पिबेन्मिश्रितपिप्पलीकम्।
जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमांद्यार्दितपीनसेषु।
(हा० सं०)

छोटी कटेलीकीजड़ ताजी १० ग्राम, गिलोय ताजी १० ग्राम, सोंठ ५ ग्राम।

विधि–उपर्युक्त औषधियोंको कुचल २०० ग्राम जलमें मिलाकर क्वाथ करें। फिर छान २०० मि. ग्रा. पीपलका चूर्ण मिलाकर प्रातःकाल पिलावें। इसी तरह रात्रिको भी ताजा क्वाथ कर पिलावें।

उपयोग—यह निदिग्धिकादि क्वाथ जीर्णज्वर तथा उसके उपद्रवरूप अरुचि, कफ, कास, उदरशूल, श्वास, अग्निमांद्य, अर्दित और पीनस आदि विकारोंका नाश करता है।

७०. निम्बादि क्वाथ

निम्बं पर्पटकं पाठां पटोलं कटुरोहिणीम्।
वासां दुरालभां धात्रीमुशीरं चन्दनद्वयम्॥
एष निम्बादिकः ख्यातः पीतः शर्करया युतः॥
हन्ति त्रिदोषमासूरीं ज्वरवीसर्पसम्भवाम्।
उत्थिता प्रविशेद्या तु पुनस्तां बाह्यतो नयेत॥(च०द०)

नीमकी अन्तर छाल, पटोल पत्र. धमासा, सफेद चन्दन, पित्तपापड़ा, कुटकी, आंवला रक्तचन्दन, पाठा, अड़ूसाके पान, खस।

विधि—उक्त ११ औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर, छानकर ५ ग्राम मिश्री मिलाकर पिलावें, दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह निम्बादि क्वाथ त्रिदोषज शीतला, पित्तप्रधान तथा रक्तप्रधान मसूरिका, विसर्प, ज्वर आदिको नष्ट करता है। इस क्वाथके सेवनसे शीतलाकालीन विष जल जाता है। और उत्तान विष बाहर फेंक दिया जाता है। जिससे फाले शीघ्र बैठ जाते हैं अथवा सूख जाते हैं।

७१. नियमनादि क्वाथ

नियमन त्रिफला कुटजो वचा त्रिकटुकं खदिरं त्रिवृतायुतम्।
मुनिदिनं हि गवां सलिलेन च मृतमिदं कृमिनाशकरं पिबेत्॥

(वृ० नि० र०)

निम्बकी अन्तरछाल,	आंवला,	सोंठ,	खेरछाल,
हरड़,	इन्द्रजौकडुवा,	कालीमिर्च,	निसोत,
बहेड़ा,	बच,	पीपल।	

विधि—उक्त ११ द्रव्योंको कूटकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—बालकोंके लिए २ से ४ ग्राम बड़ोंके लिए १० से २० ग्राम अधिक कृमि हों और सहन हो सके तो दो बार सुबह शाम। नहीं तो १ बार सुबह। १६ गुने जलमें क्वाथ करें। फिर अनुपान रूपसे बड़ोंके लिए १५ से २५ ग्राम गोमूत्र मिला लेवें। या गोमूत्र पहले पिलाकर ऊपर क्वाथ पिला देवें।

उपयोग—इस नियमनादि क्वाथका सेवन करानेपर बालक और बड़ोंके उदर कृमि, छोटे सूत जैसे तथा बड़े गोल कृमि सब निकल जाते हैं।

सूचना—भोजनमें गुड़, शक्कर, कच्चा दूध, भारी भोजन, मांस, मछली, तले हुए पदार्थ, मिठाई आदिका सेवन न करें।

७२. निशादि क्वाथ

निशाद्वयोशीर-शिरीषमुस्तैः सलोध्र-भद्रश्रिय-नागकेशरैः ।
पटोलमूलारुणतन्दुलीयकैः पिबेद् हरिद्रामलकल्कसंयुतम् ॥
मसूरि-विस्फोट-विसर्प-शान्तये तथा सरोमान्त्य-वमिज्वरापहम् ॥
(वृ० नि० र०)

हलदी, सिरसकी छाल, श्वेत चन्दन, अतीस कडुवा, दारूहलदी, नागरमोथा, नागकेशर, चोलाईकीजड़, खस, लोध, पटोलमूल ।

विधि—उक्त ११ औषधियोंको कूटकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर छानकर फिर हल्दी और आंवलेका कल्क खिलाकर ऊपर क्वाथ पिलावें । दिनमें ३ बार ।

उपयोग—यह निशादि क्वाथ मसूरिका, विस्फोट, विसर्प तथा वमन और ज्वर युक्त रोमान्तिकाको दूर करता है ।

७३. पञ्चतिक्त क्वाथ

क्षुद्रा-पुष्कर-भूनिम्ब-गुडूची-विश्वभेषजैः ।
'पञ्चतिक्त' नामायं क्वाथो हन्त्यष्टधा ज्वरम् ॥(वं.से.)

छोटी कटेलीकी जड़, पुष्करमूल, चिरायता, गिलोय, सोंठ, ।

विधि—उक्त ५ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें ३ बार पिलावें।

अनुपान—५ ग्रामसे १० ग्राम शहद मिलाते रहें ।

उपयोग—यह पञ्चतिक्त क्वाथ आठों प्रकारके ज्वरोंको नष्ट करता है । आमज्वर, अपचनसे उत्पन्न ज्वर, वातज ज्वर, कफ ज्वर, शीतज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर आदि सब ज्वरोंमें यह हितावह है ।

७४. पञ्चमूल्यादि क्वाथ ।

पञ्चमूली-बला-विल्व-गुडूची-मुस्त-नागरैः ।
पाठा-भूनिम्ब-ह्रीबेर-कुटजत्वक्फलैः शृतम् ॥
हन्ति सर्वानतीसारञ्ज्वरदोषं वमिं तथा ।
सशूलोपद्रवं श्वासं कासं हन्यात्सुदुस्तरम् ॥
पञ्चमूलीति सामान्याद्योज्या पित्ते कनीयसी ।
महती पञ्चमूली तु वातश्लेष्माधिके हिता ॥(वृं.मा.)

पञ्चमूल ५ भाग, नागरमोथा १ भाग, नेत्रबाला १ भाग, बला (खरैंटी) १ भाग, सोंठ १ भाग, कूड़ेकीछाल १ भाग, बेलगिरी १ भाग, पाठा १ भाग, इन्द्रजौ कड़ुवा १ भाग, गिलोय १ भाग, चिरायता १ भाग, ।

वक्तव्य—पित्त प्रधान रोग होनेपर लघु पञ्चमूल अर्थात् शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेली, बड़ीकटेली, गोखरू पञ्चाङ्ग लेवें । तथा वात कफप्रधान रोग होनेपर बृहत् पञ्चमूल अर्थात् बेल छाल, गम्भारी छाल, पाढलछाल, अरनीकीछाल और श्योनाक छाल लेवें । सामान्यतः लघु पञ्चमूलका उपयोग अधिकतर होता है ।

विधि—उक्त १५ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर प्रातः, मध्याह्न. सायंकाल दिनमें ३ बार पिलावें ।

उपयोग—यह पञ्चमूल्यादि क्वाथ ज्वर और अतिसार दोनोंको दूर करता है । एवं सर्व प्रकारके अतिसार, ज्वर, वमन, उदरशूल, प्रबल कास और श्वास आदिको दूर करता है ।

७५. पटोलमूलादि योग

मूलं पटोलस्य तथा गवाक्ष्याः
पृथक् पलांशं त्रिफला त्रिवृच्च ।

स्यात्त्रायमाणा कटुरोहिणी च
भार्गद्धिका नागरपादयुक्ता ।।
पलं तथैषां सह चूर्णितानां
जले शृतं दोषहरं पिबेन्ना ।।
जीर्णं रसे धावमृगद्विजानां
पुराण शाल्योदन माददीत ।।
कुष्ठानि शोफं ग्रहणी प्रदोष
अर्शांसि कृच्छ्राणि हलीमकञ्च ।
षड् रात्रयोगेन निहन्ति चैव
हृद् बस्तिशूलं विषमज्वरं च ।।(०सं०)

पटोलमूल ४० ग्राम, हरड़ ४० ग्राम, आंवला ४० ग्राम, कुटकी २० ग्राम, इन्द्रायनमूल ४० ग्राम, बहेड़ा ४० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, त्रायमाणा २० ग्राम,

विधि—उक्त ८ औषधियोंको मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० से ४० ग्रामका क्वाथ कर रोज सुबह पिलावें। इससे सुबह २-३ दस्त होगा।

उपयोग—इस पटोलमूलादि योगके सेवनसे सब प्रकारके कुष्ठ, शोथ, ग्रहणीरोग, अर्श, हलीमक, हृदयमेंशूल बस्तिशूल और विषमज्वर आदि ६ रात्रिमें निवृत्त हो जाते हैं।

वक्तव्य—औषधि पाचन होकर उदर शुद्धि होनेपर भोजन करें। पुराने भात, दाल या खिचड़ी आदि हलका भोजन देवें।

७६. पटोलादि क्वाथ (विस्फोटक)

पटोल-त्रिफला-रिष्ट-गुडूची-मुस्त-चन्दनैः।
समूर्वा रोहिणी पाठा रजनी सदुरालभा ।।
कषायं पाययेदेतत्पित्तश्लेष्म ज्वरापहम् ।
कण्डूत्वग्दोषविस्फोटविषबीसर्पनाशनम् ।। (वृ० मा०)

परवलमूल, आंवला, लाल चन्दन, पाठा,
हरड़, गिलोय, मूर्वा, हल्दी,
बहेड़ा, नागरमोथा, कुटकी, धमासा,
नीमकी अन्तर छाल,

विधि—उक्त १३ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें २ बार पिलावें। प्रातःकाल और रात्रिको।

उपयोग—यह पटोलादि क्वाथ रक्त शोधक, विषघ्न और कृमि नाशक है। इसके उपयोगसे कफ-पित्तज, ज्वर, कण्डू, चर्म-रोग, विस्फोटक विष प्रकोप और विसर्प आदि रोग दूर होते हैं। बालकोंको विसर्प रोग होनेपर उनकोंको भी यह क्वाथ दिया जाता है।

७७. पथ्यादिक क्वाथ।

पथ्याक्ष-धात्री-रजनी-गुडूची-भूनिम्बनिम्बैः सगुडः कषायः।
भ्रू-शङ्ख-कर्णाक्षि-शिरोर्ध-शूलं निहन्ति नासानिहितः क्षणेन॥
(यो० र०)

हरड़, आंवला, गिलोय, नीमकी अन्तर छाल,
बहेड़ा, हल्दी, चिरायता, गुड़,

विधि—हरड़ आदि ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-से २० ग्रामका क्वाथ कर गुड़ मिलाकर पिलावें। प्रातःकाल और आवश्यकतापर रात्रिको भी।

उपयोग—वह पथ्यादि क्वाथ उदर शोधक और शिरदर्द शामक है। भ्रू भागमें पीड़ा, शंख भागमें पीड़ा, कर्णशूल व नेत्रशूल, आधाशीशो, मस्तिष्कशूल आदिको दूर करता है।

७८. पद्मकादि गण।

पद्मक-पुण्ड्री वृद्धि तु गर्द्ध्यः श्रृङ्ग्यमृता-दश जीवन-संज्ञाः।
स्तन्यकरा-घ्नन्तीरण-पित्तं प्रीणन-जीवन-बृंहण-वृष्या॥
(अ० हृ०)

पद्मक,	गिलोय,	मुद्गपर्णी.	मुलहठी,
पुण्डरिया,	जीवन्ती,	माषपर्णी,	महामेदा,
वृद्धि,	काकोली,	ऋषभक,	मेदा,
वंशलोचन,	क्षीर काकोली,	जीवक,	ऋद्धि,
काकड़ासिंगी,			

वक्तव्य—इन १७ औषधियोंमेंसे जितनी मिल जाय, उतनी का क्वाथ बनाकर उपयोगमें लेवें।

विधि—उक्त औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर, छान लें। शीतल होनेपर ६ ग्रामसे १ ग्राम तक शहद मिलाकर पिलावें। प्रातः और रात्रिको।

उपयोग—यह पद्मकादि गण स्तन्य-वर्द्धक, वातपित्त-नाशक, मानसिक शान्ति देने वाला, जीवनीयशक्तिवर्द्धक, मांस-पौष्टिक और वृष्य है। जिन माताओंको दूध कम उत्पन्न होता हो, उनको इस गणका सेवन करानेपर लाभ पहुँचता है।

७९. पद्मकादि क्वाथ (रक्तपित्त)

पद्मकं पद्मकिञ्जल्कं दूर्वा वास्तुकमुत्पलम्।
नागपुष्पञ्च लोध्रञ्च तेनैव विधिना पिबेत्॥ (च० सं०)

पद्माख (नया),	दूर्वा,	कमल पुष्प,	लोध,
कमल केसर,	बथुआ लाल	नाग केसर,	

वक्तव्य–बथुआके स्थानपर किसीने लोध और कई आचार्यों ने वासा लिया है।

विधि—उक्त ७ औषधियोंको मिला १० से २० ग्रामका क्वाथ करें। फिर छानकर १० ग्राम शक्कर मिलाकर पिलावें। इस तरह दिनमें २ या ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह क्वाथ शीतल, स्वेदल, मूत्रल और रक्तपित्त-शामक है। इसके सेवनसे ऊर्ध्व रक्तपित्त, अधो रक्तपित्त, दाह और व्याकुलता आदि सब दूर हो जाते हैं।

८०. पर्पटादि क्वाथ।

पर्पटो वासकस्तिक्ता कैरातो धन्वयासकः।
प्रियङ्गवश्च कृतः क्वाथ एषां शर्करया युतः॥
पिपासा-दाह-पित्तास्रयुतं पित्तज्वरं जयेत्॥(शा.सं.)

पित्त पापड़ा,	कुटकी,	धमासा,
वासा,	चिरायता,	प्रियंगु।

विधि—उक्त ६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ दिनमें २ बार देवें।
अनुपान—१० ग्राम शक्कर मिलाकर पीवें।

उपयोग—यह पर्पटादि क्वाथ पित्त प्रकोप और ज्वरहर है। इसके सेवनसे तृषा, दाह, रक्तपित्तयुक्त पित्तज्वर शमन होजाता है।

८१. पर्पटादि शीत कषाय।

पित्त पापड़ा, चिरायता, कमलके फूल, नीमकी अंतर छाल, पद्माख, रक्तचन्दन, वासा छाल, खरैंटीके बीज,

(वैद्य गोपालजी कुंवरजी ठक्कुर)

विधि–उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें उसमेंसे २० ग्राम चूर्ण रात्रि १४० ग्राम गरम जलमें भिगो

देवें। सुबह मसलकर छान लेवें। फिर उसे बोतलमें भर लेवें।

मात्रा—५०-५० ग्राम जल प्रत्येक २-२ घण्टेपर लेवें। इसी तरह १ दिनमें २० ग्राम चूर्णका कषाय पूरा करें।

उपयोग—यह पर्पटादि शीतकषाय गर्भाशयस्थ उष्णताको शांत करता है। मासिक धर्ममें रजःस्राव अधिक होता हो, फिर उसी हेतु से शारीरिक निर्बलता, पाण्डुता, दाह आदि रहते हों, तो वे सब इस कषायके सेवनसे दूर होते हैं तथा मासिक धर्म नियमित और योग्य परिमाणमें आने लगता है।

८२ पलाशपुष्प क्वाथ।

पलाशतरुपुष्पाणां क्वाथः शर्करया युतः
निषवितः प्रमेहाणि हन्ति नाना विधान्यपि॥ (यो. र०)

पलाश पुष्प गुण—भाव प्रकाशकारने रसमें मधुर, विपाक में कटु (चरपरा) अनुरस तिक्त (कड़वा), कसैला, वातकर तथा कफ, पित्त, रक्त और मूत्रकृच्छ्र विकारको दूर करनेवाला ग्राही और शीत वीर्य है। एवं तृषा, दाह, वातरक्त और कुष्ठका नाश करता है। नव्य मत अनुसार पुष्प मूत्रल और वेदना हर है।

वक्तव्य—महामहोपाध्याय शंकरदाजी पदेने १ ग्राम सोरा और १५ ग्राम शक्कर मिलानेका लिखा है।

उपयोग—पलाशके फूल १० ग्रामसे २० ग्राम तक रात्रिको भिगो देवें। सुबह क्वाथ कर, ६ ग्रामसे १० ग्राम शक्कर मिला कर सेवन करानेपर नाना प्रकारके (पित्त) प्रमेह दूर हो जाते हैं।

८३. पाठासप्तक क्वाथ।

पाठेन्द्रयव-भूनिम्ब मुस्ता-पर्पटकामृताः।
जयन्त्यामातिसारं ज्वरं च समहौषधाः॥ (वृ० मा०)

पाठा, चिरायता, पित्त पापड़ा, सोंठ,
इन्द्र जौ कडुवा, नागरमोथा, गिलोय,

विधि—उक्त ७ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—४० ग्रामका क्वाथ कर तीन विभाग करें। दिनमें ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह पाठासप्तक क्वाथ दीपन, पाचन, आमविष-नाशक, ज्वरघ्न और ग्राही हैं। इसके सेवनसे आमसह ज्वर और अतिसार दूर हो जाते हैं।

८४. पाषाणभेदादि क्वाथ।

पाषाणभेद-वरुण-गोक्षुर-कपोतवङ्कजः क्वाथः।
गिरिजतुगुडप्रगाढः कर्कटिका त्रपुस बीज युक्तः॥
पेयोऽश्मरीमवश्यं दुर्भेदामपि भिनत्ति योगवरः।
शिखरिणमिव शतकोटिः शतमन्यो र्हस्तनिर्मुक्तः॥ (वं०से०)

पाषाणभेद मूल, वरनाकी छाल, गोखरू, ब्राह्मी।

विधि—उक्त ४ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० से ४० ग्रामका क्वाथ करें। छानकर उसमें ५०० मि॰ ग्रा॰ शिलाजीत, तथा ककड़ी और खीराके बीजोंकी गिरीका कल्क ३ ग्राम तथा गुड़ १० ग्राम मिलाकर पिलावें। इस तरह क्वाथ दिनमें ३-४ बार देवें।

उपयोग—यह पाषाणभेदादि क्वाथ दुर्भेद्य अश्मरी और प्रबल मूत्रकृच्छ्रको भी दूर करता है।

८५. पिप्पल्यादि कषाय (कफज्वर)

पिप्पल्यादि कषायन्तु कफजे परिपाचनम्।
पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचं गजपिप्पली॥
नागरं चित्रकं चव्यं रेणुकैलाजमोदिकाः।
सर्षपो हिङ्गु भार्ङ्गी च पाठेन्द्रयवजीरकाः॥

महानिम्बश्च मूर्वा च विषातिक्ता विडङ्गकम् ।
पिप्पल्यादिगणो ह्येष कफमारुतनाशनः ॥
गुल्मशूल ज्वरहरो दीपनस्त्वामपाचनः ॥ (भा०प्र०)

पिप्पली,	रेणुका (निर्गुण्डी),	इन्द्र जौ,
पिप्पलीमूल,	छोटी इलायची,	जीरा,
कालीमिर्च,	अजमोद,	बकायनकी गिरी,
गजपिप्पली,	सरसों,	मूर्वा,
सोंठ,	हींग,	अतीस कडुवा,
चित्रकमूल,	भारंगी,	कुटकी,
चव्य,	पाठा,	बायविडङ्ग ।

विधि—उक्त औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें २ बार प्रातः रात्रिको देवें ।

उपयोग—पिप्पल्यादि कषाय कफ ज्वरमें आम, विष, मल आदि विकारको पाचन करनेवाला है। इसे सुश्रुताचार्यने पिप्पल्यादिगण संज्ञा दी है। यह कफ वातनाशक है। एवं गुल्म, शूल और ज्वरका नाश करता है। आमका पचन कराकर अग्निको प्रदीप्त करता है।

यह क्वाथ प्रसूताको ज्वर आनेपर सफलतापूर्वक दिया जाता है। इसके अतिरिक्त श्वास, कास, प्रतिश्यायमें भी हितावह माना गया है।

८६. पिप्पल्यादि गण क्वाथ (बृहत्)

पिप्पल्यादिगणक्वाथं पिवेद्वातकफज्वरी ।
नातः परं किञ्चिदस्मिञ्ज्वरे भेषजमुत्तमम् ॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं-चव्य-चित्रक-नागरम् ।
वचा-सातिविषाजाजी-पाठा-वत्सक-रेणुकम् ॥

किरात-तिक्तको मूर्वा सर्षपा मरिचानि ।
कट्फलं पुष्करं भार्ङ्गी विडङ्गं कर्कटीद्वयम् ।।
अर्कमूलं बृहत् सिंही श्रेयसी सदुरालभा ।
दीप्यक श्चाजमोदा च शुकनाशा सहिङ्गुका ।।
एतानि समभागानि गण एषोऽष्टविंशतिः ।
एषां क्वाथो निपीतः स्याद्वातश्लेष्म ज्वरापहः ।।
हन्ति वातं तथा शीतं प्रस्वेदमतिवेपथुम् ।
प्रलापं चातितन्द्रां च रोमहर्षारुची तथा ।।
महावाताऽपतन्त्रे च शून्यत्वे सर्वगात्रजे ।
पिप्पल्यादिमहा क्वाथो ज्वरे सर्वत्र पूजितः ।।(बृ०नि०र०)

पिप्पली, जीरा, कालीमिर्च, बड़ी कटेली,
पिप्पलीमूल, पाठा, कायफल, रास्ना,
चव्य, कूड़ेकी छाल, पुष्करमूल, धमासा,
चित्रकमूल, निर्गुण्डीके बीज, भारंगी, अजवायन,
सोंठ, चिरायता, बायबिडङ्ग, अजमोद,
बच, मूर्वा काकड़ासिंगी, अरलूकी छाल,
अतीस कड़वा, सरसों, आकके मूलकी छाल, हींग ।

विधि—उक्त २८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें २ या ३ बार पिलावें ।

उपयोग—यह पिप्पल्यादिगण क्वाथ वात, कफ ज्वरके लिए उपयोगी है । इस रोगपर इससे उत्तम औषधि नहीं है । ...यके सेवनसे वात कफ ज्वर तथा उसके लक्षण वात प्रकोप, ... स्वेद आना, अति कम्प होना, प्रलाप, अति तन्द्रा, ... दूर होते हैं । एवं महावात रोग, अप-...गादि सब निवृत्त होजाते हैं ।

८७. पीतमूल्यादि क्वाथ ।

पीतमूलीं शठीं श्यामां त्रिवृद्-धात्री-हरीतकी ।
अनन्तमूलं धन्याकं यष्टीं कट्वीं घनं तथा ॥
रजन्यौ द्वे त्रिजातश्च क्वाथयित्वा यथाविधि ।
यवक्षारयुतं क्वाथं पिवेदस्य प्रशान्तये ॥ (भै० र०)

रेवन्द चीनी	आंवला	मुलहठी	दारुहल्दी
कचूर	हरड़	कुटकी	दालचीनी
काली निसोत	अनंतमूलकाली	नागरमोथा	तेजपात
सफेद निसोत	धनिया	हल्दी	छोटी इलायची

विधि—उक्त १६ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—बालकोंके लिए २ से ४ ग्राम चूर्णका क्वाथ कर १०० मि.ग्रा. जवाखार मिलाकर प्रात:काल पिला देवें। अधिक दस्त न हो तो शामको भी दूसरी बार देवें ।

उपयोग—यह पीतमूल्यादि क्वाथ उत्तम विरेचन औषधि है। इससे पतले जल सदृश दस्त होते हैं। इसके सेवनसे जुलाब लगनेपर मस्तिष्कस्थ जल रक्तमें आकर्षित होकर शीर्षाम्बु रोग शान्त हो जाता है ।

८८. पुनर्नवाष्टक कषाय ।

पुनर्नवाऽभया-निम्ब-दार्वी तिक्ता-पटोलकैः ।
गुडूची-नगरयुतैः क्वाथो गोमूत्रसंयुतः ॥
पाण्डु-कासोदर-श्वास-शूल-सर्वाङ्ग शोथहा ॥ (शा०सं०)

लाल पुनर्नवाकी जड़, नीमकीअंतरछाल, कुटकी, गिलोय, हरड़ छोटी, दारुहल्दी, पटोलपत्र, सोंठ ।

वक्तव्य—भाव प्रकाशकारने नागरमोथा बढाया हे। एवं प्रक्षेप रूपसे गूगल मिलानेका भी विधान किया है ।

विधि—उक्त ८ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ १६ गुने जलमें करें। चतुर्थांश जल शेष रहनेपर गोमूत्र २५ ग्राम मिलावें। या गोमूत्र पहले पीकर ऊपर क्वाथ पी लेवें। सुबह और (अधिक दस्त न हो तो) उसी तरह शामको लेवें।

उपयोग—यह पुनर्नवाष्टक कषाय विरेचन लगाकर विकार को बाहर फेंकता है तथा पचन क्रियाको भी सुधारता है। इसके सेवनसे पाण्डु, सर्वाङ्ग शोथ, कास, उदर रोग, श्वास और शूल आदि रोग निवृत्त होते हैं।

८९. पुष्करादि क्वाथ।

क्वाथः कृतः पौष्कर-मातुलुङ्गपलाश-पूतीकशठीसुराह्वैः।
सनागराजाजि-वचा-ययानी सक्षार उष्णो लवणेन पेयः॥
(च० सं०)

पुष्करमूल,	कांटेदार करंजकी भुनी हुई गिरी,	जीरा,
बिजौरेकीजड़,	कचूर,	बच,
पलाश फूल,	देवदारु,	अजवायन।
(केसूला),	सोंठ,	

वक्तव्य—पूतीक (करंज) के स्थानपर भूतीक (चिरायता) पाठ भेद है। निघण्टु रत्नाकरके टीकाकारने भूतीकका अर्थ अजवायन किया है। योगरत्नाकरने पूतीक लिया है।

विधि—उक्त १० औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर यवक्षार और सैंधा-नमक २०० मि. ग्रा. मिलाकर पिलावें। इस तरह दिनमें ३ बार देवें। तीव्र व्यथा होनेपर २-२ घण्टेपर ३ बार देवें।

उपयोग—यह पुष्करादि क्वाथ हृदय रोगपर कहा है। अपचन होनेपर वायुके द्वारा हृदयको आघात होता हो या कफके कारण छाती जकड़ गई हो और हृदयमें वेदना होती हो, उक्त दोनों प्रकारमें यह क्वाथ लाभ पहुँचाता है।

यदि हृदय विकृतिके साथ तमक श्वासका दौरा भी हो तो उसे भी यह क्वाथ शान्त करता है। उस प्रकारमें वचाके साथ जटामांसी मिला लेना हितकर माना जाता है।

९०. प्रतिश्यायहर कषाय।

गाऊजबान ६ ग्राम,	खसखस ६ ग्राम,	उन्नाब ७ नग
गाऊजबां पुष्प ६ ग्राम,	तुरंजबीन १० ग्राम	सपिस्तां ७ भाग
मुलहठी ६ ग्राम,	सौंफ ६ ग्राम,	मिश्री २० ग्राम
वनफशा ६ ग्राम,	कालीमिर्च ६ ग्राम,	

विधि—मिश्रीके अतिरिक्त सबको कपड़छान कर १६ गुने जलमें मिलाकर क्वाथ करें। चतुर्थांश जल शेष रहनेपर उतार कर छान लेवें। (कपड़ेको दबाकर न छाने) उसके २ हिस्से करें। आधा सुबह पीवें। आधा रात्रिको। पीनेके समय १० ग्राम मिश्री मिला लेवें।

उपयोग—इस क्वाथके सेवनसे नया जुकाम, मन्द ज्वर, मलावरोध, हृदयका भारीपन और शिरदर्द आदि २-३ दिनमें दूर हो जाते हैं।

९१. प्रमेहान्तक कषाय।

दारु हल्दी,	बहेड़ा,	शतावरी
हल्दी,	आँवला,	धमासा,
देवदारु,	नागर मोथा,	लोध,
गिलोय,	रक्त चन्दन,	पाठा,
हरड़,	खस,	गोखरू,

विधि—उक्त १५ औषधियोंमें समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० ग्राम चूर्णको रात्रिको १६ गुने जलमें भिगो देवें। सुबह मन्दाग्निपर क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहनेपर छान लें। शीतल होनेपर ६ ग्राम से १० ग्राम शहद मिलाकर पिला देवें। पुनः नये चूर्णको १२ गुने जलमें भिगोवें। रात्रिको क्वाथकर शहद मिलाकर पीवें।

उपयोग—यह प्रमेहान्तक कषाय सब प्रकारके प्रमेहोंका नाश करता है। अन्य प्रमेह नाशक औषधियोंके साथ अनुपान रूपसे भी व्यवहृत होता हैं।

९२. बिल्वादि क्वाथ (शूल)।

बिल्वमूलमथैरण्डं चित्रकं विश्वभेषजम्।
हिंगु सैन्धव संयुक्तं सद्यःशूलहरं परम्॥ (वृ० मा०)

बेल छाल, एरण्डमूल, चित्रकमूल, सोंठ

विधि—उक्त ४ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ कर, १०० मि. ग्राम भुनी-हींग और १ ग्राम सैन्धव मिलाकर पिलावें। प्रातःकाल और रात्रिको।

उपयोग—यह बिल्वादि क्वाथ उदरशूलको तुरन्त दूर करता है। पार्श्वशूल, हृदयशूल, वृक्कशूल, और बस्तिशूल आदि में भी हितावह है।

९३. बिल्वादि क्वाथ (ज्वरातिसार)।

बिल्वबालक भूनिम्ब गुडूची-धान्यनागरैः।
कुटजाब्दामृताक्वाथो ज्वरातीसारशूलनुत्॥
(वृ० नि० र०)

बेलगिरी,	गिलोय,	कूड़ेकी छाल,
नेत्रवाला,	धनिया,	नागरमोथा,
चिरायता,	सोंठ,	गिलोय।

विधि—उक्त ६ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्राम क्वाथ दिनमें ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह बिल्वादि क्वाथ २-३ दिनके भीतर ही ज्वरातिसार और उदरशूलका नाश करता है।

९४. बृहत्यादि क्वाथ (मुखरोग)।

बृहती-भूमिकदम्बक-पञ्चांगुल-कण्टकारिकाक्वाथः।
गण्डूषस्तैलयुतः कृमिदन्तक वेदनोपशमः॥ (वं० से०)

बड़ी कटेलीके	गोरखमुण्डी ६ ग्राम,	छोटी कटेलीके
फल ६ ग्राम,	एरण्डमूल ६ ग्राम,	फल ६ ग्राम।

विधि—उक्त ४ द्रव्योंको मिला जौकूट करके क्वाथ करें। फिर १० ग्राम तिल तैल या दूसरा तैल मिलाकर कुल्ले करनेसे कृमि निकल जाते हैं। फिर कृमिदन्तजनित वेदना तुरन्त शमन हो जाती है।

९५. बृहद् वरुणादि क्वाथ।

वारुणं वल्कलं शुण्ठी बीज गोक्षुरसम्भवम्।
तालमूली कुलत्थश्च कुशादि पञ्चमूलकम्॥
शर्कराक्षारसंयुक्तं क्वाथयित्वा जलं पिवेत्।
अश्मरीमूत्रकृच्छ्घ्नं बस्तिमेहनशूलनुत्॥ (भै० र०)

वरनाकी छाल,	गोखरू बीज,	कुलथी,	कास,	ईख,
सोंठ,	मूसली,	कुश,	दर्भ,	शर।

विधि—उक्त १० द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ कर ६ ग्राम गुड़ और ½ ग्राम जवाखार मिलाकर पिलावें। दिनमें ३-४ बार।

उपयोग—यह बृहद् वरुणादि क्वाथ वृक्क स्थानकी अश्मरी और मूत्राशय स्थित अश्मरीको तोड़-तोड़कर फेंक देता है। एवं मूत्रकृच्छ्र, मूत्राशयशूल, वृक्कशूल आदिको भी दूर करता है।

मञ्जिष्ठा-मुस्त-कुटज-गुडूची-कुष्ठ-नागरैः।
भार्ङ्गी-क्षुद्रा-वचा-निम्ब-निशाद्वय-फलत्रिकैः॥
पटोल-कुटकी-मूर्वा-विडङ्गासन-चित्रकैः।
शतावरी-त्रायमाण-कृष्णे-द्रयवासकैः।
भृङ्गराज-महादारु पाठा-खदिर-चन्दनैः।
त्रिवृद् वरुण-कैरात-बाकुची-कृतमालकैः॥
शाखोटक-महानिम्ब-करञ्जातिविषाजलैः।
इन्द्रवारुणिकानन्ता-सारिवा-पर्पटैः समैः॥
एभिः कृतं पिवेत्क्वाथं कणागुग्गुलुसंयुतम्।
अष्टादशसु कुष्ठेषु वातरक्तार्दिते तथा।
उर्पदंशे श्लीपद च प्रसुप्तौ पक्षघातके।
मेदोदोषे नेत्ररोगे मञ्जिष्ठादि प्रशस्यते॥ (शा० सं०)

मजीठ,	हरड़,	इन्द्र जौ,	सहोडेकी छाल,
नागरमोथा,	बहेड़ा,	वासापत्र,	बकायन,
कूड़ेकी छाल,	आँवला,	भांगरा,	करंज छाल,
गिलोय,	पटोलपत्र,	देवदारु,	अतीस कड़वा,
कूठ,	कुटकी,	पाठा,	नेत्रवाला,
सोंठ,	मूर्वा.	खदिरछाल,	इन्द्रायनकी जड़,
भारङ्गी,	वायविडङ्ग,	रक्त चन्दन,	धमासा,
छोटी कटेली,	विजयसार,	निसोत,	काली अनन्तमूल,
बच,	चित्रकमूल,	वरवेकीछाल,	पित्त पापड़ा,
नीमका अन्तर छाल,		शतावरी,	चिरायता।

हल्दी, त्रायमाणा, बावची,
दारुहल्दी, पिप्पली, अमलतास गूदा ।

विधि—उक्त ४५ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ प्रक्षेप रूपसे पिप्पली चूर्ण ½ ग्राम, गूगल ½ ग्राम मिलाकर पिलावें । दिनमें २ बार सुबह और शामको ।

उपयोग—यह बृहद्मञ्जिष्ठादि क्वाथ उत्तम रक्तशोधक और उदर शोधक है। इसके सेवनसे १८ प्रकारके कुष्ठ. वातरक्त अर्दित, उपदंश, श्लीपद, सुप्तवात, पक्षाधात, मेदोवृद्धि, नेत्ररोग आदि दूर होते हैं ।

९७. भल्लातकादि क्वाथ ।

भल्लातकामृता-शुण्ठी-दारु-पथ्या पुनर्नवा ।
पञ्चमूली द्वयं गिश्रमूरुस्तम्भनिवर्हणम् ।। (बृ,नि. र.)

भिलावा शुद्ध १० ग्राम, देवदारु १० ग्राम, पुनर्नवाकी जड़
गिलोय १० ग्राम, हरड़ १ ग्राम, १ ग्राम
सोंठ १० ग्राम, दशमूल (मिश्रित) १० ग्राम

विधि—उक्त १६ औषधियोंको मिलाकर जो कूट चूर्ण करें। भिलावाका तैल हाथको न लगे इसलिए हाथोंपर तिल तैल या दूसरा तैल लगाकर कूटें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर, शीतल कर १० ग्राम शहद मिलाकर दिनमें ३ बार पीनेके लिए देवें ।

उपयोग—यह भल्लातकादि क्वाथ पुराने. अति बढ़े हुए और ऊरुस्तम्भको भी एक मासमें नष्ट कर देता है ।

वक्तव्य—भिलावेके सेवनकालमें गरम-गरम भोजन, अधिक मिर्च, दूध, सूर्यके तापमें फिरना, अग्नि सेवन आदि हो सके

उतना कम करें।

शरीरपर खुजली हो जाय, तो तैलकी मालिश करें। एवं नारियलकी गिरी, काजू, बादाम आदि तैली फलोंका सेवन करें।

९८. भाङ्ग्र्यादि क्वाथ (कास)।

भार्ङ्गी सनागरा सिंही कुलत्थं मूलकं तथा।
पिबेत् पिप्पलि चूर्णेन कासश्वासौ व्यपोहति ।। (यो.र.)

भारंगी, सोंठ, बड़ी कटेली, कुलथी, मूली।

विधि—उक्त द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर प्रक्षेप रूपसे पीपल का चूर्ण ४ रत्ती मिलाकर पिलावें। दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह भाङ्ग्र्यादि क्वाथ अति प्रबल कफ कासको भी थोड़े दिनमें ही दूर करती है।

९९. भाङ्ग्र्यादि कषाय (कफ ज्वर)

भार्ङ्गी-निम्ब-घनाभयामृतलता-भूनिम्ब-वासा-विषा-
त्रायन्ती-कटुका-वचा-त्रिकटुक श्योनाक-शाकद्रुमैः।
रास्ना-यास-पटोल-पाटलि-त्रिवृद् दार्वी-विशाला-निशा-
ब्राह्मी पुष्कर-सिंहिकाद्वय-शठी-धात्र्यक्ष-देव द्रुमैः ।।
क्वाथोऽयं किल सन्निपातनिवहान् द्वात्रिंशदङ्गक्षणा-
दद्दुर्धर्षान्निजतेजसा विजयते सर्पान् गरुत्मानिव।
किञ्च श्वास-बलास-कास-गुदरुज हृद्रोग-हिक्कामरुन्-
मन्यास्तम्भ गलामयार्दित मलाविष्टम्भवृद्धानपि ।।

भारंगी,	त्रायन्ती,	रास्ना,	ब्राह्मी,
कड़वेनीमकी अंतरछाल,	कुटकी.	धमासा,	पुष्करमूल,
नागरमोथा,	बच,	पटोल,	छोटी कटेली,
हरड़,	सोंठ,	पाढल,	बड़ी कटेली,

गिलोय,	कालीमिर्च,	निसोत,	कचूर,
चिरायता,	पीपल,	दारुहल्दी,	आँवला,
वासापत्र,	अरलु,	इन्द्रायन,	बहेड़ा,
अतिविष,	कूड़ेकी छाल,	हल्दी,	देवदारु ।

विधि—उक्त ३२ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ दिनमें ३ बार।

अनुपान—उरस्तोयमें तरल भर गया हो तो नौसादर ३० मि.ग्राम और यवक्षार ६ मि.ग्राम या श्वेत पर्पटी १ मि.ग्राम। कफ ज्वरमें शहद १० ग्राम और पिप्पली ½ ग्राम। निमोनिया और सन्निपातमें अभ्रक भस्म+शृंग भस्म दोनोंके साथ इस क्वाथको अनुपान रूपसे देवें।

उपयोग—इस भार्ङ्ग्यादि क्वाथ से कफप्रधान त्रिदोषज ज्वर (निमोनिया) तथा उसके लक्षण रूप श्वास, कास, अर्श, हृद्रोग, हिक्का, वातरोग, मन्यास्तम्भ, कण्ठावरोध गलेका-रोग, अर्दित, मलावरोध आदि सब दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त उरस्तोय (प्लुरसी) के कारणसे उत्पन्न पार्श्वशूल, कफकास, श्वास आदिको भी यह दूर करता है।

१००. मधुकादि हिम (शिरदर्द)।

मुलहठी,	गावजवां,	रेशाखतमी,	लिहसोडा,
बीहीदाना,	गुलबनफ्शा,	मुनक्का	(र०यो०सा०)

विधि—उक्त ७ औषधियोंको १०-१० ग्राम मिला जौ कूट करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामको १० ग्राम जलमें कांचके बर्तनमें रात्रिको भिगो देवें। सुबह मसल छान १० ग्राम मिश्री मिला कर पिलावें। इस तरह सुबह १० ग्राम भिगोकर शामको पिलावें।

उपयोग—यह मधुकादि हिम पित्त प्रकोपज अर्धावभेदक,

शिरदर्द, लू लगनेसे उत्पन्न मंद ज्वर, जुकाम, मस्तिष्कमें भारीपन आदि विकारको दूर करता है।

१०१. मधुकादि शीतकषाय (वात पित्त ज्वर)।

मधुकं सारिवे द्राक्षा मधूकं चन्दनोत्पलम्।
काश्मरी पद्मकं लोध्रं त्रिफलां पद्मकेशरम्॥
परुषकं मृणालं च न्यसेदुत्तमवारिणि।
मधुलाजसितायुक्तं तत्पीतमुषितं निशि॥
वातपित्तज्वरं दाहतृष्णामूर्च्छाविमिभ्रमान्।
शमयेद्रक्तपित्तं च जीमूतानिव मारुतः॥ (च० द०)

मुलहठी, महुआ, पद्माख, आंवला,
सफेद सारिवा, लाल चन्दन, लोध, कमल केशर,
काली सारिवा, नीलोफर, हरड़, फालशा,
मुनक्का, गम्भारीछाल, बहेड़ा, कमलनाल।

विधि—उक्त १६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० से ४० ग्रामको रात्रिको ६ गुने गरम जलमें मिट्टी या कांचके बरतनमें भिगो देवें। सुबह मसल, छान, मिश्री, शहद और खीलोंका सत्तू मिलाकर पिला देवें।

उपयोग—यह मधुकादि शीत कषाय निराम तथा उसके लक्षण वात पित्त ज्वर, दाह तृषा, मूर्च्छा, वमन और भ्रम आदि तथा रक्त पित्तको दूर करता है।

१०२. मधुकादि कषाय (पित्तज्वर)

मधुकारग्वधद्राक्षा तिक्ताया सफलत्रिकैः।
सपटोलेर्जलं भेदि ज्वरं हन्ति त्रिदोषजम्॥ (वं०से०)

मुलहठी, मुनक्का, हरड़, आंवला,
अमलतासकागूदा, कुटकी, बहेड़ा, पटोलपत्र।

विधि—उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथकर रात्रिको या सुबह पिला देवें। आवश्यकतापर प्रातः रात्रिको दो समय देवें।

उपयोग—यह मधुकादि कषाय आमयुक्त पित्तज्वरमें शोधनार्थ दिया जाता है। इसके सेवनसे ३-४ घण्टेमें २-३ दस्त साफ आ जाते हैं। फिर ज्वर शमन हो जाता है। नूतन ज्वरके समान मलावरोध होनेपर जीर्ण ज्वरमें भी दिया जाता है।

१०३. मधुरज्वरान्तक क्वाथ (मधुरा)

चन्दनोशीरधान्यं च वालकं पर्पटं तथा।
मुस्ता शुण्ठी समं युक्तं मन्थरज्वरनाशनम्॥ (यो०र०)

रक्त चन्दन,	धनिया,	पित्तपापड़ा,	सोंठ।
खस,	नेत्रवाला,	नागरमोथा	

विधि—उक्त ७ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह मधुरज्वरान्तक क्वाथ मधुराको सब लक्षणों सहित दूर करता है।

१०४. मरिचादि कषाय (कफ ज्वर)

मरिचं पिप्पलीमूलं नागरं कारवी कणा।
चित्रकं कट्फलं कुष्ठं ससुगन्धि वचा शिवाः॥
कण्टकारीजटा शृंगी यमानी पिचुमर्दकः।
एषां क्वाथो हरत्येष ज्वरं सोपद्रवं कफात्॥ (भा०प्र०)

काली मिर्च,	पिप्पली,	नागरमोथा,	जटामाँसी,
पिप्पलीमूल,	चित्रकमूल,	बचा,	काकड़ासिंगी,
सोंठ,	कायफल,	हरड़,	अजवायन,
काल जीरा,	कूठ,	छोटी कटेली,	नीमकीअन्तरछाल।

विधि—सबको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें ३ बार देवें।

उपयोग—इस मरिचादि कषायके सेवनसे कफ प्रधान ज्वर उपद्रव सह निवृत्त होजाता है।

१०५. महारास्नादि क्वाथ

रास्ना द्विगुणभागा स्यादेकभागा स्ततः परे।
धन्वयास-बलैरण्ड-देवदारु-शठी-वचाः ॥
वासको नागरं पथ्या चव्या मुस्ता पुनर्नवा।
गुडूची वृद्धदारुश्च शतपुष्पा च गोक्षुरः॥
अश्वगन्धा प्रतिविषा कृतमालः शतावरी।
कृष्णा सहचरश्चैव धान्यकं बृहतीद्वयम्॥
एभिः कृतं पिबेत्क्वाथं शुण्ठी चूर्णेन संयुतम्।
कृष्णाचूर्णेन वा योगर जगुग्गुलुनाऽथवा॥
अजमोदादिना वापि तैलेनैरण्डजेन वा।
सर्वाङ्गकम्पे कुब्जत्वे पक्षाघातेऽवबाहुके॥
गृध्रस्यामामवातेन श्लीपदे चापतानके।
अन्त्रवृद्धौ तथाऽध्माने जङ्घाजानुगतेऽर्दिते॥
शुक्रामये मेढ्रोगे वन्ध्यायोन्यामयेषु च।
महारास्नादिराख्यातो ब्रह्मणा गर्भकारणम्॥ शा.सं.

रास्ना	५०० ग्राम,	गिलोय	१० ग्राम,
धमासा	१० ग्राम,	वृद्धदारु	१० ग्राम,
खरैंटीमूल	१० ग्राम,	सौंफ	१० ग्राम,
एरण्डमूल	१० ग्राम,	गोखरू	१० ग्राम,
देवदारु	१० ग्राम,	असगन्ध	१० ग्राम,
कचूर	१० ग्राम,	अतीस कडुवा	१० ग्राम,
बच	१० ग्राम,	अमलतासका गूदा	१० ग्राम,
वासापत्र	१० ग्राम,	शतावरी	१० ग्राम,

सौंठ	१० ग्राम,	पिप्पली	१० ग्राम,
हरड़	१० ग्राम,	पियाबांसा	१० ग्राम,
चव्य	१० ग्राम,	धनिया	१० ग्राम,
नागरमोथा	१० ग्राम,	छोटी कटेली	१० ग्राम,
पुनर्नवा जड़	१० ग्राम,	बड़ी कटेली	१० ग्राम,

विधि—उक्त २६ औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके दिनमें २ या ३ बार देवें।

अनुपान—प्रक्षेप पिप्पलका चूर्ण ४० मि. ग्राम या एरण्ड तैल २५ ग्राम मिलाकर देवें। अथवा योगराज गूगल अजमोदादि चूर्ण के साथ इसे अनुपान रूपसे देवें।

उपयोग—यह महारास्नादि क्वाथ सर्वाङ्ग कम्प, कुब्जवात, पक्षाघात, अपबाहुक, गृध्रसी, आमवात, श्लीपद, अपतानक, अन्त्रवृद्धि, आध्मान, जङ्घा और जानुगत वात, अर्दित, शुक्रविकार, मेढ्रोग, वन्ध्यादोष, योनिरोग आदि सबको दूर करता है। वन्ध्या स्त्रियोंको गर्भ धारण भी कराता है। तीव्रावस्था और जीर्णावस्था दोनों प्रकारोंमें यह क्वाथ हितावह है। इस क्वाथके सेवनसे वातनाडियोंकी विकृति दूर होकर वे सबल हो जाती हैं

१०६. महौषधादि क्वाथ

महौषधामृता क्षुद्रा पौष्करं ग्रन्थिकोद्भवम्।
पिबेत्कणायुतं क्वाथं मूर्च्छायां च मदेषु च ॥ (ग० नि०)

सोंठ, गिलोय, कटेलीमूल पुष्करमूल, पीपलामूल।

विधि—उक्त ५ औषधियोंको १०-१० ग्राम मिला जौकूट चूर्ण कर, १६ गुने जलमें क्वाथ करें। चौथाई जल शेष रहने पर उतार कर छान लेवें। उसका ३ विभाग कर २-२ घण्टेपर पिलावें या दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह महौषधादि क्वाथ मूर्च्छा और मदको दूर कर मस्तिष्कको व्यवस्थित बनाता है।

१०७. मांस्यादि क्वाथ (चर्मरोग)

मांसी चन्दन-शम्पाक-करञ्जारिष्ट-सर्षपम्।
यष्टी-कुटज-दार्वीभिर्हन्ति कण्डूमयं गणः॥ (बृ०नि०र०)

जटामांसी, करजकीछाल, मुलहठी,
लाल चन्दन, नीमकी अन्तर छाल, कूडेकीछाल,
सरसों, अमलतासका गूदा, दारुहल्दी।

विधि—उक्त ९ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें २ या ३ बार पिलावें। मलावरोध अधिक रहता हो, तो सनाय पत्ती १५-२० ग्राम रात्रिको क्वाथ लेनेके समय दे देवें।

उपयोग—यह मांस्यादि क्वाथ कण्डू, पामा आदि चर्मरोगोंको दूर करता है।

१०८. मांस्यादि क्वाथ।

जटामांसी ४० ग्राम, खुरासानी अजवायन ६ ग्राम
असगन्ध १० ग्राम, (सि० यो०)

वक्तव्य—इस क्वाथको वैद्यक चिकित्सासारमें हिस्टीरिया नाशक क्वाथ संज्ञा दी है।

विधि—उक्त ३ औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१५ ग्राम से २० ग्राम दवाको जलमें मंदाग्निपर ढक्कन ढककर उबालें। आधा जल शेष रहनेपर उतार छानकर पिलावें। इस तरह दिनमें २ बार प्रातः रात्रिको देवें।

वक्तव्य—यह क्वाथ स्वतन्त्र देवें या अन्य वातशामक प्रबल औषधि-योगेन्द्र रस, वातकुलान्तक रस, बृहद्वातचिन्तामणि, हिस्टीरियानाशक वटी, बृहद् ब्राह्मी वटी या दूसरी औषधिके

साथ अनुपान रूपसे देवें।

उपयोग—यह मांस्यादि क्वाथ वातनाड़ियोंकी उग्रताको सत्वर शान्त बनाता है। इसके सेवनसे अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) प्रसूता और बालकोंका आक्षेप, अपतानक और धनुर्वात आदि विकार दूर होते हैं।

१०९. मुञ्जिस।

बनफसाफूल	३ ग्राम,	खतमीबीज	५ ग्राम,	बादीयान(सौंफ)	५ ग्रा
गावजवांपान	३ ,,	कासनीबीज	५ ,,	मुलहठी	५ ग्राम,
गावजवांफूल	३ ,,	सौंफकीजड़	५ ,,	उन्नाब	६ नग,
खुब्बाजी	३ ,,	कासनी जड़	५ ,,	मुनक्का	६ नग,
सनायपत्ती	३ ,,	मकोय	५ ,,	मिश्री	२० ग्राम,

(चि० चं०)

विधि—मिश्रीके अतिरिक्त १४ औषधियोंको जो कूटकर रात्रिको ४०० ग्राम जलमें भिगो देवें। सुबह चूल्हेपर चढ़ा २०० ग्राम जल शेष रहनेपर उतारकर छान लेवें। फिर २० ग्राम मिश्री मिलाकर पिला देवें। इस तरह ५ दिन तक पिलावें फिर छठे दिन जुलाब देवें।

वक्तव्य—क्वाथ छाननेके समय कपड़ेमें रहे हुए द्रव्योंको दबाकर न निचोड़ें। अन्यथा चिपचिपा द्रव अधिक आजानेसे क्वाथ बेस्वादु बन जाता है।

उपयोग—इस मुञ्जिसका उपयोग करनेपर आंतोंमें जमा हुआ मल पककर फूल जाता है। फिर वह निम्न जुलाबकी औषधि देने पर सरलतासे निकल जाता है।

जुलाबकी औषधि

गुलाबके फूल	५ ग्राम,	ताजी गिलोय	५ ग्राम,	असवन्द	३ ग्रा.
बनफशाफूल	५ ,,	सनायपत्ती	६ ,,	अञ्जीर	८ नग
सफेद निसोत	५ ,,	इन्द्रायणजड़	६ ,,	मुनक्का	१३ नग

बादीयान(सोंफ	५ ग्राम,	इन्द्रायणबीज	३ ग्राम
गुलकन्द	२० ग्रा.		
मकोय	५ ,,	पीली हरड़	६ ,,
जूफा	५ ,,	गाजीफून	६ ,,

विधि—असबन्द तककी १३ औषधियोंको कूटकर जौ कूट चूर्ण करें, अञ्जीरके टुकड़े करें और मुनक्काको कुचल देवें। फिर सबको मिला रात्रिको ४०० ग्राम जलमें भिगो देवें। सुबह क्वाथकर १५० ग्राम जल शेष रहनेपर उतारकर छान लें। फिर २० ग्राम गुलकन्द मिलाकर पिला देवें। १ घण्टे बाद १०० ग्राम सौंफका अर्क या निवाया जल पिलावें।

उपयोग—इस जुलाबका सेवन करनेपर २-३ घण्टे बाद ५-६ दस्त साफ आकर पेट स्वच्छ हो जाता है।

सूचना—जुलाब लेनेके बाद सोना नहीं चाहिए। एवं हाथ पैर निवाये जलसे धोना चाहिये।

११० मुस्तादि क्वाथ (क्रिमी)

मुस्ताखुपर्णी-फल-शिग्रु-दारु-
क्वाथः सकृष्णा कृमिशत्रु कल्कः।
मार्गद्वयेनापि चिरप्रवृत्तान्
कृमीन्निहन्ति कृमिजांश्च रोगान्॥ (वृ० मा०)

नागरमोथा, हरड़, आंवला, देवदारु, मूषाकानी, बहेड़ा, सुहिंजनेके बीज।

विधि—उक्त ७ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्राम का क्वाथ करके प्रातःकाल पीवें। इसी तरह रात्रिको फिर ताजा क्वाथ करके पीवें।

अनुपान—पीपलका चूर्ण २०० मि. ग्राम और बायविडङ्ग २ ग्राम।

उपयोग—यह मुस्तादि क्वाथ आमाशय और अन्त्रस्थ छोटे

बड़े, सब उदर कृमियोंका नाश करता है एवं उत्पत्तिको बन्द कराता है।

१११. मुस्तादि क्वाथ (बालातिसार)

मुस्ता सातिविषा मूर्वा वचा च कुटजः समाः।
एषां कषायः सक्षौद्रः पित्तश्लेष्मातिसारनुत्॥ (भा० प्र०)

नागरमोथा, अतीस कड़वा, मूर्वा, बच, इन्द्र जौ।

विधि—उक्त ५ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० ग्रामका क्वाथ कर, फिर ४ भागकर दिनमें ४ बार शहद मिलाकर पिलावें।

उपयोग—यह मुस्तादि क्वाथ बालकोंके पित्त और कफ प्रधान अतिसारको शीघ्र दूर करता है।

११२ मुस्तादि क्वाथ (मेह)।

मुस्ता फलत्रिकनिशा सुरदारु मूर्वा
ऐन्द्री च लोध्रसलिलेन कृतः कषायः।
पाने हितः सकलमेहभवे गदे च
मूत्रग्रहेषु सकलेषु नियोजनीयः॥ (हा० सं०)

नागरमोथा,	आंवला,	मूर्वा,
हरड़,	हल्दी,	इन्द्रायणकी जड़,
बहेड़ा,	देवदारु,	लोध।

विधि—उक्त ९ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें २ बार प्रातः रात्रिको ६ माशे शहद मिलाकर पीवें।

उपयोग—इस मुस्तादि क्वाथके सेवनसे सब प्रकारके प्रमेह और मूत्राघात नष्ट हो जाते हैं।

११३. मूत्रल कषाय (सर्वाङ्ग शोथ)

लाल पुनर्नवामूल, खुरासानी अजवायन, धनिया, गिलोय, ईखका मूल, रक्त चन्दन, सागवानकेफल, पाषाणभेद दर्भमूल, काली सारिवा, मकोय, काकनुज, कांसमूल, देवदारु, कासनीकेबीज कमलपुष्प, छोटी गोखरू, सौंफ, खीराके बीजकी गिरी, (सि०यो०)

विधि—उक्त १६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्राम औषधियोंको ८ गुने जलमें उबालें। चतुर्थांश शेष रहनेपर उतारकर छान लेवें। फिर शिलाजीत ½ से १ ग्राम या श्वेत पर्पटी ½ से १ ग्राम मिलाकर पिलावें। आवश्यकता अनुसार २-२ घण्टेपर फिर १ या २ बार और पिलावें।

उपयोग—यह मूत्रल कषाय वृक्ककी शिथिलतासे आये हुए सर्वाङ्ग शोथपर अच्छा काम देता है। इसके सेवनसे मूत्र विरेचन होकर रक्तस्थ जल तथा मूत्र संस्थानगत विकारको निकाल देता है।

यदि वृक्कमें अश्मरी, शर्करा या सिकता हो, तो क्वाथमें जटामांसी २ भाग और खुरासानी अजवायन १ भाग अधिक मिला लेवें। एवं पीनेके समय हजरूल यहूदकी भस्म ½ से १ ग्राम, शहदके साथ देवें। फिर शिलाजीत या श्वेत पर्पटी न देवें।

११४. मूत्रविरजनीय कषाय।

पद्मोत्पल-नलिन-कुमुद सौगन्धिक-पुण्डरीक-शतपत्र-मधुक-प्रियङ्गु-धातकीपुष्पाणीति दशेमानि मूत्र-विरजनीयानि भवन्ति ।। (च० सं०)

श्वेताभ कमल, सौगन्धिक कमल, मुलहठी,

नील कमल,	पुण्डरीक (श्वेतकमल),	प्रियङ्गु,
रक्त कमल,	शतपत्र कमल,	धायके फूल,
कुमुद (छोटे कमल),		

विधि—उक्त १० औषधियोंमें से जो मिल जाय, उनको कुचल ४ गुने उबलते जलमें डालकर ढक देवें। आध घण्टे बाद प्रात:कालमें छानकर पिला देवें। आवश्यकता अनुसार दिनमें ३ बार भी सेवन करा सकते हैं।

उपयोग—यह आत्रेय महर्षि कथित महा कषाय है। इस कषायकी औषधियाँ वृक्क और मूत्राशयको धोकर साफ करती है और मूत्रका वर्ण स्वाभाविक लाल है। इस मूत्र बिरजनीय कषायके सेवनसे मूत्र विकाररहित स्वच्छ हो जाता है।

११५. मूत्र विरेचनीय कषाय।

वृक्षादनी श्वदंष्ट्रा वसुक-वशिर पाषाणभेद-दर्भ-कुश-
काश-गुन्द्रे त्कटमूलानीति दशेमानि
मूत्रविरेचनीयानि भवन्ति ।। (च० सं०)

बांदा,	पाषाणभेद,	काश,
गोखरू,	दर्भ,	गुंद्रा (शर)
वसुक (अगस्त्यपुष्प),	कुश,	इत्कट (वनजयन्ती)
वशिर (अपामार्गमूल),		

वक्तव्य—वसुकका अर्थ टीकाकारने बक पुष्प और वशिर का सूर्यावर्त कहा है।

विधि—उक्त १० औषधियाँ मूत्र विरेचनीय महा कषाय रूपसे महर्षि आत्रेयने दर्शायी है। उनमेंसे जो मिले उनका फाण्ट या क्वाथ करके सुबह १-२ या ३ बार २-२ घंटेपर पिलावें।

उपयोग—इस मूत्र विरेचनीय कषायका सेवन करनेपर मूत्र विरेचन होकर रक्तगत तथा मूत्र संस्थानगत रेत जैसे कण,

आम विष, मल और कीटाणु सब बाहर निकल जाते हैं।

११६. मूत्रशोधक कषाय (पूयमेह)।

सोनागेरू, मेंहदीकेपान, रसौंत, सफेद सुरमा।

विधि—उक्त ४ द्रव्योंको २०-२० ग्राम लेकर जौ कूट चूर्ण करें। फिर १॥ किलो जलमें उबालकर क्वाथ करें। आधा जल शेष रहनेपर उतार लेवें। शीतल होनेपर छानकर बोतलमें भर लेवें।

उपयोग—इस मूत्र शोधक कषायका उपयोग मूत्रेन्द्रियमें पिचकारी लगाकर धोनेके लिए होता है। पेशाबमें पूय आनेपर सुबह-शाम दिनमें २ बार ३-३ पिचकारी लगाते रहनेसे एक सप्ताहमें घाव भर जाते हैं और पीप निकलना बन्द हो जाता है।

वक्तव्य—पिचकारी लगानेके पहले पेशाब कर लेवें। फिर उकडू बैठकर मूत्रेन्द्रियमें पिचकारी द्वारा क्वाथ डालें। ३-४ मिनट तक उसके मुँहपर अंगुली रखें। फिर क्वाथ निकालकर दूसरी बार पिचकारी देवें। इस तरह ३ बार पिचकारी देवें।

नोट—पिचकारी लगानेके बाद कमसे कम आध घण्टे तक पेशाव नहीं करना चाहिए।

११७. मूत्र संग्रहणीय कषाय।

जम्ब्वाम्र-प्लक्षवट कपीतनोदुम्बराश्वत्थ-भल्लातकाश्मन्तक-सोमवल्का इति दशेमानि मूत्र संग्रहणीयानि भवन्ति॥

(च० सं०)

जामुनकीछाल, अम्बाष्ठाछाल, अश्मन्तक,
आमकीछाल, गूलरछाल, गु-आशोच, मराठी-(आप्टा)
पिलखनछाल, पीपलछाल, सोमवल्क (खैर) छाल,
बड़की जटा, भिलावाफल,

विधि—ये १० औषधियां महर्षि आत्रेयने मूत्र संग्रहणीय महाकषायरूपसे दर्शायी हैं।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ करके प्रातः और सायं-काल पिलावें।

वक्तव्य—आवश्यकता अनुसार वङ्ग भस्म, जसद भस्म, अफीम, तगर या अन्य औषधिके साथ मूत्र संग्रहणीय कषाय को अनुपान रूपसे भी दे सकते हैं।

उपयोग—यह मूत्र संग्रहणीय कषाय मूत्रोत्पत्ति कम कराता है। इसके सेवनसे बार बार शंका होती रहती हो और मूत्र त्याग अधिक मात्रामें होता रहता हो तो उसपर अंकुश लग जाता है।

११८. रजःप्रवर्तक क्वाथ।

चौलाईकी जड	६ ग्राम,	कपासकी जड	१५ ग्राम,
गुलाबके फूल,	६ ग्राम,	पुराना गुड ३ वर्षका-	२० ग्राम,
सोना गेरू	६ ग्राम,		

विधि—उपर्युक्त ४ औषधियोंको रात्रिको ७०० ग्राम जलमें भिगोदें। सुबह क्वाथ चतुर्थांश जल शेष रहनेपर उतार २० ग्राम गुड़ मिला मसल कर छान लेवें।

उपयोग—इस रजः प्रवर्तक क्वाथका सेवन ३ से ७ दिन तक सुबह करानेपर मासिक धर्म साफ खुलकर आ जाता है। रुका हुआ विकार दूर होकर गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

११९. रक्तशोधक क्वाथ।

अनन्त मूल काली	५० ग्राम,	सनाय	५० ग्राम,
उशबा	५० ग्राम,	असगन्ध	५० ग्राम,
मुलहठी	५० ग्राम,	सौंफ	२५ ग्राम,
सफेद मूपली	५० ग्राम,	पीपल	२५ ग्राम,
गोरख मुण्डी	५० ग्राम,	इलायची	२५ गाम,
रक्तचन्दन	५० ग्राम,	गुलाबके फूल	२५ ग्राम,

विधि—उक्त १२ औषधियोंको मिला जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर दिनमें २ बार प्रातः रात्रिको पिलावें।

उपयोग—यह रक्तशोधक क्वाथ शीतवीर्य, रसायन, रक्तशोधक, मूत्रल और पौष्टिक है। इसके सेवनसे दूषित विष सेवन, मूषकदंश, उपदंश, सुजाक और अन्य प्रकारके रक्तविकार दूर होते हैं, वातरक्त और कुष्ठमें भी यह क्वाथ हितावह है।

१२०. रास्नादशमूलादि क्वाथ (आमवात)।

रास्नाविश्वविडङ्गानि रुबुकं त्रिफला तथा।
दशमूलं पृथक् श्यामा क्वाथो वातामयापहः॥
अर्द्धावभेदके चाढ्ये अर्दिते वातखञ्जके।
नेत्ररोगे शिरःशूले ज्वरापस्मारयोस्तथा॥
मनोभ्रंशे च विविधे क्वथितश्च सुखप्रदम्॥ (दं०से०)

रास्ना	१० ग्राम,	बहेड़ा	१० ग्राम,
सोंठ	१० ग्राम,	आंवला	१० ग्राम,
वायविडङ्ग	१० ग्राम,	दशमूल(सबमिलाकर)	१० ग्राम,
एरण्ड मूल	१० ग्राम,	निसोत काली	१० ग्राम।
हरड़	१० ग्राम,		

विधि—उक्त १८ औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० ग्रामका ८ गुने जलमें क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहनेपर छानकर पिला देवें। दिनमें २ बार देवें।

उपयोग—यह रास्ना दशमूल क्वाथ आमप्रधान वातरोग को दूर करता है। आमवात, अर्धावभेदक, आढ्यवात (ऊरुस्तम्भ), अर्दित, खञ्जवात, नेत्रशूल, शिरःशूल, ज्वर, अपस्मार और वात प्रधान मनोभ्रंश आदिपर हितावह है।

१२१. रास्नापञ्चक कषाय (आमवात)

रास्नामृता महादारु नागरैरण्डजैः शृतम् ।
सप्तधातुगते वाते सामे सर्वाङ्गजे पिबेत् ।। (शा० सं०)

रास्ना, गिलोय, देवदारु, सोंठ, एरण्ड मूल ।

विधि—उक्त ५ द्रव्योंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२०-२० ग्रामको क्वाथ कर १०-२० ग्राम एरण्ड तैल मिला कर पिलावें । दिनमें २ बार प्रातः सायं ।

उपयोग—यह रास्ना पञ्चक क्वाथ अनेक प्रकारके आम युक्त नूतन वातको दूर करता है । जो विकार रस, रक्त आदि सातों धातुओंमें फैल गया हो उसे भी यह दूर करता है ।

१२२. रास्ना सप्तक कषाय (आमवात)

रास्ना गोक्षुरकैरण्ड देवदारु पुनर्नवा ।
गुडूच्यारग्वधश्चैव क्वाथमेषां विपाचयेत् ।।
शुण्ठी चूर्णेन संयुक्तं पिबेज्जङ्घाकटी ग्रहे ।
पार्श्व पृष्ठोरु पीडायामामवाते सुदुस्तरे ।। (शा. सं.)

रास्ना, एरण्ड मूल, पुनर्नवा, अमलतास गूदा,
गोखरू, देवदारु, गिलोय,

विधि—उक्त ७ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ कर प्रक्षेप रूपसे सोंठका चूर्ण आधसे १ ग्राम मिलाकर पिलावें । दिनमें २ बार ।

उपयोग—यह रास्नासप्तक कषाय आमवातके हेतुसे जंघा, कमर, पीठ और ऊरु आदि भागमें प्रबल वेदना होती हो, उस वेदना सह आमवातको दूर करता है ।

१२३. बचादि कषाय।

वचा सातिविषा कुष्ठं चित्रको देवदारु च।
पाठा तेजोवती मुस्ता स्वर्णक्षीरी निदग्धिका॥
वत्सको नक्त मालश्च मूर्वा च कटुरोहिणी।
तर्कारी प्रग्रहश्चैव पीलूनि निचुलानि च॥
असनः सप्तपर्णश्च त्रिफला मरिचानि च।
एतानि समभागानि कषायमुपसाधयेत्॥
मधुयुक्तं कषायं तं प्रयोगेण पिबेन्नरः।
ऊरुस्तम्भं नुदत्येष वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा॥
एतान्येव तु चूर्णानि माक्षिकेण तु कल्पयेत्।
अनेनैव कषायेण भोजयेत्सिद्धमोदनम्॥ (ग० नि०)

बच,	माल कांगनी,	मूर्वा,	विजयसार
अतीस कड़वा,	नागरमोथा,	कुटकी,	सतौना,
कूठ,	सत्यानाशीमूल,	अरनी,	हरड़,
चित्रकमूल,	कटेरी छोटी,	अमलतासकागूदा,	बहेड़ा,
देवदारु,	कूड़ेका छाल,	पीलू,	आँवला,
पाठा,	करंज छाल,	समुद्र फल,	काली मिर्च।

विधि—उक्त २४ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करें। फिर ठण्डाकर १० ग्राम शहद मिलाकर पिलावें। दिनमें २ बार प्रातः सायं।

उपयोग—यह वचादि क्वाथ ऊरुस्तम्भको नष्ट करता है। यदि उक्त औषधियोंका चूर्ण कर ४ से ६ ग्राम तक शहदके साथ लेकर दिनमें २ बार सेवन करे और उक्त क्वाथका उपयोग भोजन बनानेके पदार्थ (चावल आदि) के साथ पकानेके समय मिला लेवें तो भी लाभ पहुँचता है।

१२४. वचाहरिद्रादि कषाय ।

वचामुस्तभद्रदारुनागरातिविषागणः ।
हरिद्राद्वययष्ट्याह्वसिंहीशक्रयवैः कृतः ॥
इमौ वचाहरिद्रादिगणौ स्तन्यविशोधनौ ।
आमातिसारशमनौ कफमेदोविशोषणौ ॥ (भै० र०)

वचादि गण—	हरिद्रादि गण—
वच,	हल्दी,
नागरमोथा,	दारु हल्दी,
देवदारु,	मुलहठी,
सोंठ,	पृश्निपर्णी,
अतीस कड़वा,	इन्द्रजौ ।

विधि—उक्त वचादि गण और हरिद्रादि गणकी १० औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकुट चूर्ण करें ।

मात्रा—३०-३० ग्रामका क्वाथकर, छानकर बालकको पिला देवें । स्तन्य शोधनार्थ माताको २० ग्रामका क्वाथ दिनमें २ बार देवें । आमातिसारके लिये दिनमें ३ बार देवें ।

उपयोग—यह वचाहरिद्रादि क्वाथ बालक और माता के लिए उपयोगी है । इसके सेवनसे स्तन्यका शोधन होता है । आमातिसार दूर होता है तथा कफ और मेदका शोषण होता है ।

१२५. वज्रकाञ्जिक

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यं शुण्ठी यमानिका ।
जीरके द्वे हरिद्रे द्वे विडं सौवर्चलं तथा ॥
एतैरेवौषधैः पिष्टैरारनालं विपाचयेत् ।
एतदामहरं वृष्यं कफघ्नं वह्निदीपनम् ॥

काञ्जिकं वज्रकं नाम स्त्रीणामग्निविवर्द्धनम् ।
मक्कलशूलशमनं परं क्षीराभिवर्द्धनम् ।।
क्षीरपाकविधानेन काञ्जिकस्यापि साधनम् ।।

पिप्पली, सोंठ, कालाजीरा, बिडनमक,
पिप्पलीमूल, अजवायन, हल्दी, कालानमक।
चव्य, जीरा, दारुहल्दी,

विधि—उक्त ११ औषधियोंको समभाग मिलाकर चूर्ण करें।

मात्रा—३० ग्राम चूर्णको कांजी १२५ ग्राम और जल आधा किलो मिलाकर उबालें। जल करीब १२५-१५० ग्राम रहे, तब उतार, छानकर पिला देवें। दिनमें २ बार प्रातःसायं।

उपयोग—यह वज्रकाञ्जिक प्रसूताके मक्कल शूलको शमन करता है तथा अग्निको प्रदीप्त करता है।

सूचना—जिस प्रसूताको ज्वर आता हो या अम्ल रस अनुकूल न रहता हो, उसे मात्र जलमें उबाल कर देवें।

१२६. वत्सकादि कषाय

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः
सोदीच्यमुस्तैश्च कृतः कषायः।
सामे सशूले सहशोणिते च
चिरप्रवृत्तेऽपि हितोऽतिसारे ।। (च० द०)

कूड़ेकी छाल, बेलगिरी, नागरमोथा।
अतीस कड़वा, नेत्रवाला,

विधि—उक्त ५ औषधियोंको समभाग मिला कर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ दिनमें ३-४ बार पिलावें।

उपयोग—यह वत्सकादि क्वाथ आमसह और शूल सह जीर्ण रक्तातिसारको थोड़े दिनमें ही निवृत्त करता है।

१२७. वयः स्थापन कषाय ।

अमृताऽभया-धात्रीयुक्ता-श्रेयसी-जीवन्त्यतिरसा-
मण्डूकपर्णी-स्थिरा-पुनर्नवा इति दशेमानि
वयःस्थापनानि भवन्ति ।।

गिलोय, आंवला, श्रेयसी (रास्नाभेद), शतावरी, शालपर्णी, हरड़, रास्ना, जीवन्ती, मण्डूकपर्णी, पुनर्नवा।

विधि—महर्षि आत्रेयने उक्त १० औषधियाँ वयःस्थापन महाकषायरूपसे दर्शायी हैं। उनमेंसे जो मिले उनको समभाग मिलाकर जोकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ बनाकर प्रातः-सायं सेवन करें।

उपयोग—यह वयःस्थापन कषाय गिरी हुई अवस्थाको दूर करके पुनः तरुणावस्थाकी प्राप्ति कराता है। यदि सुवर्ण, मुक्ता, लोह, अभ्रक आदिकी भस्मके साथ अनुपान रूपसे सेवन कराया जाय, तो सत्वर लाभ पहुँचता है।

१२८. वरुणादि कषाय (अश्मरी)।

वरुणत्वक् शिलाभेदशुण्ठीगोक्षुरकैः कृतः
कषायः क्षारसंयुक्तः शर्कराश्च भिनत्यपि ।। (भै॰ र०)

वरनेकी छाल, पाषाणभेद मूल, सोंठ, गोखरू।

विधि—उक्त ४ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० ग्रामका क्वाथ ½ ग्राम यवक्षार और गुड़ १०ग्राम मिलाकर पिलावें। २-२ घण्टेपर २-३ बार। या दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह वरुणादि कषाय वृक्क और मूत्राशयस्थ अश्मरी और शर्कराको तोड़कर बाहर निकाल देता है तथा वृक्कशूल और बस्तिशूलको शान्त कर देता है।

१२९. वरुणादि कषाय (गुल्म)

वरुणादिगण क्वाथमपक्वे मध्यविद्रधौ ।
ऊषकादिरजो युक्तं पिवेच्छमनहेतवे ॥
वरुणो बकपुष्पश्च बिल्वापामार्ग चित्रकाः ।
अग्निमन्थद्वयं शिग्रुद्वयं च बृहतीद्वयम् ॥
सौरेयकत्रयं मूर्वा मेषशृङ्गी किरातकः ।
अजशृङ्गी च बिम्बी च करञ्जश्च शतावरी ॥
वरुणादिगणः क्वाथः कफमेदाहरः स्मृतः ।
हन्ति गुल्मं शिरःशूलं तथाभ्यन्तरविद्रधीन् ॥ (शा० सं०)

बरनेकी छाल,	छोटी अरनीकी जड़,	नीला कटसरैया
अगस्त्यके पुष्प	मीठे सुहिजनेकी छाल,	मूर्वा,
(हथियाके फूल),	कड़वे सुहिजनेकी छाल,	मेढासिंगी,
बेलछाल,	छोटी कटेली मूल,	चिरायता
अपामार्ग मूल,	बड़ी कटेली मूल,	काकड़ा शृंगी,
चित्रक मूल,	पीली कटसरैया,	कन्दूरीकी छाल,
बड़ी अरनोकी छाल,	सफेद कटसरैया,	वृक्ष करंजकी छाल,
		शतावरी ।

विधि—उक्त २१ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें । दिनमें २ बार ।

प्रक्षेप—ऊषकादि गण (पापड़खार, सेंधव, शिलाजतु, कासीस सफेद, हरी कासीस, हींग और नीलाथोथाका फूला) में ६ औषधियां ½-½ ग्राम और नीलाथोथा २५ मि. ग्रा.

उपयोग—यह वरुणादि गण क्वाथ अपक्व अन्तर विद्रधि, गुल्म, कफप्रकोप, मेदो वृद्धि, शिरःशूल आदिका नाश करता है।

१३०. वासादि कषाय (रक्तपित्त)।

वासाकषायोत्पलमृत्प्रियङ्गु लोध्राञ्जनाम्भोरुहकेसराणि ।
पीत्वा सिताक्षौद्रप्लुतानि जह्यात्पित्तासृजो वेगमुदीर्णमाशु ॥
(वृ० मा०)

वासापान, फिटकरीका फूला, लोध, कमलकेसर,
नीलकमल, प्रियङ्गु, रसौंत ।

विधि—वासाके अतिरिक्त उक्त ६ औषधियोंको समभाग मिला पीसकर कल्क करें ।

मात्रा—वासाके पान २०-२० ग्रामका क्वाथ कर उपर्युक्त कल्क ३ ग्राम तथा शक्कर और शहद ६-६ ग्राम मिला कर पिलावें । दिनमें ३ बार ।

उपयोग—यह वासादि क्वाथ प्रबल ऊर्ध्व रक्तपित्तको भी शीघ्र दूर कर देता है ।

१३१- वासादि क्वाथ (श्वास)

वासा-हरिद्रा-धनिका-गुडूची-भार्ङ्गी-कणा-नागर-रिङ्गणीनाम् ।
क्वाथेन मारीचरजोन्वितेन श्वासः शमं याति न कस्य पुंसः ॥
(यो० र०)

अडूसाके पान, धनिया, भारङ्गी, सोंठ,
हल्दी, गिलोय, पिप्पली, छोटी कटेली मूल ।

विधि—उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकुट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कालीमिर्चका चूर्ण मिला कर दौरा होनेपर २-२ घण्टेपर ३ बार देवें । अन्य समयपर दिनमें ३ बार प्रातः, मध्याह्न और रात्रिको ।

उपयोग–इस वासादि क्वाथके सेवनसे श्वास रोगका तुरन्त दमन होता है । एवं कुछ काल तक इसका सेवन करते रहनेपर श्वासरोग समूल नष्ट हो जाता है ।

१३२. विडङ्गादि क्वाथ ।

विडङ्गरजनीयष्टीनागरगोक्षुरैः कृतः ।
कषायो मधुना हन्ति प्रमेहान्दुस्तरानपि ।। (यो० र०)

बायविडङ्ग, हलदी, मुलहठी, सोंठ, गोखरू ।

विधि—उक्त ५ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके छान लेवें । शीतल होनेपर ६ ग्राम शहद मिला कर पिलावें । प्रातः सायं दिन में २ बार ।

उपयोग—यह विडङ्गादि क्वाथ अति बढ़े हुए दुस्तर कफ प्रमेहोंको भी नष्ट करता है ।

१३३. विशालाद्य फाण्ट (पाण्डु)

विशाला त्रिफला-मुस्त-कुष्ठ-दारु-कलिङ्गकान् ।
कार्षिकानर्ध कर्षांशानु कुर्यादतिविषां तथा ।।
कर्षौ मधुरसाया द्वौ सर्वं चूर्णं सुखाम्बुना ।
मृदितं तं रसं पूतं पीत्वा लिह्याच्च मध्वनु ।।
कासं श्वासं ज्वरं दाहं पाण्डुरोगमरोचकम् ।
गुल्मानाहमवातांश्च रक्तपित्तं च नाशयेत् ।।(च०सं०)

इन्द्रायन जड़,	१० ग्राम,	कूठ कडुवा	१० ग्राम
हरड़	१० ,,	देवदारु	१० ,,
बहेड़ा	१० ,,	इन्द्रजौ कडुवा	१० ,,
आंवला	१० ,,	अतीस कडुवा	५ ,,
नागरमोथा	१० ,,	मुलहठी	२० ,,

विधि—सबको मिला कूटकर कपड़छान चूर्ण करें ।

मात्रा—१० से २० ग्राम तक उबलते हुए २०० ग्राम जलमें डालकर २० मिनट तक ढक दें । फिर छान लेवें । ५०-५० ग्राम जल दिनमें ३ बार पी लेवें । ऊपर ५ ग्राम शहद चाट लेवें ।

सूचना—मलावरोध हो तो कुटकीका चूर्ण ३ माशे भी उबलते जलमें डाल लेवें।

उपयोग—यह विशालाद्य फाण्ट शोधन, सारक, कीटाणु-नाशक, कफघ्न, आमपाचक है। यह पाण्डुरोगपर लिखा है। यह फाण्ट, कास, श्वास, जीर्णज्वर, दाह, पाण्डु, अरुचि, गुल्म, आनाह, आमवात और रक्तपित्तको दूर करता है।

१३४. विश्वादि कषाय (ज्वर)

विश्वाम्बु-पर्पटोशीर-घन-चन्दनसाधितम्।
दद्यात् सुशीतलं वारि तृट्-छर्दि-ज्वर-दाहनुत्॥(भै०र०)

सोंठ, नेत्रवाला, पित्तपापड़ा, खस, नागरमोथा, रक्तचंदन।

विधि—उक्त ६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ करें। छानकर शीतल करके पिलावें। दिनमें २ या ३ बार।

उपयोग—यह विश्वादि कषाय तृषा, वमन और दाह सह पित्तज्वरको निवृत्त करता है।

१३५. विश्वादि कषाय (गुल्म)

विश्वोपकुल्यामरिच शठीनां यवानिका-चित्र-हरीतकीनाम्।
क्वाथोयकृत्पाचनकेपि शस्तः आनाह-गुल्मार्ति विषूचिकानाम्॥
हा० सं०

सोंठ, कालीमिर्च, अजवायन हरड़,
पीपल, कचूर, चित्रक-मूल,

विधि—उक्त ७ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ कर पिलावें। प्रातः रात्रिको।

उपयोग—यह विश्वादि कषाय यकृत्गुल्मको पचन कराता है। एवं अफारा, गुल्म और विषूचिका (अपचन जनित हैजा)

को दूर करता है।

१३६. विश्वादि द्वादशाङ्ग कषाय (वायु)

विश्वैरण्डशिफा-दारु-वचाः शुण्ठी दुरालभा।
अभयाऽतिविषा मुस्ता शतमूली वृषोऽमृता॥
अमीषां क्वाथपानेन मांसामश्लेष्म सन्धिगः।
मज्जास्थिस्नायुसर्वाङ्गवायुर्नश्यति निश्चितम्॥ (ग० नि०)

सोंठ,	बच,	हल्दी,	शतावरी
एरण्ड मूल,	सोंठ,	अतीसकड़वा,	वासापत्र,
देवदारु,	धमासा,	नागरमोथा,	गिलोय।

विधि—उक्त १२ औषधियोंको समभाग मिलाकर चौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर पिलावें। दिनमें २ से ३ बार।

उपयोग—यह विश्वादि द्वादशाङ्ग क्वाथ मांसगत, सन्धिगत, मज्जागत, अस्थिगत, स्नायुगत और सर्वांङ्गगत, फिरने वाली वायु, उदावर्त (गेस) को नष्ट करता है।

१३७. वीरतर्वादिगण क्वाथ (अश्मरी)

वीरतरु-सहचरद्वय-दर्भ-वृक्षादनी-गुन्द्रा-नल-कुश-काशाश्ममेर्दकाग्निमन्थ-मोरटा-वसुक-वसिर-भल्लूक-कुरण्टिकेन्दीवर-वङ्कश्वदंष्ट्रा चेति॥

वीरतर्वादिरित्येष गणो वातविकारनुत्।
अश्मरी शर्करा मूत्रकृच्छ्राघातरुजापहः॥ (सु० सं०)

वीरतरु+, दार, अरनी मूल, पियबांसा (लालफूल)।

+लेटिन संज्ञा Dichrostachya cineria है। यह १०-१५ फुट ऊंचा लघु कण्टकयुक्त वृक्ष होता है। सामान्यतः खैर सदृश भासता है। लकड़ी अति कठोर होती है। कलंगीमें पुष्प बेंजनी, गुलाबी, श्वेत या पीले रंगके भासते हैं।

पियाबांसा (नीलाफूल), नरसल, मूर्वा, नीला कमल,
" (पीलाफूल), कुश जड़, वसुक(अगस्त्यपुष्प), ब्राह्मी,
दर्भ, काशजड़, वशिर (अपामार्ग), गोखरू।
बांदा, पाषाणभेद, भल्लूक (अरलू),

विधि—उक्त १९ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा-१० से २० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें। दिनमें ३बार।

उपयोग—यह वीरतर्वादि गणका क्वाथ अश्मरीहर है। इसके सेवनसे वातविकार, अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी जनित शूल आदि सब निवृत्त हो जाते हैं।

१३८. व्याघ्र्यादि कषाय (ग्रहणी)

व्याघ्रीग्रन्थिकं चव्यं सुरसा शुण्ठी सदाडिमं रजनी।
घनचित्रकमेवं हि क्वाथो ग्रहणीकफं हन्ति ॥ (हा० सं०)

छोटी कटेलीमूल, चव्य, सोंठ, हल्दी, चित्रकमूल।
पीपलामूल, तुलसी, अनारदाने, नागरमोथा,

विधि—उक्त ९ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें। दिनमें २ या ३ बार।

उपयोग—यह व्याघ्र्यादि कषाय दीपन, पाचन, ग्राही और कफघ्न है। इसका उपयोग करनेपर कफप्रधान ग्रहणी, कफकास और कफ प्रधान श्वास दूर होते हैं।

१३९. व्याघ्र्यादि कषाय (श्वास)

व्याघ्री-दुरालभा-शृङ्गी-बिल्व मध्य-त्रिकण्टकैः।
सामृताग्नि शृतैरेतैर्यूषः स्याच्छ्वासनुत्परः ॥ (वं०से०)

छोटी कटेली, काकड़ा सिंगी, गोखरू,
धमासा, बेलगिरी, गिलोय।

विधि—उक्त ६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ कर पिलावें। दिनमें २ या ३ बार।

उपयोग—यह व्याघ्रचादि कषाय जीर्ण कफप्रधान श्वास रोगको नष्ट करता है। एवं दौरेके समय भी शान्ति प्रदान कराता है।

१४०. शठ्यादि क्वाथ (ज्वर)

शठी निशाद्वयं दारु शुण्ठी पुष्करमूलकम्।
एला गुडूची कटुका पर्पटश्च यवासकः॥
शृंगी किराततिक्तश्च दशमूलो तथैव च।
क्वाथमेषां पिबेत्कोष्णं सिन्धुचूर्णयुतं नरः॥
ज्वरान्सर्वान्द्रुतं हन्ति नात्र कार्य विचारणा॥ (भा.प्र.)

कचूर	१० ग्राम,	गिलोय	१० ग्राम,
हल्दी	१० ग्राम,	कुटकी	१० ग्राम,
दारू हल्दी	१० ग्राम,	पित्तपापड़ा	१० ग्राम,
देवदारू	१० ग्राम,	धमासा	१० ग्राम,
सोंठ	१० ग्राम,	काकड़ासिंगी	१० ग्राम,
पुष्करमूल	१० ग्राम,	चिरायता	१० ग्राम,
छोटी इलायची	१० ग्राम,	दशमूल मिलकर	१० ग्राम,

विधि—उक्त २३ औषधियोंको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके सेवन करावें। दिनमें २ या ३ बार।

उपयोग—यह शठ्यादि क्वाथ सब प्रकारके ज्वर, जो दिनों तक बने रहते हैं, उनको यह निःसन्देह दूर करता है। इसका प्रयोग कई बार सफलतापूर्वक किया गया है।

१४१. शठ्यादि क्वाथ (आमवात)

शठी शुण्ठ्यभया चोग्रा देवाह्वाऽतिविषाऽमृता ।
कषायमामवातस्य पाचनं रूक्षभोजिनाम् ।। (यो०र०)

कचूर, सोंठ, हरड़, वच, देवदारू, अतीस कड़वा, गिलोय

विधि—उक्त ७ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर पिलाते रहें । दिनमें २ बार प्रात: रात्रिको ।

उपयोग—यह शठ्यादि क्वाथ रूक्ष भोजन लेने वाले आमवात पीड़ितोंको दोष पाचनार्थ दिया जाता है ।

१४२. शतावर्यादि क्वाथ

शतावरी-काश-कुश-श्वदंष्ट्राविदारि-शालीक्षुकसेरुकाणाम् ।
क्वाथं पिवेन्माक्षिकसम्प्रयुक्तं कृच्छ्रे सदाहे सरुजे विबन्धे ।।
(भा० प्र०)

शतावरी, कुशमूल, विदारी कन्द, ईखकी जड़,
काशमूल, गोखरूमूल, धानकी जड़, कसेरू ।

विधि—उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२० से ४० ग्रामका क्वाथ कर छान लें । शीतल होनेपर १० ग्राम शहद मिलाकर पिलावें । दिनमें ३-४ बार ।

उपयोग—यह शतावर्यादि क्वाथ मूत्रकृच्छ्र तथा दाह और शूलसह मूत्रावरोधको दूर करता है ।

१४३. शुष्ककासहर कषाय

जूफा ६ ग्राम, बहेड़ा ६ ग्राम, अंजीर ४ नग,
हंसराज ६ ग्राम, वासापत्र ६ ग्राम, मुलहठो ६ ग्राम,
केवड़ेका मूल ६ ग्राम, मिश्री २० ग्राम,

उपयोग—उक्त ८ औषधियोंको ४ गुने जलमें उबालें ।

आधा जल शेष रहनेपर उतार; छानकर दो हिस्से करें। सुबह शाम पिलाते रहनेसे ५-७ दिनमें पित्तज और वातज शुष्क कास शमन हो जाती है। एवं मलावरोध, शिरदर्द, उबाक, वमन आदि विकार भी दूर हो जाते हैं।

१४४. शृंग्यादि क्वाथ।

शृंगी-भार्ङ्ग्यभया-कणा-भूनिम्ब-पर्पटैः।
देवदारु-वचा-कुष्ठ-यास-कट्फल-नागरैः॥
मुस्त-धान्याक तिक्तेन्द्रयव-पाठा-हरेणुभिः।
हस्ति-पिप्पल्यपामार्ग-पिप्पलीमूल-चित्रकैः॥
विशालाऽऽरग्वधारिष्ट-शठी-वाकुचिका फलैः।
विडङ्ग-रजनी-दार्वी-यवानीद्वय संयुतैः॥
समांशै विहितः क्वाथो हिङ्ग्वार्द्रकरसान्वितः।
अभिन्यास ज्वरं घोरं हन्ति तन्द्राञ्च तत्क्षणात्॥
प्रमेहं कर्णशूलञ्च संन्निपातांस्त्रयोदश।
हिक्कां श्वासञ्च कासञ्च तथा सर्वानुपद्रवान्॥ (भा० प्र०)

काकड़ा सिंगी,	कूठकड़वा,	निगुंण्डी बीज,	बावचीके बीज
भारंगी,	जवासा,	गज पीपल,	बायविडङ्ग
हरड़ छोटी,	कायफल,	अपामार्ग जड़,	हल्दी
जीरा,	सोंठ,	पिप्पली मूल,	दारुहल्दी,
पीपल,	नागरमोथा,	चित्रक मूल,	अजवायन,
चिरायता,	धनिया,	इन्द्रायण जड़,	अजमोद
पित्तपापड़ा,	कुटकी	अमलतासकागूदा,	
देवदारु,	इन्द्रजौ कड़वा,	नीमकी अन्तर छाल।	
वच,	पाठा,	कचूर,	

विधि—उक्त ३३ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथकर पिलावें। दिनमें ३ बार

अनुपान—भुनी हींग २०० मि॰ग्रा. तथा अदरखका रस १½ग्रा.

उपयोग—यह शृंग्यादि क्वाथ अति घातक अभिन्यास सन्निपातका नाश करता है। एवं उसके तन्द्रा, प्रमेह, कर्णशूल, हिक्का, श्वास, कास आदि सब उपद्रव और १३ प्रकारके सन्निपातोंको भी दूर करता है :

१४५. शोधन क्वाथ।

पित्तपापड़ा,	पिप्पला मूल,	पोदीना,	धनिया,
शठी,	अमलतासका गूदा,	धमासा,	सोंफ,
काकड़ासिंगी,	काला जीरा,	हरड़,	सोंठ,
भारङ्गमूल,	मुलहठी,	बायविडंग,	रास्ना,
गिलोय,	काली मुनक्का,	नीमकी अन्तरछाल,	
गोखरू,	छोटी इलायची (छिलकेसह)।		

विधि—अमलतास और मुनक्का छोड़ शेष २० औषधियों को २५-२५ ग्राम मिलाकर जौकुट चूर्ण करे। फिर अमलतास और मुनक्का २५-२५ ग्राम मिला लेवें। उसकी १५ पुड़ी बनावें।

मात्रा—१ पुड़ीको रात्रिको १६ गुने जलमें भिगो देवें। सुबह मंदाग्निपर उबालें। आठवाँ हिस्सा जल रहनेपर उतार कर छान लेवें। फिर उसके ३ हिस्से करें। सुबह, दोपहर, रात्रिको सेवन करें।

उपयोग—यह शोधन क्वाथ रक्तपचन संस्थान और श्वसन-संस्थानका शोधन करके शरीरको शुद्ध बनाता है। पुराने विभिन्न रोगोंसे पीड़ित, जो सैंकड़ों औषधियां लेकर उपराम हो गये हैं। उनको यह क्वाथ आशीर्वादरूप है।

अपथ्य—मिर्च, तेल, इमली, आमचूर, द्विदल धान्य, मावा, मैदाकी मिठाई अति गरम-गरम चाय, आइस्क्रीम आदि अति शीतल पदार्थ, ये सब हो सके उतने कम करें। बिड़ी, सिगरेट, शराब, अफीम आदिका व्यसन हो, तो छोड़ देना चाहिए।

१४६. श्रेष्ठादि क्वाथ

श्रेष्ठा-निम्ब-पटोल-मुस्त-रजनी-त्रायन्ति हेमामृता-
कृत्वा षड्गुणवारिणा विनिहितं षष्ठांशपीतो निशि ।
भ्रूशङ्खाक्षिशिरोरुजां बहुविधां कर्णस्य नासागदं,
नक्तान्ध्यं तिमिरं च काचपटलं दैत्यान् यथा केशवः ॥
(भा० भै० र०)

हरड, आंवला, पटोल पत्र हल्दी, नागकेशर, बहेड़ा, नीमकीअन्तरछाल, नागरमोथा, त्रायमाण, गिलोय ।

विधि—उपर्युक्त १० औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२० से ४० ग्रामको सुबह ६ गुने जलमें भिगोवें । रात्रिको उबालकर छठवाँ हिस्सा शेष रहनेपर छान कर पी लेवें । (इसी तरह रात्रिको भिगो, सुबह उबाल कर भी देना विशेष हितावह है) ।

उपयोग—यह श्रेष्ठादि क्वाथ भ्रू, शंख (कनपटी), आंख, शिरकी विभिन्न प्रकारकी वेदनाएँ तथा कर्ण रोग, नासा रोग, नक्तान्ध्य, तिमिर, काच (मोतिया बिन्दु), पटल रोग आदिका नाश करता है ।

१४७. षडङ्ग क्वाथ ।

पथ्याक्ष-धात्री-भूनिम्बैर्निशानिम्बामृतायुतैः ।
कृतः क्वाथः षडङ्गोय सगुडः शीर्षशूलहा ॥
भ्रूशङ्खकर्णशूलानि तथार्धशिरसो रुजम् ।
सूर्यावर्तं शङ्खकं च दन्तपातश्च तद्रुजः ॥
नक्तान्ध्यं पटलं शुक्रं चक्षुःपीडां व्यपोहति ॥
(भा० भै० र०)

हरड़, बहेड़ा, आंवला, चिरायता, हल्दी, नीमगिलोय,

विधि—उक्त ६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२० से ४० ग्रामको रात्रिको १६ गुने जलमें भिगो दें। सुबह उबालकर चौथा हिस्सा शेष रखें। उसमें गुड़ मिला कर पिला देवें। उसी तरह सुबह भिगोकर रात्रिमें देते रहें।

उपयोग—यह षड़ङ्ग क्वाथ दीपन, पाचन, चक्षुष्य, सारक और वेदनाहर हैं। इसके सेवनसे शीर्षशूल तथा भ्रू, शंख और कर्णके शूल, आधा शीशी, सूर्यावर्त, शंखक, दन्त पातज वेदना, नक्तान्ध्य, पटल, शुक्र (फूला) और चक्षु पीड़ा आदि दूर होते हैं।

१४८. सप्तच्छदादि कषायं (मूत्रकृच्छ्र)

सप्तच्छदारग्वधकेतकैला: निम्ब: करञ्ज: कुटजो गुडूची।
साध्या जले तेन पचेद्यवागूं सिद्धं कषायं मधुसयुतं वा॥

सतौनेकी छाल,	छोटी इलायची,	कूड़ेकी छाल
अमलतासका गूदा,	नीमकी अन्तर छाल,	गिलोय।
केतकीकी जड़,	करञ्ज छाल,	

विधि—उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्णकरें।

मात्रा—२०-२० ग्राम का क्वाथ करें। शीतल कर १० ग्राम शहद मिलाकर पिलावें। दिनमें ३ बार।

अथवा ४० ग्रामको ३२ गुने जलमें उबालें, आधा जल शेष रहने पर उतार कर छान लेवें। फिर यवागू बनाकर पान करावें।

उपयोग—इस सप्तच्छदादि कषायका सेवन करनेसे अश्मरी और अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र दूर हो जाते हैं।

१४९. सप्तच्छदादि कषाय (मुखपाक)

सप्तच्छदोशीर-पटोल-मुस्त-हरीतकी-तिक्तकरोहिणीभि:।
यष्ट्याह्व-राजद्रुम-चन्दनैश्च क्वाथं पिबेत् पाकहरं मुखस्य॥
(च० द०)

सतौनेकी छाल, नागरमोथा, मुलहठी ,
खश इरड़, अमलतासका गूदा,
परवल पान, कुटकी, रक्तचन्दन ।

विधि—उक्त ९ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें । प्रातः काल और रात्रिको

उपयोग—यह सप्तच्छदादि कषाय दीपन, पाचन, सारक और पित्तशामक है । इसके सेवनसे आमाशय, पित्तकी उग्रता दूर होकर मुखपाक शमन हो जाता है ।

१५०. समङ्गादि कषाय

समङ्गा-धातकी-बिल्वमाम्रस्थ्यम्भोजकेशरम् ।
बिल्वं मोचरसं लोध्रं कुटजस्य फलत्वचो ॥
पिबेत्तण्डुलतोयेन कषाय कल्कमेव च ।
श्लेमपित्तातिसारघ्नं रक्तं चाथ नियच्छति ॥
(बृ, यो. त.)

लज्जालूमूल, बेलगिरी, कमलकेशर, मोचरस, कूड़ेकी छाल, धायके फूल, आमकीगुठली, बेलछाल, लोध्र, इन्द्रजो कड़वे ।

विधि—उक्त १० औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—चावलोंके धोवनमें २०-२० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें । या सबको पीस कल्ककर चावलोंके धोवनके साथ सेवन करावें । दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह समङ्गादि कषाय श्लेष्म पित्तप्रधान अतिसार और रक्तातिसारको सत्वर दूर करता है ।

१५१. समीरदावानल क्वाथ

भल्लातकानां शकलानि कृत्वा त्रिलोकमानं परिगृह्य वैद्यः ।
चतुष्पलं तोयसमन्वितोऽयं क्वाथश्च ष्टांशमितं प्रगृह्य ॥

सिताहविर्गोपयर्मिश्रितं च कोलं पलार्धं पलमेकयुक्तम् ।
क्रमेण पीतः खलु हन्ति वातान् समीरदावानलनामधेयः ।।
(बृ० नि० र०)

विधि—सरोतेसे सम्हाल पूर्वक १५ ग्राम शुद्ध भिलावेके टुकड़े करें । (हाथको तेल न लगने देवें) उसमें १६० ग्राम जल मिलाकर चतुर्थांश क्वाथ करें । फिर छानकर उसमें २०० ग्राम मिश्री, २०० ग्राम गोघृत और २०० ग्राम गोदुग्ध मिला शीतल करके सेवन करावें । सुबह १ बार या रात्रिको भी दूसरी बार । क्रमशः शक्ति अनुरूप मात्रा आध आध तोला करके बढ़ावें ।

उपयोग—यह समीर दावानल क्वाथ सब प्रकारके वात-रोगोंका नाश करता हैं । एवं अर्श, मधुमेह और कुष्ठ आदिमें भी हितावह है । पचनक्रियाको बढ़ाता है ।

सूचना—भिलावेके सेवनकालमें सूर्यताप, अधिक मिर्च, कच्चा दूध, अधिक तेज खटाई आदिका सेवन हो सके उतना कम करें । तैल, लहशुन, प्याज, भिलावा सेवनकालमें ले सकते हैं । विशेष सूचना भल्लातकादि क्वाथमें की है ।

१५२. सहचरादि कषाय

सहचर-पुष्कर-वेतसमूलं विकङ्कतदारु कुलत्थसमम् ।
जलमत्र ससैन्धवहिङ्गुयुतं सद्यो ज्वरसूतिकाशूलहरम् ।।
(ग० नि०)

पियावांसा, पुष्करमूल बेंतकेमूल, विकङ्कत*, देवदारु, कुलथी

विधि–उक्त ६ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

---

*विकङ्कतको गुजरातीमें विकरो वेहकल, म० वेहकल और लेटिनमें Gymnosporea Montona संज्ञा दी है । इन वृक्षोंकी १० फीट तक ऊंचाई होती है । कांटेदार । फल खट्टे मीठे होते हैं ।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथकर सेंधानमक १ ग्राम और भुनी हींग २०० मि.ग्रा. मिलाकर पिलावें। दिनमें २ बार।

उपयोग—यह सहचरादि क्वाथ सूतिकाका ज्वर, सन्निपात, मक्कल शूल, कटिवेदना आदिको दूर करता है।

१५३. सारिवादि गण कषाय।

सारिवा-मधुक-चन्दन कुचन्दन-पद्मक-
काश्मरीफल मधूक-पुष्पाण्यु शीरञ्चेति ।।
सारिवादिः पिपासाघ्नो रक्तपित्तहरो गुरुः।
पित्तज्वरप्रशमनो विशेषाद् दाहनाशनः ।। (सु० सं०)

अनन्तमूल,	श्वेतचन्दन,	पद्माख,	महुएकेफूल,
मुलहठी.	रक्त चन्दन,	गभारी फल,	खश।

वक्तव्य—श्री वाग्भटाचार्यने फालसा अधिक लिया है।

विधि—उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ (या फाण्ट) करकेसेवन करें। दिनमें ३-४ बार।

उपयोग—यह सारिवादि कषाय पित्तप्रकोप, तृषाशामक, रक्तपित्त हर, पित्तज्वर नाशक और विशेषतः दाह नाशक है।

१५४. सालसारादि गण कषाय।

सालसाराजकर्ण-खदिर कदर-कालस्कन्ध क्रमुक भूर्ज-मेषशृङ्गी
-तिनिश-चन्दन-कुचन्दन-शिंशपा-शिरीषासन-धवार्जुन-ताल-
-शाक-नक्तमाल-पूतीकाश्वकर्णागुरूणि कालीयकं चेति ।।
सालसारादिरित्येष गणः कुष्ठविनाशनः।
मेहपाण्ड्वामयहरः कफमेदोविशोधनः ।। (सु० सं०)

सालसार,	मेढासिंगी,	अर्जुन,
(सालकागर्भ)	तिनिश.	ताड़,

अजकर्ण (सालभद्र)	श्वेत चन्दन,	साग,
खैरकी छाल,	रक्त चन्दन,	करञ्ज,
कदर (सफेदखैर)	शीसम,	पूतिकरंज,
कालस्कन्ध (गूलर),	सिरस,	अश्वकर्ण-सालभेद
सुपारी	विजयसार,	अगर
भोजपत्र,	धव,	पीला चन्दन ।

विधि—उक्त २३ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें । दिन में बार ।

उपयोग—यह सालसारादि गण कुष्ठ, प्रमेह और पाण्डुका नाश करता है तथा कफ और मेदका विशोषण करता है ।

शिलाजतुको सालसारादि गणकी ७ भावना देकर गोलियां बना कर मधुमेहके रोगियोंको दी जाती हैं । एवं लोह भस्मको इसके क्वाथकी १०-२० भावना देकर बार-बार गज पुट देने पर लोह भस्म मधुमेह और अन्य प्रमेह रोगीके लिए रक्तवर्द्धक और रोगशामक कार्य करती है ।

१५५. सिन्धुवार क्वाथ ।

सिन्धुवारदलक्वाथं कणाढ्यं कफजे ज्वरे ।
जङ्घयोश्च बले क्षीणे कर्णे च पिहिते पिवेत् ।। (भा० प्र०)

विधि—निर्गुण्डीके पान ४०-४० ग्रामका क्वाथ करें । शीतल करके प्रक्षेप रूपसे ½ ग्राम पीपलका चूर्ण (और १०ग्राम शहद) मिलाकर पिलावें । दिनमें २ बार प्रातः और रात्रिको ।

उपयोग—यह सिन्धुवार क्वाथ जंघाकी शिथिलता और कानोंकी बधिरता सह कफ ज्वरको दूर करता है ।

१५६. सिंहास्यादि कषाय ।

सिंहास्य-पञ्चमूली-छिन्नरुहै-रण्ड-गोक्षुर: क्वाथ: ।
एरण्डतैलरामठ-सैन्धवचूर्णान्वित: पीत: ।
प्रशमयति वातरक्तं तथामवातं कटिशूलम् ।
मूत्रपुरीष-विबंधं ब्रध्नविकारं सुदुर्गमम् ॥ (धा० मं०)

वासामूल, पृष्ठपर्णी बड़ी कटेली गिलोय, गोखरूछोटे, शालपर्णी. छोटीकटेली, गोखरूछोटे, एरण्डमूल (दूसरीबार)

विधि—उक्त ९ औषधियों को समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा–२०-२० ग्रामका क्वाथकर उसमें २० ग्राम एरण्ड तैल, भूनी हींग २०० मि. ग्रा. और एक ग्राम सैन्धव मिलाकर पिलावें । प्रात: और रात्रिको सोनेके समय ।

उपयोग—यह सिंहास्यादि कषाय वातरक्त, आमवात, कटिशूल, मूत्रावरोध, मलावरोध, सुदारुण ब्रध्न रोगको दूर करता है ।

१५७. सिंह्यादि क्वाथ ।

सिंही-निशा-सिंहमुखी-गुडूची विश्वौषधै र्भृगुजा घनानाम् ।
कृष्णा-मरीचर्मिलित: कषाय: श्वासाटवी-दाहृदवोद एष: ॥
(वृ० नि० र०)

छोटी कटेली, वासापत्र, सोंठ, भारंगी,
हल्दी, गिलोय, पिप्पली, नागरमोथा ।

विधि—उक्त ८ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्राम का क्वाथ कर उसमें प्रक्षेप रूपसे पिप्पली और कालीमिर्चका चूर्ण ½ ½ ग्राम मिलाकर दिनमें २ बार पिलावें अथवा सरसोंका तेल १० ग्राम मिलाकर पिलावें ।

उपयोग—यह सिंह्यादि क्वाथ कफ प्रधान जीर्ण श्वासरोग

को समूल नष्ट करता है और तीव्र श्वास रोगके दौरेको दबानेमें सहायक होता है।

१५८. सुदर्शनादि कषाय।

महासुदर्शन चूर्ण १० ग्राम, कालीमुनक्का (बीज रहित) ६ ग्राम, ताजा नीमगिलोय १० ग्राम, मुलहठी ६ ग्राम, बादाम २० नग,

विधि—उक्त ५ औषधियोंको १ किलो जलमें मिलाकर क्वाथ करें। २५० ग्राम जल रहनेपर उतार मसलकर छान लेवें।

मात्रा—उक्त कषाय जलका ३ हिस्सा करें। प्रातःमध्याह्न और रात्रिको देवें। पीनेके समय १०-१० ग्राम शहद मिलाते रहें।

उपयोग—इस सुदर्शनादि कषायका उपयोग क्षय पीड़ितोंके ज्वर, कफ प्रधान जीर्ण ज्वर, उरःक्षत और मलावरोधको दूर करनेके लिये होता है। संगृहीत कफको बाहर निकालता है। ज्वरका दमन कराता है। रक्तस्रावको रोक देता है तथा उदर शुद्धि कराता है।

१५९. सूतिका ज्वरहर कषाय।

हरड़ ६ ग्राम, गिलोय ६ ग्राम, आंवला ६ ग्राम, बच ६ ग्राम, बहेड़ा ६ ग्राम, मुलहठी ६ ग्राम, अफीमका डोडा १ ग्राम।

विधि—उक्त ७ द्रव्योंको मिला जौकूट चूर्ण करें। फिर ५०० ग्राम जल मिलाकर क्वाथ करें। चतुर्थांश जल शेष रहनेपर उतारकर छान लेवें। फिर २ हिस्सेकर प्रातःकाल और रात्रिको पिलावें। प्रक्षेप रूपसे गुड़ और हल्दी २-२ ग्राम मिलावें।

वक्तव्य—मलावरोध अधिक हो तो कुटकी भी मिला लेना चाहिए।

उपयोग—इस क्वाथका उपयोग १ सप्ताह करनेपर प्रसूताके देहमें लीन विष सब जल जाता है। रक्तप्रसादन होता है, आम का पचन होता है। वातप्रकोप शान्त होता है तथा ज्वर, कास,

शिरदर्द, अपचन, हाथ पैरोंमें शून्यता आना, नाड़ियोंका खिचाव और पाण्डुता आदि लक्षण दूर हो जाते हैं ।

१६०. सूतिका दशमूल ।

शालपर्णी पृश्निपर्णी वृहतीद्वयगोक्षुरम् ।
दासी प्रसारणी विश्वं-गुडूची मुस्तकं तथा ॥
निहन्ति सूतिकारोगं ज्वरं दाहसमन्वितम् ॥(भै० र०)

शालपर्णी, बड़ी कटेली, गंधप्रसारणी, नागरमोथा ।
पृश्निपर्णी, छोटे गोखरू, सोंठ,
छोटी कटेली, नीलेफूलका पियावांसा, गिलोय,

विधि—उक्त १० औषधियोंको समभाग मिलाकर जोकूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें । प्रातः और रात्रिको ।

उपयोग—यह सूतिका दशमूल सूतिकाके दाहसह ज्वरको शमन करता है । वमन, अतिसार, श्वास आदि उपद्रव हों तो उनका भी यह दमन करता है अन्त्रमें आम विष तथा गर्भाशयमें विष रहा हो, उनको जलाता है ।

१६१. सूतिका रोगान्तक कषाय

रास्ना, कूठ, खरैंटी बीज, त्रायमाण,
देवदारु, सोया, निर्गुण्डी बीज, छोटी कटेली,
इन्द्रायन, गोखरू, बिधारा. बड़ी कटेली,
दारुहल्दी, हरड़, गोरखमुण्डी, अमलतास गूदा,
अतीस कडुवा, ब्राह्मी, निसोथ, बायविडङ्ग,
पिप्पलामूल, वासापत्र, सोंठ, नीमकी अंतरछाल,
चित्रकमूल, पियावांसामूल, अरणीमूल, पटोलपत्र,
भारंगी, गिलोय, फिटकरी फूला, इन्द्रजौ कडुवा,
हल्दी, नागरमोथा, अनन्तमूल, लहसुन,

कुटकी,	धमासा,	शतावरी,	गूगल,
पुष्करमूल.	अरणी,	चिरायता,	प्रसारणी,
निर्गुण्डीमूल,	पुनर्नवा,	पिप्पली,	
खुरासानी अजवायन,	पाठा,	खस,	(आ० नि० मा०)

विधि—उक्त ५० औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

वक्तव्य—गुजरातमें ६५-६५ ग्रामकी ४ मात्रा बनाते हैं। १ मात्राको ६०० ग्राम जलमें उबालकर १०० ग्राम शेष रहने पर छान लें। शीतल होनेपर १० ग्राम शहद मिलाकर पिला देवें।

उक्त औषधिको ३॥ दिन तक ७ बार उबालते हैं। प्रातः और रात्रिको पिलाते हैं। फिर उक्त औषधिके शेष रहे हुए निःसत्व कूड़ेके साथ दूसरी मात्राकी ६५ ग्राम औषधि मिलाते हैं। उसे ८०० ग्राम जलमें उबालते रहते हैं और ७ बार देते हैं। पुनः उस कूड़ेके साथ तीसरी मात्रा और फिर चौथी मात्रा मिलाकर उक्त विधिसे क्वाथ कमके सेवन कराते हैं। तीसरी मात्रा मिलानेपर जल १ किलो लेते हैं और चौथी मात्रा मिलाने पर जल १२२५ ग्राम लेते हैं। इस तरह १४ दिनमें २५० ग्राम औषधिका क्वाथ देते हैं। यह उचित प्रतीत हो तो उस तरह प्रयोग करें। अन्यथा शास्त्रीय विधि अनुसार सेवन करावें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथ १० ग्राम शहद मिलाकर पिलावें। प्रातःकाल और रात्रिको। १४ दिन तक अथवा अधिक दिन तक।

उपयोग—इस सूतिका रोगान्तक कषायके सेवनसे प्रसूताका ज्वर, वातप्रकोप, घबराहट, वमन, अतिसार, सर्वाङ्ग शोथ, गर्भाशयमें वेदना, संधिस्थानोंकी जकड़ाहट, कटिवेदना आदि सब उपद्रव निर्मूल हो जाते हैं। नये और पुराने रोग दोनोंपर यह व्यवहृत होता है।

गुजरातमें कई चिकित्सक केशरादि वटीके साथ अनुपान रूपसे इस क्वाथकी योजना करते हैं।

केशरादि वटी—केशर, काली मिर्च, चित्रकमूल, जायफल, जावित्री, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध बच्छनाग और अभ्रकभस्म ये ८ औषधियां १०-१० ग्राम एरण्ड तैलसे शोधित कुचिला ४० ग्राम लें। सबको कूट कपड़छान चूर्णकर बंगला पानके स्वरस में १२ घण्टे खरल करके १०० मि० ग्रा० की गोलियां बनावें। १-१ गोली दिनमें २ बार अदरखके रस और शहदके साथ देवें। ऊपर उक्त क्वाथ पिलावें।

१६२. स्तन्यजनन कषाय

वीरण-शालि-षष्टिकेक्षुवालिका-दर्भ-
कुश-काश गुन्द्रेत्कटकत्तृणमूलानीति।
दशेमानि स्तन्यजननानि भवन्ति॥ (च० सं०)

खस, इक्षुमूल, कुशमूल, रोहिषतृण,
शालिधानमूल, दर्भमूल, कांस,
षष्टिक (सांठीधान्यमूल), काशमूल, इत्कट (वनजयन्ती)

विधि—उक्त १० औषधियोंको महर्षि आत्रेयने स्तन्यजनन महाकषाय संज्ञा दी है। इनमेंसे जो औषधियां मिलें उनको मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—४०-४० ग्रामका क्वाथ करके पिलावें दिनमें २ बार।

उपयोग—इस स्तन्यजनन कषायके सेवनसे सूतिका और छोटे बच्चे वाली माताको दूध बढ जाता है।

१६३. स्तन्यशोधन कषाय।

पाठा-महौषध-सुरदारुमुस्त-मूर्वा-गुडूची-वत्सकफल-किरात-तिक्तक-कटुरोहिणी सारिवा चेति दशेमानि स्तन्यशोधनानि भवन्ति

पाठा, नागरमोथा, इन्द्रजौ, अनन्तमूल,

सोंठ, मूर्वा, चिरायता, तगर,
देवदारू, गिलोय, कुटकी,

वक्तव्य—मूल कषायकी १० औषधियोंके अतिरिक्त तगर गुणवृद्धिकी दृष्टिसे बढ़ाया है। उक्त औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१० से २० ग्रामका क्वाथकर छोटे बच्चेकी माताको पिलाते रहें। प्रातः और रात्रिको सोनेके समय।

उपयोग—इस स्तन्यशोधन कषायका सेवन करनेसे स्तन्यकी शुद्धि होती है जिससे बालक स्वस्थ और सबल बन जाता है।

१६४. हरिद्रादि कषाय

हरिद्राद्वय यष्ट्याह्व सिंही-शक्रयवैः कृतः।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नः कषायः स्तन्यदोषजित् ॥ (वृ०मा०)

हल्दी, दारुहल्दी: मुलहठी, बड़ी कटेलीकी जड़ इन्द्रजौ,

विधि—उक्त ५ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२ से ४ ग्रामका क्वाथकर पिलावें दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह हरिद्रादि कषाय बालकोंके ज्वर अतिसार और स्तन्य विकारको दूर करता है।

१६५ हरीतक्यादि कषाय

हरीतकी-नागर देवदारु-पुनर्नवाच्छिन्नरुहाकषायः।
सगुग्गुलुर्मूत्रयुतन्तु पेयः शोथोदराणां प्रवरः प्रयोगः ॥ (भै०र०)

हरड़, सोठ, देवदारु, पुनर्नवा लाल, गिलोय।

विधि—उक्त ५ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथकर उसमें शुद्ध गूगल ४-४ मि. ग्रा. और २५-२५ ग्राम गोमूत्र मिलाकर पिलावें। दिनमें २ वा तीन बार।

उपयोग—यह हरीतक्यादि कषाय शोथोदर, जलोदर और सर्वाङ्ग शोथको दूर करनेमें श्रेष्ठ उपाय है।

१६६. हिंग्वादि कषाय

हिंगु-नागर-शठी-सुवर्चलं-दारु-पौष्कर-घनं पुनर्नवा।
क्वाथपानमिति शूलिनां हितं पाचनं जठर गुल्मिनामपि॥
(हा० स०)

हींग, सोंठ, कचूर, देवदारु, पुष्करमूल, नागरमोथा, पुनर्नवाकीजड़।

विधि—उक्त ७ औषधियों को समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर प्रक्षेप रूपसे कालानमक १ ग्राम मिलाकर पिलावें। दिनमें २ बार प्रातः और रात्रिको।

उपयोग—यह हिंग्वादि कषाय उदरशूल, वातजगुल्म और उदररोगीके लिए हितावह और पाचन है।

१६७. ह्रीबेरादि कषाय (रक्तपित्त)

ह्रीबेरं धान्यकं शुण्ठी चन्दनं मधुयष्टिका।
वृषोशीरयुतः क्वाथः शर्करा मधुयोजितः॥
रक्तपित्तं जयत्युग्रं तृष्णां दाहं ज्वरं तथा॥ (यो०र०)

नेत्रवाला, सोंठ, मुलहठी, खस।
धनिया, रक्त चन्दन, वासापत्र,

विधि—उक्त ७ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौकूट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-२० ग्रामका क्वाथकर छान, शीतल होनेपर मिश्री और शहद मिलाकर पिलावें।

उपयोग—यह ह्रीबेरादि कषाय रक्तपित्त, उग्र तृषा, दाह, ज्वर और व्याकुलताका नाश करता है। ऊर्ध्व और अधो दोनो प्रकारके रक्तपित्तमें यह हितावह है।

१६८. ह्रीबेरादि कषाय (सगर्भाका ज्वरातिसार)

ह्रीबेरारणि-रक्त चन्दन-बला धन्याक वत्सादनी ।
मुस्तोशीर-यवास-पर्पट-विषाक्वाथं पिबेद् गर्भिणी ।
नाना दोष युतातिसारकगदे रक्तस्रुतौ वा ज्वरे
योगोऽयं मुनिभिः पुरा निगदितः सूत्यामये शस्यते ।।(च.द.)

नेत्रवाला, बला (खरैंटी) मूल, नागरमोथा, पित्तपापड़ा
अरणी मूल, धनिया, खस, अतिविष कड़वा।
रक्तचन्दन, गिलोय, जवासा,

विधि—उक्त ११ औषधियोंको समभाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथ करें दिनमें ३ बार पिलावें।

उपयोग—यह ह्रीबेरादि कषाय सगर्भा और प्रसूताके लिए हितावह है । इसके सेवनसे सगर्भा और प्रसूताके विविध दोष-प्रधान अतिसार, रक्तस्राव और ज्वरादि दूर होते हैं ।

१६९. ह्रीबेरादि कषाय (सगर्भाका कुक्षिशूल)

ह्रीबेरातिविषा-मुस्ता-मोच-शक्रैः शृतं जलम् ।
दद्यादगर्भे प्रचलिते प्रदरे कुक्षिरुज्यपि ।। (बृ० नि० र०)

नेत्रवाला, अतीस कड़वा, नागरमोथा, मोचरस, इन्द्रजौ कड़वा।

विधि—उक्त ५ औषधियोंको सममाग मिलाकर जौ कूट चूर्ण करें ।

मात्रा—१०-१० ग्रामका क्वाथकर पिलावें । दिनमें ३ बार।

उपयोग—यह ह्रीबेरादि कषाय सगर्भाका गर्भ विचलित होना, श्वेत प्रदर और कुक्षिशूल चलना, आदि विकारोंमें हितावह है ।

महर्षि चरकाचार्य द्वारा वर्णित कषाय-संग्रह

पञ्चकषाययोनय इति—मधुरकषायोऽम्लकषायः कटुकषाय तिक्तकषायः कषायकषायश्चेति तन्त्रे संज्ञा ॥

चिकित्सा शास्त्रमें कषायोंकी ५ योनियां मानी गई है-१ मधुर कषाय, २-अम्ल कषाय, ३-कटुकषाय, ४-तिक्त कषाय ५ कषाय कषाय. । ❀

रसा लवणवर्ज्याश्च कषाया इति संज्ञिताः ।
तस्मात्पञ्चविधा योनिः कषायाणामुदाहृता: ॥

मधुरादिकोंका तो अकेलोंका कल्क स्वरस आदि बनाये जा सकते हैं किन्तु अकेले लवणके नहीं बनाये जाते ।

पञ्चविधं कषायकल्पनं इति तद्यथा—स्वरसः कल्कः शृतः, शीतः फाण्टः कषायश्चेति तेषां यथापूर्वं बलाधिक्यं, अतः कषायकल्पना व्याध्यातुरबलापेक्षिणी । न त्वेवं खलु सर्वाणि सर्वत्रोप योगीनि भवन्ति ।

कषायों (क्वाथों) की कल्पना ५ प्रकार की है—जैसे स्वरस कल्क, शृत, शीत और फाण्ट । इनमें पूर्व पूर्वमें कार्यकर शक्ति की बहुलता होती है । जैसे क्वाथसे फाण्ट अधिक गुरु होता है। फाण्ट से शीत, शीतसे शृत और शृतसे कल्क तथा कल्कसे स्वरस अधिक शक्तिशालि व भारी होता है ।

स्वरसादिके लक्षण—

❀ टिप्पणी—"मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायाः" इस वचनसे यद्यपि रस तो छः प्रकारके माने गये हैं और उन्हींके अनुसार कषायोंकी योनियां निर्धारित की गई हैं, किन्तु वे संख्यामें ६ न होकर ५ ही है । यहांपर लवणको छोड़ दिया गया है । क्योंकि मधुरादिकोंका तो पृथक् व अकेले भी उपयोग होता है किन्तु केवल लवणका अकेला उपयोग नहीं होता । किसी अन्यके साथ मिलाकर ही प्रयोग करते हैं ।

स्वो रसः स्वरसः प्रोक्तः कल्को दृषदि पेषितः ।
क्वथितस्तु शृतः शीतः शर्वरीमुषितो मतः ॥
क्षिप्तोष्णतोये मृदितः फाण्ट इत्यभिधीयते ।

ताजा औषधको पीसकर अथवा मसल, निचोड़कर निकाले हुए रसको स्वरस—तथा पत्थरपर पीस लेनेपर कल्क कहते हैं। पकानेको शृत (क्वाथ), और रात्रिमें गलाये हुयेको शीत तथा गर्म जलमें डालकर मसले हुयेको फाण्ट कहते हैं।

ऊपरके वचनसे 'कषाय' शब्द स्वरस आदि सभी शब्दोंके साथ जोड़ा जाकर स्वरस आदि पांचों ही कषाय कहलाते हैं।

इनकी पूर्वोत्तर गुरुतरता है, अतः इन सभी कषायोंकी कल्पना रोग तथा रोगीके बलपर निर्भर है। इस प्रकार से सभी कषाय सब जगह उपयोगी नहीं होते।

'पञ्चाशन्महाकषाया इति' यदुक्तः—तदनुव्याख्यास्यामः'— तद्यथा—जीवनीयो बृंहणीयो लेखनीयो भेदनीयः सन्धानीयो दीपनीय इति षट्कः कषायवर्गः।

बल्यो वर्ण्यः कण्ठ्यो हृद्य इति चतुष्कः कषायवर्गः। तृप्तिघ्नोऽर्शोघ्नः कुष्ठघ्नः कण्डूघ्नः क्रिमिघ्नो विषघ्न इति षट्कः कषायवर्गः। स्तन्यजननः स्तन्यशोधनः शुक्रजननः शुक्रशोधनः इतिचतुष्कः कषायवर्गः। स्नेहोपगः स्वेदोपगो वमनोपगो विरेचनोपग आस्थापनोपगोऽनुवासनोपगः शिरोविरेचनोपग इति सप्तकः कषायवर्गः। पुरीषसंग्रहणीयः पुरीषविरजनीयो, मूत्रसंग्रहणीयो, मूत्रविरजनीयो, मूत्रविरेचनीय इतिपञ्चकः कषायवर्गः। छर्दिनिग्रहणस्तृष्णानिग्रहणो हिक्कानिग्रहण इति त्रिकः कषायवर्गः। कासहरः श्वासहरः शोथहरो, ज्वरहरः श्रमहरः इतिपञ्चकः कषायवर्ग। दाहप्रशमनः शीतप्रशमन उदर्द प्रशमनोऽङ्गमर्द प्रशमनः शूलप्रशमन इतिपञ्चकः कषायवर्गः।

शोणितस्थापनो वेदनास्थापनः संज्ञास्थापनः प्रजास्थापनो वयः स्थापन इतिपंचक कषायवर्गः ।

इति पञ्चाशन्महाकषाया महतां च कषायाणां लक्षणोदाहरणार्थं व्याख्याता भवन्ति ।

जैसे कि—जीवनीय, बृंहणीय, लेखनीय, भेदनीय, सन्धानीय और दीपनीय, यह छः से बना हुआ कषायवर्ग है ।

बल्य, वर्ण्य, कण्ठ्य और हृद्य यह चारसे बना हुआ कषायवर्ग है ।

तृप्तिघ्न, अर्शोघ्न, कुष्ठघ्न, कण्डूघ्न, क्रिमिघ्न और विषघ्न यह, छः से बना कषायवर्ग है ।

स्तन्य जनन, स्तन्य शोधन, शुक्रजनन, शुक्रशोधन यह चारसे बना कषाय वर्ग है ।

स्नेहोपग (स्नेहपानमें सहायता करनेवाला) स्वेदोपग, वमनोपग, विरेचनोपग, आस्थापनोपग अनुवासनोपग तथा शिरोविरेचनोपग यह सातसे बना कषायवर्ग है ।

छर्दिनिग्रहण, तृष्णानिग्रहण, हिक्कानिग्रहण यह तीनसे बना कषायवर्गहै ।

पुरीष संग्रहणीय, पुरीष विरजनीय (मलके दोष संचयको नष्ट करनेवाला), मूत्रसंग्रहणीय, मूत्रविरजनीय तथा मूत्रविरेचनी यह, पांचका बना कषायवर्ग है ।

कासहर, श्वासहर, शोथहर, ज्वरहर, श्रमहर यह पांचों का कषायवर्ग है । दाहप्रशमन, शीतप्रशमन, उदर्दप्रशमन, अङ्गमर्दप्रशमन, और शूल प्रशमन यह पांचका बना कषायवर्ग है ।

शोणितास्थापन, वेदनास्थापन, संज्ञास्थापन, प्रजास्थापन और वयः स्थापन यह पांचका बना कषायवर्ग है ।

इस प्रकार ये ५० महा कषाय, बड़े कषायोंके लक्षणोंके उदाहरणके रूपमें कहे गये हैं।

तेषामेकैकस्मिन् महाकषाये दश दशावयविकान् कषायाननुव्याख्यास्यामः, तान्येव पञ्चकषायशतानि भवन्ति।

इनमेंसे प्रत्येक महाकषायमें दश-दश अन्तर्गत कषायोंको बतलायेंगे। ये इस प्रकारसे ही ५०० कषाय होते हैं।

जीवनीयो (प्राणधारकः) दशको महाकषायः—

तद्यथा—जीवकर्षभकौ, मेदामहामेदा, काकोलीक्षीरकाकोलीमुद्गपर्णीमाषपर्ण्यौ जीवन्ती मधुकमिति दशेमानि जीवनीयानि भवन्ति ॥१॥

जैसे कि—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी माषपर्णी, जीवन्ती और मुलहठी इस प्रकार दश प्राणधारक होती हैं।

बृंहणीयो दशको महाकषाय—

क्षीरिणी राजक्षवका श्वगन्धाकाकोली क्षीरकाकोली वाटयायनी भद्रौदनी भारद्वाजी पयस्यर्ष्यगन्धा इति दशेमानि बृंहणीयानि भवन्ति ॥६॥

क्षीरविदारी, गोरखवूधी, असगन्ध, काकोली, क्षीरकाकोली सफेद फूलवाली खरेंटी, पीले फूलकी खरेंटी, विदारीकंद और विधारा ये दश पौष्टिक होते हैं।

लेखनीयो दशको महाकषायः-मुस्तककुष्ठ हरिद्रादारुहरिद्राबचातिविषाकटुगोहिणीचित्रक चिरबिल्ब हैमवत्य इति दशेमानि लेखनीयानि भवन्ति ॥३॥

नागरमोथा, कूठ, हल्दी, दारुहल्दी, वच, अतीस, कुटकी, चित्रक, चिरबिल्व (करञ्ज) और सफेदवचा इस प्रकार ये १० लेखनीय हैं। (लेखनीय दोषोंको खुरचकर उखाड़नेवाली)

भेदनीयो दशको महाकषायः—सुवहार्कोरुबूकाग्निमुखीचित्रा

चित्रक चिरबिल्व शङ्खिनी शुक्लादनी स्वर्णक्षीरिण्य इति दशेमानि भेदनीयानि भवन्ति ।४॥

निशोथ, आक, लाल एरण्डके बीज कलिहारी, दन्ती, चित्रक, चिरबिल्व (करञ्ज), शङ्खिनी (यवतिक्ता) कुटकी और स्वर्णनाशी ये दश भेदनीय (मलको भेदन करनेवाला) होती हैं ।

सन्धानीयो दशको महाकषाय—मधुकमधुपर्णीपृश्निपर्ण्यम्बष्ठकी समङ्गामोचरस धातकी लोध्र प्रियङ्गु कट्फलानीति दशेमानि सन्धानीयानि भवन्ति ॥५॥

मुलहठो, गिलोय पिठवन, पाढ, लजवन्ती, सेमलका गोंद, धायके फूल, लोध, फूल प्रियंगु, कायफल ये दश संधान करने वाली होती हैं ।

दीपनीयो दशको महाकषायः—पिप्पलीपिप्पलीमूल चव्य-चित्रकशृङ्गवेराम्लवेतसमरिचाजमोदाभल्लातकास्थिहिङ्गु निर्यासा इति दशेमानि दीपनीयानि भवन्ति ॥६॥

इति षट्कः कषायवर्गः ॥६॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक सोंठ, अम्लवेत, काली मिर्च, अजमोद, भिलावेकी मींगी और हींग ये दश दीपनीय (अग्नि प्रदीप्त करने वाली) कषाय कल्पना है । यह छः का बना कषायवर्ग है ।

बल्यो दशको महाकषायः-ऐन्द्र्यृषभ्यतिरसर्ष्यप्रोक्तापयस्याश्वगन्धास्थिरारोहिणी बलातिबला इति दशेमानि बल्यानि भवन्ति ॥७॥

गोरख ककड़ी, कौंच, शतावरी, माषपर्णी क्षीरविदारी, असगन्ध, शालपर्णी रोहिणी (जटामांसी), खरैंटी और कघी ये दश बल्य (बलप्रद) होती हैं ।

वर्ण्यो दशको महाकषायः–चन्दनतुङ्गपद्मकोशीरमधुकमञ्जिष्ठासारिवापयस्या सितालता इति दशेमानि वर्ण्यानि भवन्ति ॥८॥

श्वेत चन्दन-नाग केशर, पद्माख, खस, मुलहठी, मंजीठ, सारिवा, बिदारी, सफेद दूब, हरी दूब ये दश वर्ण्य (शरीरका रंग बढ़ानेवाली) मानी गई हैं ।

कण्ठ्यो दशको महाकषायः—सारिवेक्षुमूल मधुक पिप्पली द्राक्षा विदारी कट्फल हंसपादी बृहतीकण्टकारिका इति दशेमानि कण्ठ्यानि भवन्ति । ९ ।

सारिवा, ईखकी जड, मुलहठी, पीपल, दाख, बिदारी, मीठा नीम, हंसराज, बड़ी कटेरी और छोटी कटेरी, ये दश कण्ठ्य (कण्ठसुधारक) होती हैं ।

हृद्यो दशको महाकषायः—आम्राम्रातक लिकुचकरमर्द वृक्षाम्लाम्लवेतसकुवल बदरदाडिम मातुलुङ्गानीति दशेमानि हृद्यानि भवन्ति । १० ।

इति चतुष्कः कषायवर्गः ।।

आम, अम्बाड़ा, बड़हल, करौंदा, कोकम, अम्लवेत, बड़ाबेर (या सेव) छोटेबेर, मीठे दाड़िम और बिजौरा (या बड़ा नींबू-चोमम्पो आदि), ये दश हृदयको प्रिय लगनेवाली है। यह चारसे बना कषायवर्ग हुआ ।

तृप्तिघ्नो दशको महाकषायः—नागर चव्य चित्रक विडङ्ग-मूर्वा गुडूचीवचा मुस्तपिप्पली पटोलानीति तृप्तिघ्नानि भवन्ति ११।

सोठ, चव्य, चित्रक, वायविडंग मूर्वा, गिलोय, वच, नागरमोथा, पीपल तथा पटोलपत्र ये दश तृप्तिघ्न (तृप्तिको दूर करने वाले) माने गये हैं ।

अर्शोघ्नो दशको महाकषायः—कुटजबिल्वचित्रकनागराति-विषाभयाधन्वयासक दारुहरिद्रा वचाचव्यानीति दशेमान्यर्शोघ्नानि भवन्ति ।।१२।।

कूड़ाछाल, बेलफल, चित्रक, सोंठ, अतीस, हरड़, धमासा, दारुहल्दी, वच, चव्य, ये दश अर्शोघ्न (अर्श नाशक) होते हैं।

कुष्ठघ्नो दशको महाकषायः—खदिराभयामलक हरिद्रा-रुष्कोरसप्तपर्णारग्वधकरवीरविडङ्ग जातिप्रवाला इति दशेमानि कुष्ठघ्नानि भवन्ति ॥१३॥

खैर, हरड़, आमला, हल्दी, भिलावा, सतौना, अमलतास, कनेर, वायविडंग और चमेलीके ताजा पत्ते ये दश कुष्ठघ्न (कोढ़ नाशक) होते हैं।

कण्डूघ्नो दशको महाकषायः—चन्दननलदकृतमालनक्त-माल निम्बकुटजसर्षप मधुकदारुहरिद्रा मुस्तानीति दशेमानि कण्डूघ्नानि भवन्ति ॥१४॥

चन्दन-जटामांसी, अमलतास, करञ्ज, नीम, कूड़ाछाल, सरसों, मुलहठी, दारुहल्दी, नागरमोथा ये दश कण्डूघ्न (खुजली नाशक) होते हैं।

कृमिघ्ना दशको महाकषायः—अक्षीबमरिचगण्डीर केबुक बिडङ्ग निर्गुण्डीकिणिहीश्वदंष्ट्रावृषपर्णिकाखुपर्णीका इति दशेमानि क्रिमिघ्नानि भवन्ति ॥१५॥

सहिजनेके बीज, कालीमिर्च गण्डीर, (मजीठ), केबुक, बायविडंग, नेगड़, कटभी (गुज. वाय पुंवा) गोखरु, वृषपर्णी (छोटी मेंढासिंगी) तथा मूषाकर्णी ये दश क्रिमिघ्न (कीट-नाशक) होती।

विषघ्नो दशको महाकषायः—हरिद्रामञ्जिष्ठा सुवहा सूक्ष्मै-लापालिन्दीचन्दनकतकशिरीषसिन्धुवारश्लेष्मातका इति दशे-मानि विषघ्नानि भवन्ति ॥१६॥ इतिषट्कः कषायवर्गः ॥

हल्दी, मजीठ, निशोथ, छोटी इलायची, काला निशोथ, चंदन, निर्मली, सिरस, नेगड़, लिसोड़ा, ये दश विष नाशक होते हैं। यह छः से बना कषायवर्ग हुआ।

स्तन्यजननो दशको महाकषायः—वीरणशालिषष्टिकेक्षुबालिकादर्भकुशकाशगुन्द्रेत्कटकत्तृणमूलानीति दशेमानि स्तन्यजननानि भवन्ति ।। १७ ।।

खस, शालिधान्य, साँठीधान्य, इक्षुवालिका (ईख भेद), दर्भ कुश, कास, गुन्द्रा, इत्कट (शरभेद) और कत्तृण (रोहिष घास) इनके मूल, ये दश स्तन्यजनक (मातृदुग्ध उत्पादक) माने गये हैं।

स्तन्यशोधनो दशको महाकषायः—पाठामहौषधसुरदारुमुस्तमूर्वागुडूचीवत्सकफलकिराततिक्तकटुरोहिणीसारिवा इति दशेमानि स्तन्यशोधनानि भवन्ति ।। १८ ।।

पाठा, सोंठ, देवदारु, नागरमोथा, मूर्वा, गिलोय, इन्द्र जौ, चिरायता, कुटकी और सारिवा ये दश स्तन्य शोधक (मातृदुग्ध शुद्ध करनेवाले) माने गये हैं।

शुक्रजननो दशको महाकषायः—जीवकर्षभककाकोलीक्षीरकाकोलीमुग्दपर्णीमेदावृद्धरुहाजटिला-कुलिङ्गा इति दशेमानि शुक्रजननानि भवन्ति ।। १९ ।।

जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, मूंगपर्णी, वन्य-उड़द, मेदा, शतावरी, जटामांसी, उटिंगण, ये दश वीर्यउत्पादक मानी गई हैं।

शुक्रशोधनो दशको महाकषायः—कुष्ठैलवालुककंट्फलसमुद्रफेन, कदम्बनिर्यासेक्षुकाण्डेक्षु इक्षुरक वसुकोशीराणीति दशेमानि शुक्रशोधनानि भवन्ति ।। २० ।। इति चतुष्कः कषायवर्गः ।

कूठ, एलुवालुक (आलू बालू), कायफल, समुद्रझाग, कदम्ब का गोंद, छोटा गन्ना, पोंडा गन्ना, तालमखाना, साटोड़ी और खस, ये दश वीर्यशोधक होती हैं। यह चारसे बना कषायवर्ग है।

स्नेहोपगो दशको महाकषायः-मृद्विकामधुपर्णीमेदाविदारीकाकोलीक्षीरकाकोलीजीवकजीवन्ती शालपर्ण्य इति दशेमानि-

स्नेहोपगानि भवन्ति ।। २१ ।।

मुनक्का, मुलहठी, गिलोय, मेदा, विदारी, काकोली, क्षीर काकोली, जीवक, जीवन्ती और शालपर्णी, ये दश औषधियां स्नेहपानमें सहायक होती हैं।

स्वेदोपगो दशको महाकषाय:—शोभाञ्जनकैरण्डार्कवृश्चीर पुनर्नवा यवतिलकुलत्थमाषबदराणीति दशेमानि स्वेदोपगानि भवन्ति ।। २२ ।।

सहिजना, एरंड, आक, श्वेत पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, जौ, तिल, कुलथी, उड़द और बेर, ये दश स्वेदल औषधियां (स्वेदोपचार) में सहायक होती हैं।

वमनोपगो दशको महाकषाय:—मधुमधुककोविदारकर्बुदार नीपविदुलबिम्बीशणपुष्पीसदापुष्पी प्रत्यक्पुष्पी इति दशेमानि वमनोपगानि भवन्ति ।। २३ ।।

शहद, मुलहठी, सफेद कांचनार, चित्रविचित्र फूलवाला कांचनार, कदम्ब, सातला (या जल बेंत), कन्दूरी-शणपुष्पी, आक, चिरचिटा, ये दश वमनकारक द्रव्योंमें सहायक होते हैं।

विरेचनोपगो दशको महाकषाय:—द्राक्षकाश्मर्यपरुषका-भयामलकबिभीतककुवलबदरकर्कन्धुपीलूनीति दशेमानि विरेचनोपगानि भवन्ति ।। २४ ।।

दाख, गम्भारी, फालसा, हरड़, आंवला, बहेड़ा बड़े बेर, बेर, झड़ बेर और पीलू ये दश विरेचक द्रव्योंके सहायक होते हैं।

आस्थापनो दशको महाकषाय:—त्रिवृद्बिल्वपिप्पलीकुष्ठ सर्षपवचावत्सकफलशतपुष्पा मधुकमदनफलानीति दशेमान्या-स्थापनोपगानि भवन्ति ।। २५ ।।

निशोथ, बिल्व, पीपल, कूठ, सरसों, वच, इन्द्र जौ, सौंफ, मुलहठी तथा मैनफल, ये दश औषधियां आस्थापन बस्तिकी सहायक होती हैं।

अनुवासनो दशको महाकषाय:—रास्नासुरदारु बिल्वमदन शतपुष्पावृश्चीर पुनर्नवाश्वदंष्ट्राग्निमंथश्योनाका इति दशेमानि अनुवासनोपगानि भवन्ति ।।२६।।

रास्ना, देवदारु, बिल्व, मैनफल, सौंफ, श्वेत पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, गोखरु, अरणी और टेंटू ये दश अनुवासन-बस्तिमें सहायक होते हैं।

शिरोविरेचनो दशको महाकषाय:—ज्योतिष्मती क्षवक-मरिच पिप्पलीविडङ्गशिग्रु सर्षपापामार्गतण्डुल श्वेतामहाश्वेता इति दशेमानि शिरोविरेचनोपगानि भवन्ति ।।२७।। इति सप्तक: कषायवर्ग: ।

मालकांगनी, नकछिकनी, कालीमिर्च, पीपल, बायविडंग, सहिजना, सरसों, चिरचिटेके बीज, सफेद कोयल, सफेद सिरस ये दश, शिरके मलको निकालनेमें सहायक होती हैं। यह सात से बना हुआ कषायवर्ग है।

छर्दिनिग्रहणो दशको महाकषाय:—जम्ब्वाम्रपल्लवमातुलुङ्गाम्लबदरदाडिमयवषष्टिकोशीर मृल्लाजा इति दशेमानि छर्दिनिग्रहणानि भवन्ति ।।२८।।

जामुनके पत्ते, आमके पत्ते, बिजौरा, खट्टे बेर, दाड़िम, जौ, साँठी चावल, खस, मिट्टी और शाली चांवलकी धानी ये दश वमनरोधक होते हैं।

तृष्णानिग्रहणो दशको महाकषाय:—नागरधन्वयवासकमुस्तपर्पटकचन्दनकिराततिक्तकगुडूचिह्रीबेरधान्यक पटोलानीति दशेमानि तृष्णानिग्रहणानि भवन्ति ।।२९।।

सोंठ, धमासा, मोथा, पित्तपापड़ा, चन्दन, चिरायता, गिलोय, सुगन्धबाला, धनिया और परवल ये दश तृषाशामक होते हैं।

हिक्कानिग्रहणो दशको महाकषाय:—शठीपुष्करमूलबदर-बीजकण्टकारिकाबृहतीवृक्षरुहाभयापिप्पलीदुरालभाकुलीरशृ-

ङ्गच इति दशेमानि हिक्कानिग्रहणानि भवन्ति ॥३०॥ इति-त्रिकः कषायवर्गः ।

कचूर, पोखरमूल, बेरकी गुठली, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, बांदा, हरड़, पीपल, धमासा और काकड़ासिंगी ये दश हिक्का-निग्रह करने वाली औषधियाँ हैं। यह तीनसे बना कषायवर्ग है।

पुरीषसंग्रहणीयो दशको महाकषायः—प्रियङ्ग्वनन्ताम्रा-स्थिकट्वङ्गलोध्रमोचरस समङ्गाधातकीपुष्पपद्मापद्मकेशरा-णीति दशेमानि पुरीषसंग्रहणीयानि भवन्ति ॥३२।

प्रियंगु, सारिवा, आमकी गुठली, अरलू लोध, सेमलका गोंद, लजवन्ती, धायके फूल, भारंगीमूल और कमलकेशर ये दश मलसंचयकारक हैं।

पुरीषविरजनीयो दशको महाकषायः—जम्बुशल्लकीत्वक्-कच्छुरामधुकशाल्मली श्रीवेष्टक भृष्टमृत्पयस्योत्पल तिलकणा इति दशेमानि पुरीषविरजनीयानि भवन्ति ॥३२॥

जामुन, कुन्दरुकी छाल, कौंच, मुलहठी, सेमल, बिरोजा, भुनी मिट्टी, विदारी, नीलोफर और छिल्टे रहित तिलके दाने ये दश मल रञ्जक माने गये हैं।

मूत्रसंग्रहणीयो दशको महाकषायः जम्ब्वाम्रप्लक्षवटक-पीतनोडुम्बराश्वत्थभल्लातकाश्मन्तकसोमवल्का इति दशेमानि मूत्र संग्रहणीयानि भवन्ति ॥३३॥

जामुन. आम, पिलखन, बड़, पारस पीपल, गूलर, पीपल, भिलावा, अश्मन्तक, (झिझौरा, म० आप्टा), सफेद खैर ये दश मूत्र संचयकर्त्ता माने गये हैं।

मूत्रविरजनीयो दशको महाकषायः—पद्मोत्पलनलिनकुमुद सौगन्धिकपुण्डरीकशतपत्रमधुकप्रियङ्गु धातकीपुष्पाणीति दशे-मानि मूत्रविरजनीयानि भवन्ति ॥३४॥

रक्तपद्म, नीलोफर, नलिन, रात्रि कमल, सुगन्ध पद्म,

श्वेत पद्म. शतपत्र कमल, मुलहठी, प्रियंगु और धायके फूल, ये दश मूत्ररञ्जक होते हैं।

मूत्रविरेचनीय दशको महाकषायः—वृक्षादनीश्वदंष्ट्रावसुकवशिरपाषाणभेददर्भकुशकाश गुन्द्रेत्कटमूलानीति दशेमानि मूत्रविरेचनीयानिभवन्ति ।।३५। इति पञ्चकः कषायवर्गः ।।

(अमरबेल) बाँदा, गोखरु, पुनर्नवा, अपामार्ग, पाषाणभेद, दर्भ, कुशा, कास, गांदल, और इत्कटकी मूल, ये दश मूत्रल होती हैं। यह पांचसे बना कषायवर्ग है।

कासहरो दशको महाकषायः—द्राक्षाभयामलकपिप्पलीदुरालभाशृङ्गीकण्टकारिकावृश्चीरपुनर्नवा तामलक्य इति दशेमानि कासहराणिभवन्ति ।।३६।

मुनक्का, हरड़, आँवला, पीपल, धमासा, काकड़ासिंगी, छोटी कटेरी, सफेद पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा और भूमिआमला ये दश कासघ्न होते हैं।

श्वासहरो दशको महाकषायः—शटी पुष्करमूलाम्लवेतसैलाहिङ्ग्वगुरुसुरसातालकीजीवन्तीचण्डा इति दशेमानि श्वासहराणि भवन्ति ।।३७।।

कचूर, पोखरमूल, अम्लबेंत, इलायची, हींग, अगरु, तुलसी, भूमि आमला, जीवन्ती और चोरक, इस प्रकार ये दश श्वासघ्न होते हैं।

शोथहरो दशको महाकषायः–पाटलाग्निमन्थश्योनाकबिल्वकाश्मर्यकण्टकारिका बृहतीशालपर्णीपृश्निपर्णी गोक्षुरका इति-दशेमानि श्वयथुहराणि भवन्ति ।।३८।।

पाढला (पाढल), अरणी, स्योनाक, बिल्व, खम्भारी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी और गोखरु, ये दश शोथनाशक होते हैं।

ज्वरहरो दशको महाकषायः—सारिवाशर्करापाठामञ्जिष्ठा-द्राक्षापीलुपरुषकाभयामलकबिभीतकानीति दशेमानि ज्वर-हराणि भवन्ति ।।३९।।

सारिवा, शक्कर, पाठा, मंजीठ, द्राक्षा, पीलू, फालसा, हरड़, आमला और बहेड़ा ये दश ज्वरनाशक माने गये हैं ।

श्रमहरो दशको महाकषायः—द्राक्षाखर्जूरप्रियालबदर-दाडिमफल्गुपरुषकेक्षुयवषष्ठिका इति दशेमानि श्रमहराणि भवन्ति ।।४०।। इतिपञ्चकः कषायवर्गः ।।

मुनक्का, खजूर, चारोली, बेर, अनार, अंजीर, फालसा, ईख (गन्ना), जौ, साठी चावल, दश श्रमनाशक होते हैं । यह पांचसे बना हुआ कषायवर्ग है ।

दाहप्रशमनो दशको महाकषायः—लाजाचन्दनकाश्मर्यफल मधुकशर्करा नीलोत्पलोशीरसारिवागुडूचीह्रीबेराणीति दशे-मानि दाहप्रशमनानि भवन्ति ।।४१।।

चांवलकी धानी, चन्दन, गम्भारीके फल, मुलहटी, शक्कर, नील कमल, खस, सारिवा, नीम गिलोय और सुगन्धबाला ये दश दाहशामक होते हैं ।

शीतप्रशमनो दशको महाकषायः—तगरागुरुधान्यक शृङ्ग-वेरभूतीक वचाकण्टकार्यग्निमन्थश्योनाक पिप्पल्य इति दशे-मानि शीतप्रशमनानि भवन्ति ।।४२।।

तगर, अगर, धनिया, सोंठ, अजवायन, बच, छोटी कटेरी, अरणी, श्योनाक, पीपल. ये दश शीतशामक होती हैं ।

उदर्दप्रशमनो दशको महाकषायः—तिन्दुकप्रियालबदर-खदिर कदरसप्तपर्णाश्वकर्णार्जुनासनारिमेदा इति दशेमानि उदर्दप्रशमनानि भवन्ति ।।४३।

टिंबर (तेंदू), चारोली, बेर, खैर, सफेद खैर, सतौना, शाल, अर्जुन, असन (विजयसार) और अरिमेद (दुर्गन्धवाला खेर), ये दश शीतपित्त शामक माने गये हैं।

अङ्गमर्दप्रशमनो दशको महाकषायः–विदारीगन्धापृश्निपर्णी बृहतीकण्टकारिकैरण्डकाकोली चन्दनोशीरैलामधुकानीति दशेमान्यङ्गमर्दप्रशमनानि भवन्ति । ४४॥

सखिन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, एरण्ड, काकोली चन्दन, खस, छोटी इलायची और मुलहठी ये दश अङ्गमर्द-शामक हैं।

शूलप्रशमनो दशको महाकषायः—पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्य-चित्रकशृङ्गबेरमरिचाजमोदाजगन्धाजाजीगण्डीराणीति दशेमानिशूलप्रशमनानि भवन्ति ॥४५॥ इति पञ्चकः कषायवर्गः॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, कालीमिर्च, अजमोद, अजगन्धा (जंगली अजमोद), जीरा और गण्डीर (थूहर) ये दश शूलशामक होते हैं। यह पांचसे बना हुआ कषायवर्ग है।

शोणितास्थापनो दशको महाकषायः—मधुमधुकरुधिरमोच-रस मृत्कपाललोध्र गैरिकप्रियंगु शर्करालाजा इति दशेमानि शोणितास्थापनानि भवन्ति ॥४६॥

शहद, मुलहठी, केशर, सेमलका गोंद, मिट्टीका खप्पर, लोध, गेरु, गेहूंला, शक्कर और चाँवलकी धानी ये दश रक्त-शोधक होतो हैं।

वेदनास्थापनो दशको महाकषायः—शालकट्फलकदम्बपद्-मकतुम्बमोचरसशिरीषवञ्जुलैलवालुकाशोका इति दशेमानि वेदनास्थापनानि भवन्ति ॥४७॥

साल, कायफल, कदम्ब, पद्माख, तेजबल, सेमलका गोंद, सिरस, वञ्जुल (बेत सादा), एलवालुक (आलू बालू), अशोक ये दश पीड़ा शामक माने गये हैं।

संज्ञास्थापनो दशको महाकषायः—हिंगुकैटर्य्यारिमेदावचाचोरक वयस्थागोलोमीजटिलापलङ्कषाशोकरोहिण्य इति दशेमानि संज्ञास्थापनानि भवन्ति ॥४८॥

हींग, मीठा नीम, दुर्गन्धबाला खैर, बच, चोरक, (ग्रन्थिपर्णभेद), ब्राह्मी, भूतकेशी, जटामांसी, गूगल और कुटकी ये दश संज्ञा स्थापक होती हैं।

प्रजास्थापनो दशको महाकषाय:—ऐन्द्रीब्राह्मी शतवीर्यासहस्रवीर्याऽमोघाव्यथाशिवाऽरिष्टावाट्यपुष्पीविष्वक्सेनकान्ता इति दशेमानि प्रजास्थापनानि भवन्ति ॥४६॥

ऐन्द्री-ब्राह्मी-सफेद दूब, श्याम दूर्वा, अमोघा (लक्ष्मणा), गिलोय, शिवा (हरड़), अरिष्टा (नागबला-गंगेरन), कंघी और फूलप्रियंगु. ये दश संततिस्थापक होते हैं।

वय:स्थापनो दशको महाकषाय—अमृताऽभयाधात्रीमुक्ताश्वेता जीवन्त्यतिरसामण्डूकपर्णीस्थिरा पुनर्नवा इति दशेमानि वय: स्थापनानि भवन्ति ।५०॥ इति पञ्चक: कषायवर्ग: ॥

गिलोय, हरड़, आमला, रास्ना, सफेद विष्णु क्रान्ता, जीवन्ती, शतावरी, मण्डूकपर्णी, सरिवन और पुनर्नवा ये दश आयुस्थापक माने गये हैं। यह पांचसे बना कषायवर्ग है।

इस प्रकार इन पांच सौ कषायोंको संक्षेप करके पचास महा कषाय, बड़े कषायोंके लक्षण व उदाहरणके लिये बता दिये हैं। ये कषाय भिन्न भिन्न कार्य करते हुये, एक एक द्रव्य होनेपर भी अनेक नाम कर्मको प्राप्त होते हैं।

सुश्रुतोक्त कषायवर्ग

विदारिगन्धादिगण:—विदारिगन्धा विदारी विश्वदेवासहदेवी श्वदंष्ट्रापृथक्पर्णीशतावरीसारिवा कृष्णसारिवाजीवकर्षभकौ महासहा क्षुद्रसहा बृहत्यौपुनर्नवैरण्डौ हंसपादीवृश्चिकाल्यृषभी चेति ।।

विदारिगन्धादिरयं गण: पित्तानिलापह: ।।
शोषगुल्माङ्गमर्दोर्ध्वश्वासकासविनाशन: ।।१।।

शालपर्णी, बिदारी कन्द, नागबला, सहदेवी, गोखरु, पृश्निपर्णी, शतावरी, सारिवा, काला सारिवा, जीवक, ऋषभक, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, दोनों कटेरी, साठी, एरंड, हंसपदी, श्वेत पुनर्नवा और कौंच, ये २० औषधियां विदारिगन्धादि कषाय की हैं। यह पित्त तथा वातशामक, राजयक्ष्मा, गुल्म, अंगमर्द, श्वास, कासको नष्ट करती हैं ।।१।।

आरग्वधादिगण:—आरग्वधमदन गोपघण्टाकण्टकी कुटजपाठापाटलामूर्वेन्द्रयवसप्तपर्णनिम्बकुरण्टकदासी कुरण्टक गुडुचीचित्रक शार्ङ्गेष्टाकरञ्जद्वय पटोलकिराततिक्तकानि सुषवी चेति ।।२।।

आरग्वधादिरित्येष गण: श्लेष्मविषापह: ।।
मेहकुष्ठज्वरवमीकण्डूघ्नो व्रणशोधन: ।।

अमलतास, मैनफल, झाड़ी बेर, कण्टकी (बड़ी कटेली), कूड़ा, पाठा, पाटला, मूर्वा, इन्द्रजौ, सतवन, नीम, पीला पियावांसा, नीला सहचर (नीला पियावांसा), नीम गिलोय, चित्रक, काकजंघा, करञ्ज, लताकरञ्ज, पटोलपत्र, चिरायता और करेला ये २१ औषधियां आरग्वधादिगण की हैं। यह श्लेष्म तथा विष को नष्ट करता है, प्रमेह, कुष्ठ, ज्वर, वमन और कण्डूका नाश करता है और व्रण शोधक है ।।२।।

वरुणादिगण :—वरुणार्त्तगलशिग्रुमधुशिग्रुतर्कारीमेष—

शृङ्गी पूतीकनक्तमाल मोरटाग्निमंथसैरेयकद्वयबिम्बीवसुकव-
सिरचित्रक शतावरी बिल्वाजशृङ्गी दर्भा बृहतीद्वयं चेति ॥३॥

वरुणादिर्गणो ह्येष कफमेदोनिवारणः ॥
विनिहन्ति शिरःशूलगुल्माभ्यन्तरविद्रधीन् ॥

वरणा, अर्जुन, बागका सुहिजना, जंगलका सुहिजना, छोटी अरनी, मेढ़ासिंगी, पूति करंज, बड़ा करंज, मूर्वा, अग्निमंथ, दोनों प्रकारके कुरंटक, तिंदूरी, अर्क (या अगस्त), अपामार्ग, चित्रक, शतावरी, बिल्व, अजशृङ्गी, दर्भा और दोनों कटेरी यह वरुणादि गण है। यह कफ व मेदनाशक तथा शिरःशूल, गुल्म और अन्तर्विद्रधिनाशक है।

वीरतर्वादिगणः—वीरतरुसहचरद्वयदर्भवृक्षादनीगुन्द्रानल-कुशकाशाश्मभेदकाग्निमन्थ मोरटावसुकवसिरभल्लूक कुरण्टकेन्दीवरकपोतवङ्काः श्वदंष्ट्रा चेति ॥४॥

वीरतर्वादिरित्येष गणो वातविकारनुत् ।
अश्मरीशर्करामूत्रकृच्छ्राघातरुजापहः ॥४॥

वीरतरु (बेलारु Dichrotachys Cineria), दोनों प्रकारके पियाबांसा, दर्भा, बन्दा, गान्दल तृण, नरसल, कुश, कास, पाषाणभेद, अग्निमंथ, मोरट, वसुक (अगस्त), वसिर (अपामार्ग), श्योनाक, पीतसहचर, नीलकमल, ब्राह्मी और गोखरु, यह वीरतर्वादि गण है। यह वातविकारोंको नष्ट करता है। पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातकी पीड़ाको दूर करता है।

सालसारादिगणः—सालसाराजकर्णखदिरकालस्कन्धक्रमुक-भूर्जमेषशृंगीतिनिशचन्दनकुचन्दनशिशिपाशिरीषासनधवार्जुन तालशाकनक्तमाल पूतिकाश्वकर्णागुरूणि कालीयकं चेति ॥५॥

सालवृक्षका सार, अजकर्ण (सालभेद), खैरसार, कदर (सफेदखैर), काल स्कन्ध (दुर्गंधवाला खैर), सुपारी वृक्ष, भोज-

पत्र, मेंढाशिंगी, (तिनिश, तिवस मराठी नाम, अति दृढ लकड़ी वाला वृक्ष है), श्वेत चन्दन, लाल चन्दन, सीसम, सिरस, विजयसार, धावड़ा, अर्जुन, ताड़, सागवान, करंज, पूति करंज, और लताकरंज, अश्वकर्ण (रालका वृक्ष), अगर, कालागुरु, यह सालसारादि गण है। यह कुष्ठविनाशक है तथा प्रमेह-पाण्डु को नष्ट करता है। कफ तथा मेदका शोषण करता है।

रोध्रादि गणः—रोध्रसावररोध्रपलाशकुटन्नटाशोकफञ्जी कट्फलैलवालुक शल्लकीजिङ्गिनी कदम्बसालाः कदली चेति॥६॥

एष रोध्रादिरित्युक्तो मेदः कफहरो गणः।
योनिदोषहरः स्तम्भी व्रण्यो विषनाशनः।

लोध, पठानी लोध, ढाक, श्योनाक, अशोक, भारंगी, कायफल, एलूआ, बुक (सुगन्धी द्रव्य अभाव या आलु बालु) साल भेद, जिङ्गनी (जिंगन, गुजराती मवेड़ी—Odina wodelr) कदम्ब, साल और कदली यह रोध्रादि गण है। यह मेद व कफ का शोषण करने वाला, योनिके दोषोंको दूर करनेवाला—स्तम्भक, व्रणमें हितकर और विषका नाश करनेवाला है।

अर्कादिगण—अर्कालर्ककरञ्जद्वयनागदन्ती मयूरकभार्गी रास्नेन्द्रपुष्पी क्षुद्रश्वेतामहाश्वेतावृश्चिकाल्यलवणास्तापसवृक्षश्चेति॥७॥

अर्कादिको गणो ह्येषः कफमेदोविषापहः।
कृमिकुष्ठप्रशमनो विशेषाद् व्रणशोधनः॥

आक, सफेद आक, वृक्ष करञ्ज, लता करञ्ज, बड़ी दन्ती, अपामार्ग, भारंगी, रास्ना, कलिहारी, श्वेत अपराजिता, नील अपराजिता, वृश्चिकाली (वहण्टा मराठी बिचुचे झाड़), मालकांगनी और इंगुदी यह अर्कादिगण कफ, मेद, विष, कृमि, कुष्ठको नष्ट करता है। विशेषकर व्रण शोधक माना गया है।

सुरसादिगणः—सुरसाश्वेतसुरसाफणिज्झकार्जकभूस्तृणसु-

गंधकसुमुखकालमालकासमर्द क्षवकखरपुष्पाविडङ्गकट्फल-सुरसी निर्गुण्डीकुलाहलोन्दुरकर्णिकाफञ्जीप्राचीबलकाकमाच्यो विषमुष्टिकश्चेति ॥

सुरसादिगणो ह्येष कफहृत्कृमिसूदनः ।
प्रतिश्यायारुचिश्वासकासघ्नो व्रणशोधनः ॥८॥

काली तुलसी, सफेद तुलसी, मरुवा, अर्जक, (तुकमरियान), रोहिष (रुसाघास), सुगन्धघास (हरी चाय). वनतुलसी, कृष्णार्जक, कसौंदी, नकछिकनी, खरपुष्पा (दोनों), बायविडंग, कायफल, कृष्णनिर्गुण्डी, श्वेतनिर्गुण्डी, गोरखमुण्डी, मूषाकर्णी, भारंगी, जलपीपली, काकमाची और विषमुष्टि कुचला, (बकायन) यह सुरसादिगण है। यह कफघ्न, कृमिनाशक, प्रतिश्याय, अरुचि, श्वास और कासका नाशक तथा व्रणशोधक है।

मुष्ककादिगण—मुष्ककपलाशधव चित्रकमदनवृक्षक शिंशपावज्रवृक्षास्त्रिफला चेति ।

मुष्ककादिर्गणो ह्येष मेदोघ्नो शुक्रदोषहृत् ।
मेहार्शः पाण्डुरोगघ्नौ शर्करानाशनः परः ॥६॥

मोखा, ढाक, धावड़ा, चित्रक, मैनफल, कूड़ाछाल, सीसम, थूहर, हरड़, बहेड़ा, तथा आंवला यह मुष्ककादि गण मेदोघ्न, वीर्यदोष नाशक तथा प्रमेह, अर्श और पांडु रोगोंको दूर करता है। एवं मूत्रशर्करा नाशक है।

पिप्पल्यादिगणः—पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रक शृङ्गवेरमरिचहस्तिपिप्पली हरेणुकैलाजमोदेन्द्रयवपाठा जीरक सर्षपमहानिम्बफलहिंगुलभार्गीमधुरसातिविषावचाविडङ्गानि कटुरोहिणी चेति ॥११॥

पिप्पल्यादिः कफहरः प्रतिश्यायानिलारुचीः ।
निहन्याद्दीपनो गुल्मशूलघ्नश्चामपाचनः ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, कालीमिर्च, गज-पीपल, हरेणुका (रेणुका बीज), इलायची, अजमोद, इन्द्रजौ, पाठा, जीरा, सरसों, बकायनके फल, हींग, भारंगी, मधुरसा (सौंफ), अतीस, बच, बायविडंग और कुटकी यह पिप्पल्यादि गण कफ प्रतिश्याय, वातरोग और अरुचिको नष्ट करता है। दीपन, पाचन, आमशोषक है तथा गुल्मरोग व शूलरोगको नष्ट करता है।

एलादिगण:—एलातगरकुष्ठमांसीध्यामकत्वक्पत्रनागपुष्प-प्रियंगु हरेणुकाव्याघ्रनखशुक्तिचण्डास्थौणेयका श्रीवेष्टकचोच-चोरकवालुकगुग्गुलुसर्जरस तुरुष्ककुन्दरुकागरुस्पृक्कोशीरभद्र-दारुकुंकुमानि पुन्नागकेशरं चेति ॥११॥

एलादिको वातकफौ निहन्याद्विषमेव च ।
वर्णप्रसादनः कण्डूपिडकाकोठनाशनः ॥

छोटी इलायची, तगर, कूठ, जटामांसी, रोहिषतृण, तेज-पात, नागकेशर, फूल प्रियंगू, हरेणुका, नखनखी, क्षुद्रनखी, चोरपुष्पी, थुनेर, सरलवृक्ष, दालचीनीभेद, गठौड़ा, खस, गूगल-वृक्ष, राल, शिलारस, कुन्दरुगोंद, अगरु, स्पृक्का (पानड़ी), सुग-न्धवाला, देवदारु, केशर तथा पुन्नाग केशर यह एलादिगण वात, कफ और विषका नाश करता है तथा वर्णप्रसादक है। खुजली, फुंसियाँ व शीतपित्तको नष्ट करता है।

(१२-१३) वचादिगण और हरिद्रादिगण

वचादिगण:—वचामुस्तातिविषाभयाभद्रदारूणि नागके-शरञ्चेति ॥१२॥

हरिद्रादिगण:-हरिद्रादारुहरिद्राकलशीकुटजबीजानि मधुकं चेति ॥१३॥

एतौ वचाहरिद्रादी गणौ स्तन्यविशोधनौ ।
आमातिसारशमनौ विशेषाद् दोषपाचनौ ॥

बच, नागरमोथा, अतीस, हरड़, देवदारु और नागकेशर यह

वचादि गण है।

हल्दी, दारुहल्दी, पृश्निपर्णी, इन्द्रजौ और मुलहठी, यह हरिद्रादि गण है।

ये वचादि तथा हरिद्रादिगण दूधकी शुद्धि करते हैं, आमातिसार नाशक तथा विशेषकर (मेद: कफाढ्यपवन) दोषोंके पाचक हैं।

श्यामादि गण:—श्यामामहाश्यामात्रिवृद्दन्ती शंखिनीतिल्वककम्पिल्लकरम्यकक्रमुकपुत्रश्रेणी गवाक्षीराजवृक्षकरञ्जद्वयगुडुचीसप्तलाच्छगलान्त्रीमुधा: सुवर्णक्षीरी चेति ।।१४।।

उक्त: श्यामादिरित्येष गणो गुल्मविषापह: ।
आनाहोदरविड्भेदी तथोदावर्त्तनाशन: ।।

काली निशोथ, विधारा, लाल निशोथ, दन्ती, कालादाना लोध, कपीला, बकायन, सुपारी, लघुदन्ती, इन्द्रवारुणी, अमलतास, वृक्ष करंज, लता करंज, गिलोय, सिकाकाई, विधाराभेद, थूहर तथा सत्यानाशी। यह श्यामादि गण गुल्म, विष, आध्मान और उदर रोगको नष्ट करता है। उत्तम रेचक है तथा सब प्रकारके उदावर्त्त रोगोंको नष्ट करता है।

बृहतीकण्टकारिकाकुटजफलपाठामधुकं चेति ।।१५।।

पाचनीयो बृहत्यादिर्गण: पित्तानिलापह: ।
कफारोचकहृद्रोगमूत्रकृच्छ्ररुजापह: ।।

बड़ी कटेली, छोटी कटेली, इन्द्रजौ, पाठा और मुलहठी यह बृहत्यादि गण पाचक तथा पित्तवातका शामक है, उद्रिक्त कफ, अरुचि, हृदयरोग तथा मूत्रकृच्छ्र रोगका नाशक है।

पटोलादिगण:—पटोलचन्दनकुचन्दनमूर्वागुडुचीपाठा: कटुरोहिणी चेति ।।१६।।

पटोलादिर्गण: पित्तकफारोचकनाशन: ।
ज्वरोपशमनो व्रण्यश्छर्दिकण्डूविषापह: ।।

पटोलपत्र, चन्दन, कुचन्दन, मूर्वा, गिलोय, पाठा और कुटकी यह पटोलादि गण पित्त, कफ और अरुचिको नष्ट करता है तथा ज्वरघ्न है। व्रण, वमन, कण्डू तथा विषको नाश करता है।

काकोल्यादिगणः— काकोलीक्षीरकाकोली जीवकर्षभकमुद्गपर्णीमाषपर्णीमेदामहामेदाच्छिन्नरुहाकर्कटशृङ्गी तुगाक्षीरी-पद्मकप्रपौण्डरीकर्धिवृद्धिमृद्वीका जीवन्त्यो मधुकं चेति ॥१७॥

काकोल्यादिरयं पित्तशोणितानिलनाशनः॥
जीवनो बृंहणो वृष्यःस्तन्य श्लेष्मकरस्तथा॥

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, मेदा, महामेदा, गिलोय, काकड़ासिंगी, वंशलोचन, पदमाख, प्रपौंडरीक, ऋद्धि, वृद्धि, द्राक्षा, जीवन्ती तथा मुलहठी। यह काकोल्यादिगण पित्तरक्त वायुको नाश करता है। जीवनीय शक्ति बढाता है, पुष्टि कारक, वीर्यवर्धक, दुग्धवर्धक है। तथा कफ धातुकी वृद्धि करता है।

सारिवादिगणः—सारिवामधुकचन्दनकुचन्दनपद्मककाश्मरी फलमधूकपुष्पाण्युशीरं चेति ॥१८॥

सारिवादिः पिपासाघ्नो रक्तपित्तहरो गणः।
पित्तज्वरप्रशमनो विशेषाद् दाहनाशनः॥

अनन्तमूल, मुलहठी, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, पद्माख, खम्भारीके फल, महुयेके फूल और खस, यह सारिवादिगण है। यह सारिवादिगण तृषाशामक, रक्तपित्तघ्न, पित्तज्वर नाशक तथा विशेषकर दाहशामक है।

अञ्जनादिगणः—अञ्जनरसाञ्जननागपुष्पप्रियंगुनीलोत्पलनलदनलिनकेशराणि मधुकं चेति ॥१९॥

अञ्जनादिर्गणो ह्येष रक्तपित्तनिबर्हणः।
विषोपशमनो दाहं निहन्त्याभ्यन्तरं तथा॥

सोवीरांजन, रसोंत, नागकेशर, प्रियंगू, नीलकमल, खस,

कमलकेशर और मुलहठी। यह अञ्जनादिगण रक्तपित्त तथा विषको नष्ट करता है तथा अन्तर्दाहका नाश करता है।

परुषकादिगण:— परुषकद्राक्षाकट्फलदाडिमराजादनकतकफलशाकफलानि त्रिफला चेति ॥ २० ॥

परुषकादिरित्येष गणोऽनिलविनाशनः।
मूत्रदोषहरो हृद्यः पिपासाघ्नो रुचिप्रदः॥

फालसा, द्राक्षा, कायफल (मतान्तरमें गम्भारीके फल) दाडिम, खिरनी, निर्मलीके बीज तथा सागवानके फल। यह परुषकादिगण वात शामक, मूत्रदोषनिवारक, हृदय हितकारक तृषा शामक तथा रुचिकारक है।

(२१-२२) प्रियङ्ग्वादिगण और अम्बष्ठादिगण

प्रियङ्ग्वादिगण:—प्रियङ्गु समङ्गाधातकी पुन्नागपुष्पचन्दन कुचन्दनमोचरसरसाञ्जनकुम्भीकस्रोतोञ्जनपद्मकेशरयोजनवल्यो दीर्घमूला चेति ॥ २१ ॥

अम्बाष्ठदिगण.—अम्बष्ठाधातकीकुसुमसमङ्गाकट्वङ्गमधुकबिल्वपेशिकासावररोध्रपलाशनन्दीवृक्षाः पद्मकेशराणि चेति ॥ २२ ॥

गणौ प्रियङ्ग्वम्बष्ठादी पक्वातिसारनाशनौ।
सन्धानीयो हितो पित्ते व्रणानां चापि रोपणौ॥

प्रियङ्गु, लज्जालु, धायके फूल, पुन्नाग पुष्प, नागकेशर, श्वेत चन्दन, लाल चन्दन, सेमलगोंद, रसोंत, जलकुम्भी, स्रोतोञ्जन, कमल केशर, मंजीठ और धमासा, यह प्रियङ्ग्वादिगण है।

पाठा, (मतान्तरमें अम्बाड़ी खट्टी) धायके फूल, लज्जालु, अरलू, मुलहठी, बेलगिरी, पठानी लोध, ढाक, नन्दा वृक्ष और कमल केशर, यह अम्बष्ठादिगण है।

दोनों गण पक्वातिसार नाशक, भग्नास्थिसंधानकरने वाले, पित्त पोषक और व्रणोंको भरने वाले हैं।

न्यग्रोधादिगण :–न्यग्रौधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षमधुककपीतनककुभाम्रकोशाम्रचोरकपत्रजम्बूद्वयप्रियालमधूकरोहिणी वञ्जुलाकदम्बबदरीतिन्दुकीसल्लकी रोध्रसावररोध्रभल्लातकपलाशा नन्दीवृक्ष श्चेति ॥२३॥

न्यग्रोधादिर्गणो व्रण्यः संग्राही भग्नसाधकः ।
रक्तपित्तहरो दाहमेदोघ्नो योनिदोषहृत् ॥

बड़, गूलर, पीपल, पाकड़, मुलहठी, अम्बाड़ा, अर्जुन, आम, कोशाम्र (वनमें होनेवाला आम), लाक्षावृक्ष, बड़ी जामुन, छोटी जामुन, चिरौंजी, महुआ, कुटकी, वेतस, कदम्ब, बेर, टींडरु, साल, लोध, पठानी लोध, भिलावा, ढाक तथा नन्दीवृक्ष । यह न्यग्रोधादिगण व्रणोंके लिये हितकारी, मलसंचयकारी तथा अस्थिभग्नसंधानक है । तथा रक्तपित्तको हरण करता है । दाह तथा मेदाको विनष्ट करता है तथा स्त्रियोंके योनिरोग नाशक है ।

गुडुच्यादिगण:-गुडूचीनिम्बकुस्तुम्बरुचन्दनानि पद्मकं चेति।२४।

एष सर्वज्वरान्हन्ति गुडुच्यादिस्तु दीपनः ।
हृल्लासारोचकवमिपिपासादाहनाशनः ॥

नीम गिलोय, नीम, धनिया, चन्दन (लाल) तथा पद्माख । यह गुडुच्यादिगण सर्व प्रकारके ज्वरोंको नष्ट करता है । अग्नि प्रदीपक है तथा जी मचलाना, अरुचि, कै, प्यास तथा दाहका नाशक है ।

उत्पलादिगण:–उत्पलरक्तोत्पलकुमुदसौगन्धिककुवलयपुण्डरीकाणि मधुकं चेति ॥२५॥

उत्पलादिरयं दाहपित्तरक्तविनाशनः ।
पिपासाविषहृद्रोगच्छर्दिमूर्च्छाहरो गणः ॥

नील कमल, लाल कमल, श्वेत कमल, सुगन्धि कमल, शशिकमलिनी तथा पुण्डरीक (कमल) तथा मुलहठी । यह उत्पलादिगण दाह, रक्तपित्त, प्यास, विष, हृदयरोग, वमन तथा मूर्च्छाको नाश करता है ।

मुस्तादिगण—:मुस्ताहरिद्रादारुहरिद्रा हरीतक्यामलकवि· भीतककुष्ठहैमवतीवचापाठाकटुरोहिणीशार्ङ्गष्ठातिविषा द्राविडीभल्लातकानि चित्रकश्चेति ।।२६।।

एष मुस्तादिको नाम्ना गण: श्लेष्मनिषूदन: ।
योनिदोषहर: स्तन्यशोधन: पाचनस्तथा ।।

नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, आमला, बहेड़ा कूठ, श्वेतवचा (खुरासानी बच), वचा, पाठा, कुटकी, शार्ङ्गष्ठा (काकमाची), अतीस, छोटी इलायची, भिलावा तथा चित्रक । यह मुस्तादिगण कफनाशक, योनि दोषहर, दुग्धशोधक तथा पाचक है ।

त्रिफलागण:–हरीतक्यामलकविभीतकानीति त्रिफला।।२७

त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठ विनाशिनी ।
चक्षुष्या दीपनी चैव विषमज्वरनाशिनी ।।

हरड़, बहेड़ा, आँवला, यह त्रिफला कफ पित्त नाशक, प्रमेह, कुष्ठघ्न, नेत्रके लिये हितकारी, अग्नि प्रदीपक तथा विषम ज्वर नाशक है ।

त्रिकटुकगण:—पिप्पलीमरिचशृङ्गवेराणि त्रिकटुकम् ।२८।

त्र्यूषणं कफमेदोघ्नं मेहकुष्ठत्वगामयान् ।
निहन्याद्दीपनं गुल्मपीनसाग्न्यल्पतामपि ।।

पीपल, कालीमिर्च तथा सोंठ, यह त्रिकटु (त्र्यूषण) कफ हर तथा मेदोघ्न हैं । प्रमेह, कोढ तथा चर्म रोगोंको नष्ट करता है । दीपन है, गुल्म, पीनस तथा मन्दाग्निको मिटाता है ।

आमलक्यादि गणः—आमलकीहरीतकीपिप्पल्यश्चित्रक-श्चेति ।।२९।।

आमलक्यादिरित्येष गणः सर्वज्वरापहः ।।
चक्षुष्यो दीपनो वृष्यः कफारोचकनाशनः ।।

आँवला, हरड़, पिप्पली तथा चित्रक, यह आमलक्यादिगण सर्व प्रकारके ज्वरोंको नाश करने वाला, नेत्रोंको हितकारी, अग्नि प्रदीपक, पुष्टिकारक, कफहर तथा अरुचिनाशक है।

लाक्षादि गणः—लाक्षाऽऽरेवतकुटजाश्वमारकट्फलहरिद्रा-द्वयनिम्बसप्तपर्णमालत्यस्त्रायमाणा चेति ।।३०।।

कषायस्तिक्तमधुरः कफपित्तार्त्तिनाशनः ।
कुष्ठक्रिमीहरश्चैव दुष्टव्रणविशोधनः ।।

लाख, अमलतास, कूड़ाछाल, कनेर, कायफल, हल्दी, दारुहल्दी, नीम, सतौना, चमेली और त्रायमाणा यह लाक्षादिगण चरपरा और मधुर है। कफज तथा पित्तज रोगों को दूर करता है। कुष्ठ और कृमि रोगका नाशक तथा व्रण·शोधक है।

लघु पञ्चमूलम्:—त्रिकण्टकबृहतीद्वयपृथक्पर्ण्यो विदारिगन्धा चेति । ३१।।

कषायतिक्तमधुरं कनीयः पञ्चमूलकम् ।
वातघ्नं पित्तशमनं बृंहणं बलवर्धनम् ।।

गोखरू, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, पृश्निपर्णी, विदारीगन्धा (शालपर्णी), यह लघुपंचमूल कषाय तिक्त व मधुर है। वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक तथा शक्तिवर्धक है।

महत्पंचमूलम्:—बिल्वाग्निमन्थटिण्टुकपाटलाः काश्मर्यश्च ।।३२।।

सतिक्तं कफवातघ्नं पाके लघ्वग्निदीपनम् ॥
मधुरानुरसं चैव पञ्चमूलं महत्स्मृतम् ॥

बेलछाल, अरणी, श्योनाक, पाटला और काश्मरी (गंभारी), यह महापंचमूल चरपरा, कफवात शामक, पचनेमें हलका, अग्निवर्धक तथा मधुररसानुगामी है।

दशमूलम्:—अनयोर्दशमूलमुच्यते ॥३३॥
गणः श्वासहरो ह्येष कफपित्तानिलापहः।
आमस्य पाचनश्चैव सर्वज्वरविनाशनः ॥

लघु पञ्चमूल और बृहत्पंचमूल दोनों की ओषधियोंको मिलानेसे दशमूल होता है। यह दशमूल श्वासघ्न, त्रिदोषनाशक, आमपाचक तथा सर्व ज्वरशामक है।

(३४-३५) वल्लीपञ्चमूल और कण्टकपञ्चमूल

वल्लीपञ्चमूलम्:—विदारी सारिवारजनीगुडूच्योऽजश्रृङ्गी चेति वल्लीसंज्ञः ॥३४॥

कण्टकपञ्चमूलम्:—त्रिकण्टककरमर्दसैरीयकशतावरी गृध्रनख्य इति कण्टकसंज्ञः ॥३५॥
रक्तपित्तहरौ ह्येतौ शोफत्रयविनाशनौ।
सर्वमेहहरौ चैव शुक्रदोषविनाशनौ ॥

विदारी कन्द, सारिवा, हल्दी, गिलोय और मेंढासिंगी, यह वल्ली पंचमूल है।

गोखरू, करौंदा, पियावांसा, शतावरी तथा गृध्रनखी (बेर), यह कंटकपंचमूल है।

ये दोनों (वल्लीपंचमूल और कंटकपंचमूल) रक्तपित्त शामक तथा तीन प्रकारके शोथ रोगको मिटाते हैं। सब प्रकारके प्रमेह तथा वीर्य दोषोंका नाश करते हैं।

तृणपञ्चमूलम्:— कुशकाशनलदर्भकाण्डेक्षुका इति तृण-संज्ञक: ।। ३६ ।।

मूत्रदोषविकारं च रक्तपित्तं तथैव च ।
अन्त्य: प्रयुक्त: क्षीरेण शीघ्रमेव विनाशयेत् ।।

कुश, काश, नरसल, दर्भ तथा काण्डेक्षु (ईख) यह तृण पंचमूल दूधके साथ प्रयोग करनेसे मूत्ररोग तथा रक्तपित्तको शीघ्र नष्ट करता है ।

सूचना:—अष्टांग संग्रह एवं वाग्भटमें वर्णित गण कषायों का समावेश उपरोक्त कषायोंमें ही हो जाता है । इन उपर्युक्त कषायोंमें और उन ग्रन्थोंमें वर्णित कषाय गणोंमें विशेष अन्तर नहीं है ।

ऊषकादिगण :—ऊषकसैन्धवशिलाजतुकासीसद्वयहिङ्गूनि तुत्थकश्चेति ।। ३६ ।।

ऊषकादि कफं हन्ति गणो मेदोविशोषण: ।
अश्मरी शर्करामूत्रकृच्छ्रगुल्मप्रणाशन: ।।

क्षारमृत्तिका, सैंधानमक, शिलाजीत, कासीस, हीराकसीस हींग, तथा नीलाथोथा यह ऊषकादिगण कफको शान्त करता है, मेदो धातुको सुखाता है, अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और गुल्मको नष्ट करता है ।

त्रप्वादिगण:—त्रपुसीसताम्ररजतकृष्णलोहसुवर्णानि लोहमलश्चेति ।। ३७ ।।

गणस्त्रप्वादिरित्येष गरक्रिमिहर: पर: ।
पिपासाविषहृद्रोगपाण्डुमेहहरस्तथा ।।

बग, सीसा, तांबा, चांदी, लोहा, सोना और मंडूर यह त्रप्वादिगण गरविष, तथा उत्तम-क्रिमीनाशक है । प्यास, विष, हृदयरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह रोग नाशक है ।। इति ।।

रोगी बन्धुओं के लिए सुअवसर

निःशुल्क निदान और चिकित्सा

— सम्बन्धी सलाह —

संस्थाके आतुरालयका चिकित्सा-परामर्श विभाग बाहरके रुग्ण बन्धुओं और बहिनोंके पत्रोंके आधारपर समुचित सलाह, निदान और चिकित्सा व्यवस्था करनेमें तत्पर रहता है। प्रतिवर्ष हजारों रोगी इस व्यवस्थासे लाभ उठाते हैं।

अन्यत्र चिकित्सा करवा कर हताश रोगी या जो बीमारी के कारण अपने जीवनसे निराश हो चुके हैं, उनसे हमारा निवेदन है कि वे हमारे चिकित्सा परामर्श विभागकी सेवासे लाभ उठाएं। यह विभाग सुयोग्य और सेवाभावी वैद्यों के तत्त्वावधान से आपकी निःस्वार्थ और बिना मूल्य सेवाके लिए प्रस्तुत है।

रोगी बन्धु इसके लिए निम्न बातोंका ध्यान रखें

(१) अपनी बीमारीका सम्पूर्ण वर्णन बिना छिपावके हमारे छपे हुए निदान पत्रकमें क्रमशः स्पष्ट तया लिख भेजें। अन्यत्र इलाज करवाया हो, उसका विवरण भी दें।

(२) निदान पत्र उत्तरके लिये अन्तर्देशीय पत्र या ५० न.पै. का टिकट अवश्य भेजें।

(३) डाक की अव्यवस्था या अन्य किसी कारणसे उत्तर न मिले तो पुनः संस्मरण पत्र दें।

(४) आपका पत्र मिलनेके बाद दो एक दिनमें आपकी सेवा में उत्तर भेज दिया जायगा।